मैथिली

ज्योतिरीश्वर

सुरेश्वर झा

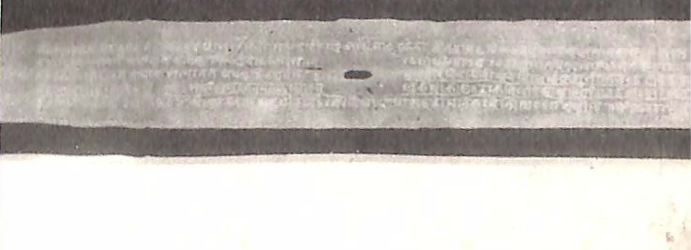

MT
817.230 92
J 994 J

भारतीय

MT
817.230 92
J 994 J

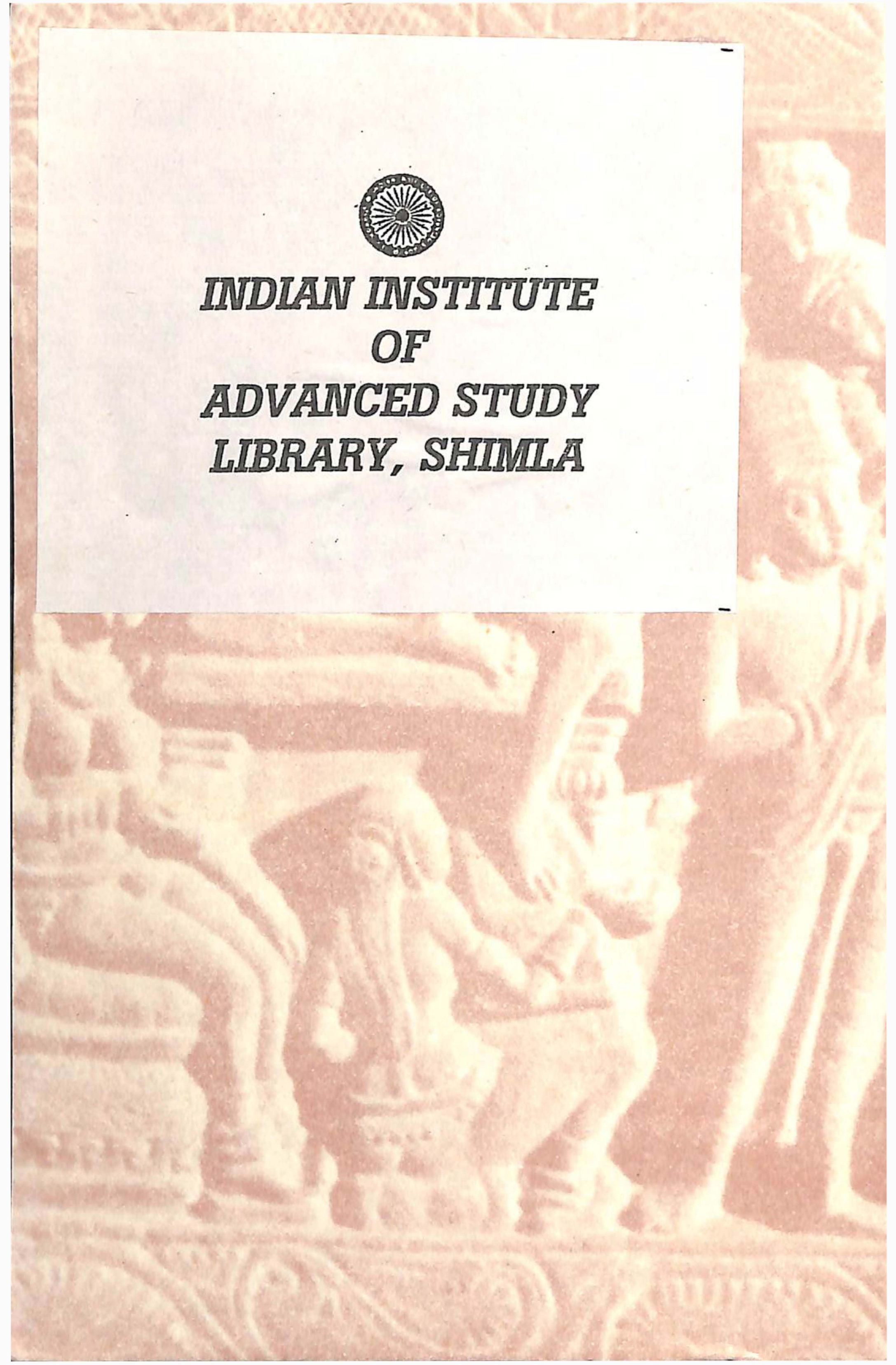

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नकेर व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

ज्योतिरीश्वर

लेखक

सुरेश्वर झा

साहित्य अकादेमी

Jyotirishwar : A monograph in Maithili by Sureshwar Jha on the Maithili author. Sahitya Akademi, New Delhi (1996), Rs. 15.

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : १९९६

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 J 994 J
00117158

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय
१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई ४०० ०१४
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथा तल, २३ ए/४४ एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता ७०० ०५३
३०४-३०५, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास ६०० ०१८
ए डी ए रंगमन्दिर, १०९, जे. सी. मार्ग, बैंगलौर ५६० ००२

मूल्य : पन्द्रह टाका

MT
817.23 092
J 994 J

ISBN 81-7201-988-2

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली ११० ०३२
मुद्रक : कलरप्रिंट दिल्ली ११० ०३२

Indian Institute of Advanced Study
117158
10.12.04
SHIMLA

अनुक्रम

प्राक्कथन	७
ऐतिहासिक परिवेश	९
ज्योतिरीश्वरक वंश ओ व्यक्तित्व	१४
कृति	१९
धूर्तसमागम	२२
वर्णरत्नाकर	३५
वर्णरत्नाकरक ऐतिहासिक मूल्यांकन	४६
परिशिष्ट	
(क) डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीक भूमिकांक मुख्य अंश	६६
(ख) संक्षिप्त सहायक ग्रंथसूची	८७

प्राक्कथन

हम जखन अपन शोध-प्रबन्ध 'पोलिटिकल थिंकर्स इन मिथिला' आ तकर बाद मैथिली अकादमी, पटनाक जयनाथ भाषणमालाक क्रममे व्याख्यान देबाक लेल अपन निबन्ध 'राजनीतिक सिद्धान्त ओ आन्दोलनमे मिथिलाक अवदान'पर लिखबाक लेल कलकत्ताक राष्ट्रीय पुस्तकालयमे अध्ययनशील छलहुँ, ताही समयसँ ज्योतिरीश्वरपर एक गोट पोथी लिखबाक अभिलाषा हमरा मनमे छल। 'साहित्य अकादेमी'क 'भारतीय साहित्य निर्माता' सिरीजमे जखन साहित्य अकादेमीसँ ज्योतिरीश्वरपर विनिबन्ध लिखबाक हमरा निमंत्रण भेटल, तँ बुझि पड़ल जे ई एक चुनौतीक संग-संग सुअवसर प्राप्त भेल अछि। चुनौती एहि लेल जे चौदहम शताब्दीक प्रथम चतुर्थांशमे जन्म लेनिहार आ तत्कालीन मिथिला कर्णाटवंशक अन्तिम राजा हरसिंहक आश्रयमे रहनिहार संस्कृतक प्रकाण्ड पण्डित ओ मैथिली साहित्यक प्रथम गद्यकार, कवि ओ नाटककार ज्योतिरीश्वरपर लिखबाक लेल कतोक स्रोतसँ प्राप्त सामग्रीक अध्ययन-अनुशीलन अपेक्षित छैक; आ सुअवसर एहि कारणे जे ज्योतिरीश्वरपर पोथी लिखबाक अभिलाषा बहुतो दिनसँ छल। हुनक अध्ययन हम प्रधानतया एक राजनीतिक चिंतकक रूपमे कयने छलहुँ। परञ्च एहि विनिबन्धक रचना प्रक्रियामे हुनका विषयमे बहुत गंभीर अध्ययनक अवसर भेटल अछि। ओना, एक राजनीतिशास्त्रक अध्येताक रूपमे हम ई मानबाक लेल विवश छी जे ज्योतिरीश्वरक प्रधान कृति 'वर्णरत्नाकर' मुख्यतया एक राजनीतिक ग्रंथ थिक।

ज्योतिरीश्वर मध्यकालीन मिथिला आ सम्पूर्ण उत्तर भारतक साहित्याकाशमे एक जाज्वल्यमान नक्षत्र थिकाह। ओ ओहि समयक लोक-भाषाक प्रथम रचनाकार थिकाह जे 'वर्णरत्नाकर' तथा 'धूर्तसमागम'क माध्यमसँ अपूर्व गद्य-रचनाक संगहि एक एहन नाटकक प्रणयन कयलनि जे परवर्तीकालमे कतोक समय धरि संस्कृत तथा मैथिली साहित्यकारकेँ प्रेरित तथा मार्ग-निर्देशित करैत रहल। ज्योतिरीश्वरक अध्ययनसँ तत्कालीन मिथिला आ समस्त उत्तर भारतक इतिहास, राजनीति, समाज, संस्कृति आ शासन-प्रणालीक एक स्पष्ट झलकी भेटैत अछि। 'वर्णरत्नाकर'क अद्यावधि बहुत थोड़ अध्ययन भेल अछि। उपर्युक्त विषय सभहिक सम्बन्धमे गंभीर अध्ययनक लेल 'वर्णरत्नाकर'मे

लिखित एक-एक शब्दक अर्थकेँ आधुनिक परिवेशमे फरिछायब बहुत आवश्यक छैक। ई कार्य एखनधरि नहि भऽ सकल अछि। भाषावैज्ञानिक, साहित्यिक, बहुभाषाविद्, प्राकृत, अपभ्रंश, पालि ओ संस्कृत भाषाक ज्ञाता तथा अन्य सम्बन्धित विषयक निष्णात विद्वान लोकनिक एक टोली यदि एहि कार्यकेँ सम्पादित करबाक योजना बनबय तखने ई संभव होयत। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी आ पं. बबुआजी मिश्र 'वर्णरत्नाकर'क प्रथम बेर प्रकाशनक अवसरपर एहि दिस ध्यान नहि दऽ सकलाह। बादोमे मैथिली अकादमी, पटनाक संस्करणमे प्रो. आनन्द मिश्र आ पं. गोविन्द झा ओहि गाड़ीकेँ थोड़बे दूरधरि कहुना ठेलि सकलाह।

एहि विनिबन्धकेँ लिखबाक लेल जतेक सामग्री उपलब्ध छैक, तकर अध्ययन अनुशीलन करबाक हम कोनो कोताही नहि कयलहुँ अछि। एहि सम्बन्धमे जनिकालोकनिक ग्रंथ आ रचनासँ हमरा सहायता भेटल अछि, हुनका सभक प्रति हम अपन आभार प्रकट करैत छी। एहि क्रममे मिथिलाक प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. उपेन्द्र ठाकुर तथा प्रो. राधाकृष्ण चौधरी, डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण', डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, पं. गोविन्द झा ओ डॉ. आनन्द मिश्र, डॉ. शशिनाथ झा, पं. राजेश्वर झा एवं डॉ. प्रताप नारायण झाक प्रति हम विशेष रूपसँ आभारी छी।

पोथी लिखबाक लेल उपर्युक्त विद्वान लोकनिक ग्रन्थ एवं अन्य स्रोत-सामग्रीकेँ जुटयबामे ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक उपाचार्य डॉ. भीमनाथ झाक योगदान ओतबे उल्लेखनीय अछि जतबा ओही विभागक आचार्य डॉ. रामदेव झाक सत्परामर्श ओ विचार-विनिमय।

परिशिष्टमे हम डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीक 'वर्णरत्नाकर'क भूमिकाक पूर्वार्ध सम्मिलित कयल अछि। विद्वान् सम्पादकक अंगरेजी भूमिकाक मैथिली रूपान्तर करबामे प्रो. रमाकान्त मिश्रक योगदान अति सराहनीय अछि। ताहि हेतु हम हुनक विशेष आभारी छी। एहि विद्वानक सम्पादकत्वमे प्रकाशित १९४० ई. क 'वर्णरत्नाकर' आब दुर्लभ भऽ गेल छैक। तेँ ओहि अमूल्य भूमिकाकेँ सम्मिलित करब हमरा आवश्यक बूझि पड़ल।

हम साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक पदाधिकारी लोकनिकेँ धन्यवाद दैत छियनि जे हमरा ई विनिबन्ध लिखबाक सुअवसर प्रदान कयलनि।

एहि पोथीकेँ लिखबामे हमरा जे परिश्रम भेल अछि तकरा हम सार्थक बुझब, यदि एहिसँ मैथिलीभाषी साधारण पाठकसँ लऽ देशक अन्य भाषा-भाषी पाठककेँ एकर विभिन्न भाषामे अनुवादक माध्यमे ज्योतिरीश्वर आ हुनक कृतिसँ परिचय प्राप्त करबामे सहायता भेटतनि।

–सुरेश्वर झा

रंभासदन
राजकुमार गंज
दरभंगा ८४६ ००४
१७ अप्रैल १९९५

ऐतिहासिक परिवेश

मिथिलाक मध्यकालीन इतिहास कतिपय रोचक आ विशिष्ट घटनासँ भरल-पूरल अछि। ओ समय यदि एक दिस कतोक राजनीतिक क्रिया-कलापसँ उजागर अछि तँ दोसर दिस विद्वान, कवि ओ लेखक लोकनिक कृतिसँ प्रकाशमान अछि। चौदहम शताब्दीक प्रथम चतुर्थांश धरि एतऽ मुसलमानी आक्रमणक कोनो प्रभाव नहि भेल छल।

आलोच्य काल कर्णाटवंशी राजवंशक अस्त आ ओइनवार राजवंशक उदयक सन्धिकाल थिक। शक्तिसिंहदेवक बालक ओ उत्तराधिकारी हरसिंहदेव कर्णाटवंशक अन्तिम राजा छलाह ओ एहि राजवंशक संस्थापक नान्यदेवसँ कतोक प्रकारेँ अधिक महान् इतिहासपुरुष छलाह। ई मानल जा सकैछ जे हुनका द्वारा स्थापित अनेक धार्मिक एवं सामाजिक सुधारसँ मिथिलाक सामाजिक स्थितिमे क्रांतिकारी परिवर्तन भेलैक।

हरसिंह एक अर्थमे बहुत भाग्यशाली छलाह, जे हुनका राजदरबारमे किछु बुद्धिमान एवं प्रतिभासम्पन्न मंत्रिगण छलथिन; जेना देवादित्य ठाकुर (सांधिविग्रहिक), हुनक पुत्र वीरेश्वर ठाकुर (महावार्तिक नैबन्धिक) तथा वीरेश्वर ठाकुरक बालक स्वनामधन्य चण्डेश्वर। चण्डेश्वर जखन हुनक मंत्रीक पद सुशोभित कयलथिन, ताहि समयमे हरसिंह युवा छलाह।

एक महान् सामाजिक सुधारक एवं योद्धाक संग-संग हरसिंह विद्या, साहित्य ओ कलाक पैघ संरक्षक सेहो छलाह। मुदा कतिपय ऐतिहासिक ओ साहित्यिक स्रोत एवं साक्ष्यसँ ई स्पष्ट भासित होइछ जे अपन राजकाल अन्तिम समयमे हरसिंह संकटमे फँसि गेलाह। १३२४ ई. मे सुलतान गयासुद्दीनक बंगालपर आक्रमण भेलैक। एहि आक्रमणक समयक सम्बन्धमे इतिहासकार लोकनिमे मतैक्य नहि छनि। डॉ. उपेन्द्र ठाकुर एकरा १३२४ ई. मानैत छथि तँ जयचन्द्र विद्यालंकार १३२० ई.। दिल्लीक सुलतान गयासुद्दीन बंगालक आक्रमणक बाद तिरहुत होइत फिरल। फरिस्ताक अनुसारेँ ओ जखन तिरहुतक पहाड़ी लग देने जा रहल छल, तखन ओकरा राजा हरसिंह अपन सेनाक संग रोकलथिन। युद्ध भेलैक आ हरसिंह परास्त भऽ नेपाल चल गेलाह।

मुदा तत्कालीन संस्कृत आ मैथिलीक साहित्यिक कृति मुसलमान इतिहासंकारक उक्त कथनकेँ ठीक नहि मानैत अछि। चण्डेश्वरक 'दानरत्नाकर' मे राजा हरसिंहक म्लेच्छ द्वारा भरल भूमिकेँ उद्धार करबाक चर्चा अछि; मग्नाम्लेच्छमहार्ण वेधेनोद्वत लीलये; श्लोक-२) । कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर, जे हरसिंहक समकालीन छलाह, से अपन 'धूर्तसमागम' प्रहसनमे कहैत छथि जे राजा 'सुरत्राण' (सुलतान) पर विजय प्राप्त कयने छलाह। ई प्रहसन हरसिंह तथा सुलतानक बीच एक घोर युद्धक चर्चा करैत अछि। एकर रचना एहि युद्धक किछु दिनक बाद भेल छल। एहिसँ इहो स्पष्ट होइछ जे हरसिंह १३२५ अथवा १३२६ ई. मे जीवित छलाह। ज्ञातव्य अछि जे 'धूर्तसमागम'क मंचन हरसिंहक राजदरबारमे भेल छलैक। इतिहासकार श्यामनारायणसिंहक अनुसारेँ एहि नाटकक मंचन तखन भेल छल, जखन राजा हरसिंह मिथिलासँ चल गेलाक बाद नेपालमे शासन करैत छलाह। एहिसँ एक तथ्यक उद्घाटन होइछ जे हरसिंह सुलतानसँ परास्त नहि भेल छलाह, अपितु मुसलमानी आक्रमणक दबाबसँ बाँचि सुरक्षित रूपेँ राज करबाक लेल ओ नेपाल चल गेल छलाह।

मुदा राजा हरसिंह द्वारा नेपालपर आक्रमण हुनक मुसलमान हमलावरक हाथेँ पराजयक स्वाभाविक परिणाम सेहो बूझि पड़ैछ। एक स्रोतसँ इहो जानल अछि जे राजा हरसिंहक मंत्री चण्डेश्वर नेपालमे विजय प्राप्त कऽ हुनका लेल राज पहिँनहिँसँ रखने छलथिन। दोसर स्रोत इहो कहैत अछि जे सुलतानसँ पराजित भऽ तथा सिमराओंगढ़क पतनक बाद राजा हरसिंह उत्तर दिशामे चल गेलाह। हुनका लेल दोसर कोनो विकल्प नहि छलनि। मिथिलामे परम्परासँ प्रचलित श्लोकसँ जानल जाइछ जेः-

"बाणाब्धि बाहु-शशि-सम्मित-शाक वर्षे
पौषस्य शुक्ल दशमी-क्षितिसूनवासरे
त्यक्वा स्व पट्टनपुरी हरसिंहदेवो
दुर्दैव-देशि-पथे गिरिमा विवेश।"

(क्रूर भाग्यसँ विवश भऽ हरसिंहदेव अपन सुन्दर राजधानी त्यागि देलनि आ १२४५ शाकेमे पहाड़ी दिस भागि गेलाह।" (जे. ए. एस. बी.-४; पृ. १२४)।

नेपाल भागि जयबाक बाद हरसिंहदेवक भाग्य-सूर्यक पुनः उदय भेलनि आ ओ ओतहु अपन सेना तथा सहायक लोकनिक संग 'भातगाँव'क सूर्यवंशी राजाक स्थापना कयलनि। हरसिंहदेव नेपालमे विजेता भेलाह से एहि तथ्यकेँ प्रमाणित करैत अछि जे ओहि समयमे नेपाल कोनो बाहरी शक्तिक हाथें पराजित भऽ गेल छल। काठमाण्डूक शिलालेख मे सेहो हरसिंहकेँ 'कर्णाट-चूड़ामणि' आ 'कर्णाटवंशोद्भव' कहल गेल छनि। ई स्पष्ट अछि जे तत्कालीन नेपालक शासक राजा जयरुद्रमल्ल बिना कोनो अवरोध उपस्थित कयने आक्रामकक समक्ष समर्पण कयने छलाह।

मिथिलाक इतिहासमे वीरश्वरक बहुत विशिष्ट स्थान छनि। ओ 'कर्णाटचूड़ामणि' हरसिंहक महासान्धिविग्रहिक (Minister of peace and war) छलाह। भारत विख्यात पण्डित चण्डेश्वर हुनके बालक छलथिन जे आठ गोट 'रत्नाकर' लिखने छथि। ई ज्ञातव्य थिक जे चण्डेश्वरकेँ ओना सप्त रत्नाकरकार कहल जाइत छनि, कारण ओ स्मृतिक रचनाक क्रममे सातगोट ग्रंथक रचना कयने छथि। मुदा, वृद्धावस्थामे ओ अपन प्रसिद्ध राजनीतिक ग्रंथ 'राजनीति रत्नाकर' लिखलनि। ई ग्रंथ तत्कालीन समयक राजनीति आ प्रशासनसँ सम्बन्धित प्रसिद्ध ग्रंथ थिक।

जेना कि ऊपर कहल गेल अछि, चण्डेश्वर १३१४ ई. मे नेपालक विजय कयने छलाह। ई इतिहासप्रसिद्ध घटना थिक। प्रसिद्ध इतिहासकार जयचन्द्र विद्यालंकार लिखैत छथि जे १३२० ई. मे गयासुद्दीन तुगलक बंगालपर आक्रमण कयलक। ओ गंगाक उत्तर तिरहुतक बाटे बढ़ल। एहि कारणे तिरहुतक कर्णाटवंशी हरसिंहदेवसँ ओकर युद्ध भेलैक। हरसिंहदेवक मंत्री चण्डेश्वर चौदहम सदीक शुरूहेमे नेपालकेँ जीति लेने छल। हरसिंह ओतहि पड़ा गेला।[1]

डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी सेहो बंगाल एशियाटिक सोसाइटीक जर्नलसँ अपन मतकेँ मिलबैत कहलनि अछि–

ई स्पष्ट अछि जे एहि युद्धमे मिथिलाक राजा कमसँकम युद्धक प्रारम्भिक समयमे परास्त भऽ गेल छलाह। बूझि पड़ैत अछि जे पहिने ओ नेपालतराइमे आ बादमे नेपालक पहाड़ी क्षेत्रमे शरण लेबाक हेतु वाध्य भऽ गेल छलाह, (ई क्षेत्र हुनक मंत्री चण्डेश्वर ठाकुर हुनका लेल पूर्वहि जीति लेने छलथिन १३१४ ई. तुलनीय गे. ए. एस. बी. १९१३, पृ. संख्या ४११।[2]

सवा दू सय वर्ष धरि मिथिलामे तथा लगभग सय वर्ष धरि नेपालमे राज कयलाक बाद कर्णाट वंशक सूर्य अस्त भऽ गेलैक। मुदा ई राजवंश तत्कालीन ऐतिहासिक कालमे विद्या, संस्कृति, समाज, राजनीति ओ प्रशासनपर अपन अमिट छाप छोड़ि गेल। कर्णाटवंशक अन्तिम राजा हरसिंहदेवक समयमे ज्योतिरीश्वर भेलाह। एहि समयकेँ मिथिलाक इतिहासमे स्वर्णयुग कहल गेल अछि। सैनिक शक्ति, आर्थिक समृद्धि, सांस्कृतिक उत्थान, विद्याक विकास, सार्वभौम स्वतंत्रता–सभ विषयमे मिथिला भारतक राजनीतिक ओ सांस्कृतिक मानचित्रपर एक उत्कृष्ट स्थान पौने छल। उदयन, गङ्गेश आ

---

१. इतिहास प्रवेश; पृ. ३०

२. "It is clear that Raja of Mithila got the worst of it in the fight, at least at the outset. He seems to have been forced to seek a refuge in Nepal Tarai and then into the mountains of Nepal (which country his minister Chandeshwar Thakur conquered for him. C 1314; of JA. S.B. 1915; p. 411) वर्णरत्नाकर; अंगरेजी भूमिका, पृ. १७

वर्धमान नव्यन्यायक प्रवर्तन एही कालमे कयलनि। गङ्गेश एहेन कृतिक रचना कयलनि जे तत्कालीन भारतक समस्त बौद्धिक जगतकेँ झिकझोड़ि देलक तथा अन्य रचनाकारक लेल एक नव दिशाक निर्देश कयलक। हुनक बालक वर्धमान उपाध्याय अपन पिताक शास्त्रकेँ आगाँ बढ़यबामे स्तुत्य कार्य कयलनि। उदयनाचार्यक तर्कक आगू समस्त बौद्ध पण्डित समुदाय झुकि गेल छल।

धर्मशास्त्रक क्षेत्रमे लक्ष्मीधरक तुलना मित्र मिश्रकेँ छोड़ि दोसर कोनो स्मृतिकारसँ नहि कयल जा सकैत अछि। हुनक विशालकाय 'स्मृतिकल्पतरु'क चौदह गोट खण्डमे रचना कयल गेल अछि। म. म. हरिनाथक स्मृतिसार तथा श्रीदत्तक आचारादर्श एही कालमे लिखल गेल छल। मीमांसामे सेहो अनेक निष्णात् विद्वान् मिथिलामे जन्म लेलनि। एहिकालमे संस्कृत प्रायः राष्ट्रभाषा छल। पण्डित लोकनि दर्शन, स्मृति, नाटक एवं अन्य साहित्यिक तथा शास्त्रीय ग्रंथ संस्कृतमे लिखलनि। मुदा एहि कालक एक विशेषता ई छल जे पण्डित एवं विद्वानक बीच संस्कृतक प्रधानता रहितहुँ, लोकभाषाक विकास सेहो भऽ रहल छल। किछु पहिनेसँ ई लोक-भाषा प्राकृत, पालि, अपभ्रंश एवं अबहट्ट आदिक रूपमे उच्च स्थान प्राप्त कयने छल। परंच एहि समयमे लोकभाषा मैथिली दिस अग्रसर भऽ गेल छल। अतएव एहि कालखण्डमे "संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंशक परम्परासँ पृथक लोकभाषाक माध्यमसँ रचनात्मक प्रक्रिया सक्रिय भऽ गेल छलैक। प्रमाणस्वरूप बौद्ध सिद्धलोकनिक गान ओ दोहा डाकवचनावली तथा लोकगीत एवं लोकगाथाक रूपमे विकीर्ण अजस्र सामग्री उपलब्ध अछि।"[1]

उपर्युक्त प्रवृत्तिक सभसँ पैघ परिचय ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर दैत अछि। एहि ग्रंथक रचना निस्सन्देह लोकभाषाक एक गौरवशाली भविष्यक सूचना देलक। ओना तँ ई मानऽ पड़त जे ज्योतिरीश्वरक पूर्व आ पश्चात् विद्यापतिक समयधरि एहि प्रकारक कोनो साहित्य उपलब्ध एखनधरि नहि भऽ सकल अछि; मुदा ताहि कारणसँ वर्णरत्नाकरकेँ मैथिलीक प्रथम कृति नहि मानल जा सकैछ। एतेक परिमार्जित भाषामे रचनाकेँ प्रथम नहि मानल जा सकैछ। साहित्यक विकास-यात्रामे पहिने पद्यक रचना होइत छैक आ जखन ओहि भाषामे किछु प्रौढ़ता अबैत छैक, तखने गद्यक रचना संभव होइत छैक। अतएव ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरक अवलोकन एवं अनुशीलन कयलासँ स्पष्ट होइछ जे एतेक परिमार्जित गद्यक रचनासँ पूर्व निश्चित रूपेँ मैथिली भाषामे अजस्र पद्यक रचना भेल होयतैक। अनुपलब्धिकेँ अभाव मानि लेब उचित नहि।

ज्योतिरीश्वरकालीन मिथिला शांत छल। सुखी छल अथवा नहि से कहब कठिन अछि। कर्णाट वंशक शासनकालमे राजनीतिक स्थिरता तथा सांस्कृतिक उत्कर्ष अवश्ये छल। जाहि प्रकारेँ नान्यदेव एक गोट शक्तिशाली स्वतंत्र राज्यक स्थापना कऽ दू शताब्दी

१. डॉ. शैलेन्द्रमोहनझा; ज्योतिरीश्वर, मैथिली अकादमी, पटना; पृ. २

धरि वाह्य आक्रमणक आतंकसँ मिथिलाकेँ दूर रखलनि, तहिना एहि भूमिसँ बौद्ध धर्मक प्रभावकेँ सदाक लेल हँटाकऽ ब्राह्मण धर्मकेँ पुर्नप्रतिष्ठित कयलनि। संगहि हुनक नेतृत्वमे ई क्षेत्र ज्ञान, चिंतन, कलाकौशल तथा साहित्य-संगीतक केन्द्र बनि गेल। लगैत छल जेना प्राचीन विदेहक गरिमा पुर्नजीवित भऽ उठल हो।

एही गौरवशाली इतिहासक परिवेशमे ज्योतिरीश्वरक आविर्भाव भेल छलनि। ओ मैथिली साहित्यक प्रथम गद्यकारक संगहि प्रथम कवि आ नाटककार होयबाक परिचय सेहो दैत छथि। हुनक 'धूर्तसमागम' प्रहसन हुनका नाटककार ओ कवि होयबाक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि। कतोक विद्वान 'वर्णरत्नाकर' केँ सेहो काव्येग्रंथ मानैत छथि। मिथिलामे संस्कृत-पण्डित ओ साहित्यकार लोकनि जे मातृभाषा मैथिली दिस आकृष्ट भेलाह तथा सर्वथा नवीन साहित्यिक अभियान चलौलनि तकरे फलस्वरूप 'वर्णरत्नाकर' आ 'मैथिली धूर्तसमागम' रूपमे प्रथम कीर्तिमान स्थापित भेल। समस्त उत्तर भारतमे ज्योतिरीश्वरोत्तर कविकोकिल विद्यापतिक मैथिली गीत एहि अभियानक उत्कर्षक डंका युग-युग धरि पिटैत रहत।

ज्योतिरीश्वरक वंश ओ व्यक्तित्व

मध्यकालीन संस्कृत ओ मैथिली साहित्यमे ज्योतिरीश्वर एक अनुपम व्यक्तित्व भेल छथि। हुनक ग्रंथसभसँ हुनक वंश ओ व्यक्तित्वक विषयमे संकेत मात्र भेटैत अछि। ओ प्राचीन एवं मध्यकालीन अन्य लेखक जकाँ अपन विषयमे किछु विशेष नहि लिखलनि अछि। हुनक जीवनसँ सम्बन्धित जे किछु सूचना भेटैत अछि, से हुनक कृति 'धूर्तसमागम'क प्रस्तावनासँ। एहि कृतिक प्रकाशन भारत ओ अन्य देशमे कतोक बेर भेल अछि। एकर प्रस्तावनामे ओ अपनाकेँ रामेश्वरक पौत्र आ धीरेश्वरक पुत्र कहने छथि। ओ पाली गामक छलाह से 'धूर्तसमागम'क सूत्रधारक मुँहसँ कहबैत छथि;

"महाशासन-श्रेणि शिखर-श्रीमत्पल्ली जन्मभूमिना....
कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरेण निजकुतूहल विरचितं
धूर्तसमागमनाम प्रहसनमभिनेतुमादिष्टोस्मि।"

(धूर्तसमागम; पृ. ३२)

ई तँ स्पष्ट अछि जे हुनक गामक नाम पाली छलनि, मुदा ई कोन पाली थिक, फरिछायब कठिन अछि। मिथिलांचलमे तीन गोट पाली अछि,—पाली, बाबूपाली तथा घनश्यामपुरपाली। प्रो. रमानाथ झा धूर्तसमागमक उपर्युक्त वाक्यसँ कविशेखरक मूल पलिवार मानैत छथि, ओ लिखैत छथि;—

"पालीमूलक परिचय सत्ये बड़ विस्तारसँ संगृहीत अछि ओ पंजीप्रबन्धकालसँ बारह-तेरह पुरुष ऊपर धरि एहि मूलक परिचय उपलब्ध अछि। इएह कारण भेल जे पाली मूल सर्वोच्च मूलमे परिगणित अछि। महाशासन श्रेणि भ्रामतपल्ली इत्यादिसँ हमरा एही कथाक संकेत भेटैत अछि।"

(निबन्धमाला—पृ. ९४)

ज्योतिरीश्वरक जन्मभूमि जखन पाली छलनि तँ हुनक मूल पलिवार होयब स्वाभाविके अछि। मुदा उपर्युक्त 'धूर्तसमागम'क उद्धरणसँ 'मूल'क कोनो संकेत नहि भेटैछ।

अनुमान कयल जाइत अछि जे राजा हरसिंहदेवक जे सहायक सामंत लोकनि छलाह

ताहि बीचक सर्वश्रेष्ठ सामंत पाली गाममे रहैत छलाह। संभव थिक जे ई कविशेखर स्वयं छल होथि। 'महाशासन श्रेणि शिखर श्रीमत्पल्ली' सँ तकरे संकेत भेटैत अछि।[१]

एहि सभ सूचनाक रहितहुँ ज्योतिरीश्वरक सम्बन्धमे एक गोट भ्रामक धारणा ई पसरल रहल जे ओ विद्यापतिक पितामहभ्राता छलाह। मिथिलामे परम्परासँ ओ वंगीय साहित्य परिषद्, कलकत्तासँ बंगाब्द १३१६ मे प्रकाशित विद्यापतिक गीतसंग्रहक भूमिका (पृ.६) मे नगेन्द्र नाथ द्वारा एहि धारणाक सम्पुष्टि होइत रहलैक। बहुतो दिन धरि इएह धारणा बनल रहलैक। एते धरि जे डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी सेहो 'वर्णरत्नाकर'क अपन भूमिकामे एकरा स्वीकार कऽ लेलनि। मुदा एकर पक्षमे कोनो ठोस साक्ष्य प्राप्त नहि अछि। ऐतिहासिक तथ्यक आलोकमे आब ई अप्रमाणित सिद्ध भऽ चुकल अछि। ज्योतिरीश्वरक पिता धीरेश्वर एवं विद्यापतिक प्रपितामहक नामसाम्यक कारणे प्रायः एहि प्रकारक भ्रम उत्पन्न भेल होयत। मुदा, तथ्य ई थिक जे विद्यापतिक प्रपितामह महावार्तिक नैबन्धिक धीरेश्वर देवादित्यक बालक छलाह, आ ज्योतिरीश्वरक धीरेश्वर रामेश्वरक पुत्र छलाह। एतबा अवश्य जे ओ दूहू गोटे समकालीन छलाह। एकर अतिरिक्त ई ज्ञातव्य अछि जे ज्योतिरीश्वर पाली मूलक छलाह आ विद्यापति विस्फी मूलक। डॉ. जयकान्त मिश्र कहैत छथि– "जे किछु संभव बूझि पड़ैत अछि से एतबे जे ज्योतिरीश्वर विद्यापतिक पूर्वजसँ परिचित छलाह आ प्रायः ओ हुनका लोकनिक संग हरसिंहदेव ओ नरसिंहदेवक दरबारमे जाइत अबैत रहैत छलाह।"[२]

प्रो. रमानाथ झा ज्योतिरीश्वरक बंशावलीक सम्बन्धमे पञ्जीक अपन गहन अध्ययनक आधारपर अंतिम रूपेँ ई निश्चित कऽ देलनि अछि जे ज्योतिरीश्वर पाली मूलक अबर झट्टा शाखामे पड़ैत छथि, जकर कौलिक उपाधि ठाकुर छल। वर्तमानक पञ्जीक पोथी दरभंगा महाराजक खण्डवला कुलसँ प्राप्त होइत अछि। ओहिमे भगीरथठाकुरक पौत्र धर्मपति ठाकुरक पत्नी रामा ज्योतिरीश्वरसँ बारहम ठाम पड़ैत छथि।

ज्योतिरीश्वरक कन्याक विवाह स्मृतिसारकर्ता गंगौर मूलक म.म. हरिनाथक पौत्र शिवनाथ शर्मासँ छलनि। शिवनाथक कन्याक विवाह संकोनामूलक धर्माधिकरणिक हरिहर मिश्रक पौत्र रुचिमिश्रसँ छलनि तथा रुचिमिश्रक सोदर राममिश्रक विवाह बिसैबार, वीरेश्वरक दौहित्रीमे छलनि। एहिसँ स्पष्ट होइछ जे वीरेश्वर तथा ज्योतिरीश्वर दूनूक दौहित्रीक विवाह दूनूक सहोदर भ्रातासँ भेल छल, आ तेँ दूनू समकालीन छलाह।

ज्योतिरीश्वर 'पञ्चसायक', 'धूर्तसमागम' तथा वर्णरत्नाकरमे अपन जे परिचय देने छथि, तदनुसार हिनक नाम ज्योतिरीश्वर छलनि आ 'कविशेखर' तथा 'आचार्य' हिनक उपाधि छलनि। परंच अधिक समय ई अपन उल्लेख मात्र कविशेखर शब्देँ कयलनि अछि,

१. डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण', अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध, पृ. २८

२. 'धूर्तसमागम'क भूमिका, पृ. ७

मानू जेना ई हिनक दोसर नाम हो। ई अपनाकेँ कतहु अपन कौलिक उपाधि 'ठाकुर' अथवा 'ठक्कुर' नहि कहैत छथि।

व्यक्तित्व

'धूर्तसमागम'क अध्ययनसँ स्पष्ट होइछ जे ज्योतिरीश्वर विद्या-वैभवसँ युक्त महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व छलाह। हरसिंहदेव द्वारा दिल्लीक सुलतानक पराजयकेँ गौरव मानि प्रसन्न भऽ 'धूर्तसमागम' नाटक लिखलनि आ ओकर मंचनक आदेश सेहो स्वयं देलनि। 'धूर्तसमागम'क रचनाकालमे हुनक कीर्ति चरम उत्कर्ष प्राप्त कऽ लेने छल। सूत्रधारक मुँहे लेखक कहैत छथि :–

"कर्पूरन्ति सुधाद्रवन्ति कमलाहासन्ति हंसन्ति च
प्रालेयन्ति हिमालयन्ति करकाऽऽसारन्ति हारन्ति च।
त्रैलोक्याङ्गणरङ्ग –लङ्गिम+ गति प्रागल्भ्य-सम्भाविताः
शीतांशोः किरणच्छटा इव जयन्त्येतर्हि तत्कीर्त्रयः ॥[१]

(तीनू लोकक प्राङ्गणरूपी रङ्गमचपर सुन्दर गतिक प्रौढ़तासँ परिपूर्ण चन्द्रमाक किरणक सौन्दर्य जेना कर्पूरक समान गमकैछ, अमृत समान पघिलैछ, लक्ष्मीक प्रसन्नता समान प्रसन्न होइछ, पाथर सहित अछार समान बरिसैछ ओ हारक समान शोभैछ,–तहिना हिनक कीर्ति सर्वोत्कृष्ट अछि।)

ज्योतिरीश्वर धनी एवं उदार छलाह। ब्राह्मण- कविकेँ तृप्त करैत छलाह। प्रत्येक दिन याचक लोकनि हुनका ओहिठाम कृतार्थ होइत छलाह। सूत्रधार आगाँ कहैत अछि :–

के नाऽर्चिता दिविषदः, कति न द्विजेशाः
सन्तर्पिता, नकवयः कति पूजिता वा।
के चाऽर्थिनः प्रतिदिनं न कृताः कृतार्थास्
त्याग-प्रसादपटुना कविशेखरेण ॥[२]

(दानसँ प्रसन्न करबामे निपुण कविशेखरक द्वारा कोन देवता नहि पूजित भेलाह, कतेक ब्राह्मण श्रेष्ठ सभ नहि सन्तुष्ट कयल गेलाह, कतेक कवि नहि पूजित भेलाह ओ प्रतिदिन कतेक याचक (मङनिहार) नहि पूर्णमनोरथ कयल गेलाह ?)

डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क कथन छनि जे,– "धूर्तसमागम प्रहसन थिक, युद्ध जयोन्मत्त मनोदैहिक स्थितिकेँ दूर करबाक हेतु रचल गेल छल, तेँ एकर विषयवस्तुओ तेहने अछि। मुदा एक मेघदूतसँ जेना कालिदासक कवित्वक परिचय भेटि जाइत अछि, तहिना धूर्तसमागमक अनुमान कऽ सकैत छी।'[३]

१. डॉ. शशिनाथ झा; मिथिला-परम्परागत-नाटक-संग्रह, पृ. २६
२. तत्रैव; पृ. २६
३. वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन, पृ. ६८

ज्योतिरीश्वर अपनाकेँ कविशेखर कहैत छथि, तकरो कारण ओ स्वयं 'धूर्तसमागम'मे सूत्रधारक माध्यमसँ व्यक्त करैत छथि :-

यश्चत्वारि शतानि बन्ध घटनाऽलङ्कारमाञ्जि द्रुतं
श्लोकानां विदधाति कौतुकवशादेकाहमात्रे कविः ।
ख्यातः क्ष्मातलमण्डलेष्वपि चतुःषष्टे कलाया निधिः
संगीताऽऽगमसागरो विजयते श्रीज्योतिरीशः कृती ॥

एकर अर्थ भेल जे ज्योतिरीश्वर एकहि दिनमे पद्यक विन्यास ओ अलङ्कारसँ युक्त चारि सय श्लोकक रचना खेल-खेलमे झट दऽ कऽ लैत छलाह । ओ पृथ्वीपर विख्यात चौंसठि कलाक ज्ञाता, संगीत ओ आगमशास्त्रक सागर एवं विजय कैँ प्राप्त कयने छलाह । चारि सय निश्चित संख्याक उल्लेखसँ प्रमाणित होइछ जे श्लोक बनयबाक हुनक क्षमता जे छलनि तकर जाँच ओ कऽ लेने छल होयताह । धूर्तसमागमक अध्ययनसँ एतबा तँ निश्चित अछि जे ज्योतिरीश्वर असाधारण प्रतिभासम्पन्न विद्वान कवि छलाह । ओ वैभवशाली होयबाक संगहि उदार ओ दानी सेहो छलाह । हुनक कीर्ति देश भरिमे पसरि गेल छलनि । ओ जतेक हरसिंह विजयपर प्रसन्न छलाह ताहिसँ अधिक दिल्लीक सुलतानक पराजय पर प्रसन्न छलाह । सुलतानकेँ पराजित करबाक कारणे हरसिंहदेव हुनक अधिक प्रिय छलथिन । अपन आश्रयदाता हरसिंहसँ फराक ज्योतिरीश्वरक अपन व्यक्तित्व छलनि ।

'पञ्चसायक' अनेक बे॰ अनेक ठामसँ प्रकाशित भऽ चुकल अछि । एहि कृतिक आरंभमे ई स्वयं अपन गुणक वर्णन करैत छथि :-

अस्ति प्रत्यहमर्थितापहरणे प्रत्येक-दीक्षा-गुरुः
श्रीकण्ठार्चन पत्परो भ्रविचतुः षष्ठेः कलानां निधिः ।
संगीतसृत-राप्रमेय-रचना-चातुर्य चिन्तामणिः
प्रख्यातः कविशेखरार्चितपदः श्री ज्योतिरीशाः कृती ॥'

प्रत्येक दिन रक्षा करब हिनक एकमात्र संकल्प छल । ई शिवक उपासक छलाह, चौंसठियो कलामे प्रवीण छलाह तथा कविशेखर उपाधि प्राप्त छलाह ।

आश्रयदाता ओ समय

ज्योतिरीश्वरक आश्रयदाताक सम्बन्धमे विद्वान लोकनिक बीच किछु मतभेद रहल अछि । किछु गोटे हिनक आश्रयदाता नरसिंह कैँ मानैत छथि मुदा डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी आ हुनक समर्थक ज्योतिरीश्वरक आश्रयदाता अथवा संरक्षक कर्णाटवंशक अन्तिम राजा हरसिंहदेवकेँ मानैत छथि । जे विद्वान ई मानैत छथि जे ज्योतिरीश्वर कर्णाटवंशक राजा नरसिंहक शासनकालमे भेल छलाह जनिक समय तेरहम शताब्दी थिकनि, तनिक तर्कई

१. पञ्चसायक, पृ. १

छनि जे मिथिलामे पञ्जी व्यवस्था हरसिंहदेव द्वारा कयल गेल छल जाहिमे ज्योतिरीश्वरक नाम ओ परिवारक उल्लेख नहि भेटैत अछि । तेँ ओ हरसिंहदेवसँ निश्चितरूपसँ पूर्वमे भेल छलाह । मुदा डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी कहैत छथि जे एहिमे कोनो तर्कपूर्ण संदेह नहि अछि जे हरसिंहदेव चौदहम शताब्दीक प्रथम चतुर्थांशमे शासन करैत छलाह आ ओ हमरालोकनिक एहि लेखकक आश्रयदाता छलाह ।[१]

डॉ. जयकान्त मिश्र सेहो एहि मतक छथि जे ज्योतिरीश्वर हरसिंहदेवक समयमे भेल छलाह । हुनक कथन छनि जे पञ्जीमे कुल ओ परिवारक उल्लेख छुटि जयबाक कारण ओहि शाखाक विच्छेद सेहो भऽ सकैत छैक । ओकर अतिरिक्त वर्णरत्नाकरमे उल्लिखित 'घटक' शब्द तथा एक प्रसंग (पृ. ७२ ख/७३ क) प्रमाणित करैत अछि जे ज्योतिरीश्वरक समयमे पञ्जीक खूब महत्त्व छलैक आ विवाहसँ पूर्व 'आधुनिक 'सिद्धान्त' अथवा 'पत्र' प्राप्त करबाक औपचारिकताक निर्वाह होइत छल ।[२] प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. उपेन्द्र ठाकुरक मत छनि जे मिथिलाक अन्तिम कर्णाटवंशीय राजा हरसिंहदेवक समय लगभग १३२४ ई. थिकनि आ तेँ ज्योतिरीश्वर चौदहम शताब्दीक प्रथम चतुर्थांशमे भेल छथि ।[३]

ज्योतिरीश्वरक 'धूर्तसमागम'क रचनाकालमे हरसिंहदेव जीवित तँ छलाह , मुदा राज्यच्युत भऽ चुकल छलाह । ई तथ्य 'धूर्तसमागम'क प्रस्तावना श्लोक मे 'अस्ति' शब्दक उल्लेखसँ तथा 'रहस्योद्दण्ड भुज प्रताप दहन ज्वाला निरस्ता यदा' एहि वाक्यसँ सिद्ध होइछ । ज्योतिरीश्वरक अन्य कोनो रचनामे कोनो राजाक नामोल्लेख नहि अछि । एहिसँ ई अनुमान्य अछि जे 'वर्णरत्नाकर' ओ 'पञ्चसायक'क रचना अराजकताक कालमे भेल होयत ई सर्वविदित अछि जे मिथिलामे हरसिंहक अन्तर्धानसँ ओइनबारक राज्यक स्थापनाकाल धरि (शाके १२४५-१२७५) लगभग तीस वर्ष अराजकता रहल । एही बीच वर्णरत्नाकरक रचना भेल होयत ।

यदि 'धूर्तसमागम'क रचनाकालमे हिनक अवस्था तीस वर्ष मानी तँ हिनक जन्म १२४६–३० = १२१६ शाके अर्थात् १२९४ ई. मे भेल होयत ओ हिनक अवसान ओइनबार राज्यक स्थापनासँ पूर्व शाके १२७० अर्थात् १३४८ ई.क आस-पास मानल जा सकैछ ।[४] एहि प्रकारेँ ई कहल जा सकैत अछि जे मैथिली साहित्याकाशमे एक दिस ज्योतिरीश्वर-सन गद्यकार तिरोहित होइत छथि तँ दोसर दिस विद्यापतिसन कवि-गीतकारक उदय होइत अछि, जकर प्रकाशमे कतोक शताब्दी धरि सम्पूर्ण उत्तर भारत जगमगाइत रहल ।

---

१. वर्णरत्नाकरक भूमिका; पृ. १६
२. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर; खण्ड-१, पृ. १२०
३. हिस्ट्री ऑफ मिथिला, अध्याय-५
४. प्रस्तावना; वर्णरत्नाकर; सम्पादक प्रो. आनन्द मिश्र आ पं. गोविन्द झा; पृ. ७

कृति

'वर्णरत्नाकर' जे ज्योतिरीश्वरक सर्वश्रेष्ठ मैथिलीक गद्यग्रन्थ मानल जाइत अछि आ जे चौदहम शताब्दीक प्रथम चतुर्थांशमे लिखल गेल छल, तकर अतिरिक्त ओ चारि गोट आओरो ग्रन्थक प्रणयन कयने छथि, से एना अछि :–

१. धूर्तसमागम – संस्कृत ओ मैथिली दूनूमे प्रहसन
२. पञ्चसायक – संस्कृतमे कामशास्त्रपर रचना
३. रंगशेखर – संस्कृतमे कामशास्त्रपर ग्रंथ
४. रतिरहस्य – ओही प्रकारक ग्रंथ

वर्णरत्नाकरपर फराकसँ आगाँ विचार कयल जायत आ तहिना 'धूर्तसमागम' पर सेहो, कारण एहि दूनू रचनाक महत्त्व सर्वोपरि छैक। एहिठाम 'धूर्तसमागम' पर एतबे कहबाक अछि जे ई प्रहसन संस्कृत आ मैथिली दूनू भाषामे लिखल गेल छैक। धूर्तसमागम प्रहसनक अनेक हस्तलेख प्राप्त भेल अछि। एहि ग्रंथक लोकप्रियताक प्रमाण यैह थिक सर्वप्रथम १८८३ ई. मे क्रिश्चियन लैसेन एकरा लैटिनमे टिप्पणी सहित एन्थोलोजिया सैन्सक्रिटिका (Anthologia Sanscritica) मे बौन (Bonn) सँ प्रकाशित करौलनि। एकर दोसर संस्करण सी. कैपलर (C. Cappeller) द्वारा जेना (Jena) सँ १८८३ ई. मे प्रकाशित भेलैक। अपनहुँ देशमे एहि प्रहसनक प्रकाश अनेक ठामसँ अनेक बेर भेल अछि। देश-विदेशक संस्कृत साहित्यक इतिहासकार अपन-अपन ग्रंथमे एहि कृतिक उल्लेख कयने छथि तथा संस्कृत-प्रहसन क्षेत्रमे ई बहुत चर्चित रहल अछि। ई ग्रंथ संस्कृत नाटकक रूपमे परिगणित होइत रहल। संस्कृत नाटकपर लिखल गेल सभ पाश्चात्य ग्रंथ मे यथा हेमैन विल्सन, सिलविन लेवी, ए. बी. कीथ तथा विंटरनिट्जक कृतिमे एहि ग्रंथक विशेष रूपसँ उल्लेख भेटैत अछि।

मुदा, एहि नाटकक मैथिली कृति १९५७ ई. में डॉ. जयकान्त मिश्रकेँ नेपाल दरबार पुस्तकालयक दोसर बेरक यात्रामे प्राप्त भेलनि। संस्कृतक संस्करणसँ मिलान कयलापर ई पाओल गेलैक जे ई संस्कृत संस्करणक मैथिली रूपान्तर थिक। मैथिली रूपान्तरक ई पाण्डुलिपि खण्डित अछि तथा आरम्भक बारह गोट एवं अन्तक प्रायः दू गोट पत्र हेरायल अछि। मुदा, खण्डित रहितहुँ एकरो महत्त्वमे कनियोँ कमी नहि छैक। धूर्तसमागमक

मैथिली प्रहसन मैथिलीक सभसँ प्राचीन नाटक थिक । मैथिली कृति सम्पूर्ण प्राप्त नहियो भेने संस्कृत संस्करणक आधारपर एकर कथा बुझबामे कोनो कसरि नहि होइछ । जाहि समयमे सम्पूर्ण उत्तर भारतमे कोनो लोकमंच नहि छल, आ ने नाटकेक परम्परा प्रारंभ भेल छल, ओहि समयमे ज्योतिरीश्वर लोकमंचीय नाटकक प्रणयन कऽ एक एहन परम्पराक सूत्रपात कयलनि जे पछाति आनो प्रदेश सभमे विकसित भेल । एहि तरहेँ ज्योतिरीश्वर नव्य भारतीयभाषा समूहक प्रथम गद्यकारे नहि, अपितु प्रथम नाटककार ओ कवि सेहो छथि । ओ धूर्तसमागममे कतोक मैथिली गीत लिखने छथि । डॉ. ज़यकान्त मिश्रक अनुसार "ई लगैत अछि जे कमसँ कम बीस गोट मैथिली गीत एहिमे समाहित कयल गेल अछि, मुदा ओहिमेसँ आठ गोट गीत उपलब्ध पाण्डुलिपिमे नहि पाओल जाइत अछि।"[1] डॉ. मिश्र आगाँ कहैत छथि जे यद्यपि एहि गीत सभमे प्रायः काव्यात्मक सौंदर्यक अभाव अछि, मुदा भाषापर अधिकार, ठेठ शब्दावली ओ परिष्कृत छन्दक प्रयोग एकर लेखकक प्रतिभासम्पन्न होयबाक प्रमाण दैत अछि ।

एहि प्रहसनक दोसर महत्त्व ई अछि जे ई वर्णरत्नाकरे जकाँ चौदहम शताब्दीक मिथिलाक सामाजिक तथा सांस्कृतिक इतिहासपर पर्याप्त प्रकाश दैत अछि । हमरालोकनिकेँ एहि कृतिमे छौ सय वर्ष पूर्वक मिथिलाक लोक-व्यवहार, खानपीन, विधि-व्यवस्था तथा जाति-व्यवस्थाक स्पष्ट झाँकी भेटैत अछि ।

मैथिलीमे ज्योतिरीश्वरक यैह दू गोट रचना छनि । ओ संस्कृतक पण्डित एवं कवि लोकनिक बीच अग्रगण्य छलाह । हुनक उपाधि 'कविशेखर' छलनि । हुनक प्रसिद्ध संस्कृत-कृति थिकनि 'पञ्चसायक' । ई कामशास्त्रक ग्रंथ थिक । एहि कृतिक नाम प्रतीकात्मक अछि, जकर अर्थ होइछ कामदेवक पाँच गोट बाण । पंचसायक' अनेक बेर अनेक ठामसँ प्रकाशित भेल अछि ।

'पञ्चसायक' मे पाँच गोट अध्याय श्लोकबद्ध अछि, जाहिमे प्रणयक पाँच गोट गुप्त व्यवहारक वर्णन कयल गेल अछि । उपोद्घातमे कामदेवक आवाहन कयल गेल अछि । तकर उपरान्त उदात्त स्वरमे ग्रन्थकार अपन गुणक वर्णन कयलनि अछि ।

'पञ्चसायक' केँ सभ विद्वान कामशास्त्रक ग्रंथ मानैत आयल छथि । एकर विषय-वस्तुक विवरणमे डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी लिखैत छथि :–

"It deals with the preparation of various aphrodisiacs and drugs, articles of toilets, and chrms and pheltres and describes the different types of women it has verses or the treatment of women in pregancy and discribes the bandhas and finishes by giving a brief account of the various types of Nayikas" ?

(एहिमे अनेक प्रकारक कामोद्धीपक औषधि, अन्य कतेक औषधि, प्रसाधनक सामग्री, सम्मोहन प्रक्रिया तथा कामोद्दीपन रसक विवरण संग अनेक प्रकारक स्त्रीगणक

१. धूर्तसमागमक भूमिका, पृ. १०

वर्णन, गर्भिणी स्त्रीक संग प्रेम-प्रक्रियाक वर्णन तथा अनेक प्रकारक 'बन्ध' केर वर्णन अछि। अंतमे विभिन्न प्रकारक नायिकाक संक्षिप्त वर्णन सेहो अछि।)

पञ्चसायक कामशास्त्रक ग्रंथ मानल जाइछ। मुदा डॉ. कञ्चीनाथ झा 'किरण'क मत छनि जे एकरा दाम्पत्यशास्त्रक ग्रंथ कही तँ संगत होयत। ओ कहैत छथि :– "दाम्पत्य जीवनक आरम्भ होइत छैक कामसँ। तँ कविशेखर ओकरो स्थान उचित रूपेँ देने छथि। परंच बहुतो एहन विषय अछि जकरा कामशास्त्रक संग एको रत्ती सम्बन्ध नहि छैक। ओ विषय सभ पारिवारिक जीवने टाक हेतु उपयुक्त अछि।"[1]

एतबा स्पष्ट जे विषय-सूचीपर ध्यान देने बहुतो एहन विषय भेटैत अछि जकरा कामशास्त्रसँ प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहि मानल जा सकैछ। जेना–बाँझकेँ कोना पुत्र होयतैक, प्रसव कालमे कोना वेदनाकेँ रोकल जाय, केहन व्यक्तिक हाथे कन्यादान करी–एहि विषय सभकेँ कामशास्त्रसँ कोनो सम्बन्ध नहि छैक। तँ ई मानऽ पड़त जे पञ्चसायकमे कामशास्त्र आ पारिवारिक जीवनसँ सम्बन्धित विषय दूनूक समावेश अछि। ओना, पारिवारिको जीवनक लेल कामशास्त्रक ज्ञान बहुत आवश्यक छैक। तँ ई कहब जे-एहि कृतिक मुख्य स्वर कामशास्त्रपर आधारित अछि, उचित होयत।

प्रो. रमानाथ झाक मत छनि जे,–"ज्योतिरीश्वर सर्वप्रथम धूर्तसमागम, तखन पञ्चसायक ओ सभसँ पछाति वर्णरत्नाकरक रचना कयने छथि।"[2]

एहि कृतिक आकार बहुत छोट अछि। ग्रन्थक समापन निम्नलिखित श्लोकसँ होइत अछि :–

> यावच्चन्द्र कला किरीट हृदये शैलत्मजा तिष्ठति।
> यावद् वक्षसि माधवस्य सकला सानन्दमादिष्यति।
> यावत् कामकला विवर्त चटुला क्षोणीतले सर्व्वदा
> तावत् श्री कविशेखरस्य कृतिना तावत्पदे दीप्यताम्॥

ज्योतिरीश्वक दू गोट आर संस्कृत ग्रंथक उल्लेख भेटैत अछि। ओ थिक 'रङ्ग शेखर' आ 'रतिरहस्य'। ई दूनू कृति कामशास्त्रपर लिखल गेल प्रतीत होइत अछि। 'रतिरहस्य' कामशास्त्रीय ग्रंथ थिक, ताहि विषयमे मैथिलीक प्रख्यात लेखक शिवनन्दन ठाकुर अपन ग्रंथ 'महाकवि विद्यापति'क पृष्ठसंख्या १३ पर चर्चा कयलनि अछि।

'रङ्गशेखर'क विषयमे बंगाल एशियाटिक सोसाइटीक जर्नल १९१५ (पृ. ४१४, पाद टिप्पणी) मे प्रख्यात विद्वान् मनमोहन चक्रवर्ती कहलनि अछि जे ज्योतिरीश्वर कामशास्त्रक एक आओर ग्रन्थ 'रङ्गशेखर' लिखने छलाह। कहल जाइत अछि जे संस्कृत साहित्यमे एहि ग्रंथक प्रचुरतासँ उद्धरण प्राप्त अछि। किन्तु ज्योतिरीश्वरक कामशास्त्रपर लिखल ई दूनू ग्रंथ एखन धरि अनुपलब्ध अछि तथा अंधकारमे पड़ल अनुसंधाता विद्वानक बाट जोहि रहल अछि।

---

१. वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन; शोधप्रबन्ध, पृ. ६६
२. निबंधमाला, पृ. १०४

117158
10·12·04

धूर्तसमागम

'मैथिली धूर्तसमागम'क खंडिते अंश प्राप्त अछि। अतएव समस्त कथावस्तुक लेल एकर संस्कृत-प्राकृत संस्करणपर निर्भर करऽ पड़ैछ। एहि ग्रंथक महत्त्वक एक कारण प्रस्तावनामे लेखकक काल ओ वंशक परिचय रहब सेहो थिक।

एहि ग्रंथर्क प्रारम्भमे नान्दीपाठ अछि। एकर दू गोट श्लोक विद्यापतिक 'गोरक्षविजय' नाटकमे सेहो भेटैत अछि। संभव थिक जे विद्यापति ज्योतिरीश्वरे रचित ओहि दुनू श्लोककेँ अपन ग्रंथमे उद्धृत कयने होथि, किंवा ओ परम्परागत रूपमे पहिनहिसँ प्रचलित छल हो जकरा ज्योतिरीश्वर आ विद्यापति दूहू गोटे अपन-अपन नाट्य कृतिमे उपयोग कयलनि।

नाटकक कथा-विन्यास एहि रूपक अछि। नान्दीपाठक उपरान्त सूत्रधार नाटककार तथा हुनक आश्रयदाताक गुणगान करैत अछि। तदुपरान्त ओ नटीकेँ बजबैत अछि आ ओकरा वसन्त ऋतुक अनुकूल तथा प्रहसनक प्रधान रस शृंगारक गीत गयबाक आग्रह करैत अछि। एतबामे नेपथ्यसँ एक व्यक्ति हाथमे दण्ड तथा कमण्डल रखने देहपर गेरुआ वस्त्र ओ कपारपर त्रिपुण्ड धारण कयने प्रवेशक गीत गबैत अछि। ओ धूर्त जकाँ लगैत अछि। सूत्रधार ओकर परिचयमे कहैत छैक जे ओ धर्मविहीन, गणिकाविलासी, उग्रदंभी ओ ठक विश्वनगर नामक संन्यासी थिक। ओकरा संगमे ओकर शिष्य स्नातक छलैक।

प्रकटरूप मे विश्वनगर बाजल जे जाहि निर्गुण, निष्प्रपञ्च एवं त्रिभुवनपतिक ध्यान योगीलोकनि अपन हृदयमे करैत छथि, आ जनिका मात्र ज्ञानेटासँ जानल जा सकैत छनि, ओहि अजर, अमर, आद्य मधुसूदनक हम सदिखन चिंतन ओ मनन करैत रहैत छी।

वसन्त-ऋतुक समय छलैक। शिष्य स्नातक कामोद्दीपक वासन्ती वातावरणमे पीड़ित छल आ सोचि रहल छल जे एहन समयमे एकसर कोना खेपब ? ओ तेँ अन्यमनस्क जकाँ छल। विश्वनगर अपन शिष्यक हावभाव, मुखाकृति इत्यादिसँ बुझलक जे ओ कामवासनासँ पीड़ित अछि। पुछलापर सकुचाइत बाजल जे ओ भोरे-भोरे नगरक पुष्करिणीमे अनंगसेना नामक वेश्याकेँ देखलक अछि आ तखनसँ चारूभर ओकरहि देखि रहल अछि। ताहिपर विश्वनगर हँसैत बाजल जे ओहो ओही पुष्करिणीपर सुरतप्रिया नामक वेश्याकेँ आइ देखने छल आ तखनहिसँ ओ ओकर नयन एवं मनमे बसि गेल छैक। दुखक विषय ई छैक जे विश्वनगरकेँ ओहि सुरतप्रियाक वासस्थान नहि देखल छैक।

दूपहरक समय छैक। दूनू गोटे भिक्षाक उद्देश्यसँ कोनो गृहस्थक घर तकैत विदा होइत अछि। बाटमे एक गोट पशुशाला छैक, जाहिमे महीस, नेरू तथा लगहरि गाय सब छैक। दासी सभ एतऽ ओतऽ घुमि रहलि अछि। कोनो धनिक लोकक आवास होयबाक अनुमान होइछ। मुदा पड़ोसी सभसँ ज्ञात होइत छैक जे ओ घर तेहन कृपण व्यक्तिक थिकैक जकर लोक नामो नहि लैत छैक। तैयो दूनू गुरु-चेला मृतांगार ठाकुरक घरक अनुमान कऽ ओहिमे प्रवेश करैत अछि। मृतांगार ठाकुरसँ भेँट तँ होइत छैक, मुदा ओ अपन प्राण दऽ सकैत अछि, धन नहि।

एहि दूनू गोटेकेँ देखतहिँ जेना मृतांगार ठाकुरपर बज्रपात भऽ जाइत छैक। ओ प्रारम्भमे जन्माशौचक बहाना बना भिक्षा देब अस्वीकार करैत अछि। आ, बादमे जखन विश्वनगर ओ स्नातक ई की हैत छैक जे यती-संन्यासी केँ ई दोष नहि लगैत छैक, तखन मृतांगार ठाकुर दोसर बहाना बनबैत अछि। ओ, कहैत अछि जे रौदीसँ खेती नष्ट भेल अराजकतासँ लहना डूबि गेल आ व्यापारमे हानि भऽ गेल; तखन एहना स्थितिमे अतिथि-सत्कार संभव नहि अछि।

स्नातक एहिपर क्रोधित भऽ ओकरा दुर्वचन कहैत अछि आ पुछैत अछि जे दुपहरियामे ओसभ कतऽ जायत ? मृतांगार ठाकुर ओकरा सभकेँ अपन घरक उत्तर स्थित गासउपवास कयनिहारि सुरतप्रियाक घर जयबाक बाट देखा दैत अछि आ स्वयं झटकिकऽ पड़ा जाइत अछि। विश्वनगर तँ ई चाहिते छल। ओकर मनक अनुकूल अवसर प्राप्त भऽ गेलैक। विश्वनगर तथा स्नानक सुरतप्रियाक ओतऽ पहुँचैत अछि। ओ आह्लादपूर्वक दूनू गोटेक स्वागत करैत पुछैत छैक जे ओकरालोकनिक की सत्कार कयल जाय ? विश्वनगर कहैत अछि जे सुरतप्रियाक लेल अदेय किछु नहि छैक, मुदा एखन भिक्षा चाही।

सुरतप्रिया पुछैत छैक जे भिक्षा कोन प्रकारक चाही, कखन चाही आ कतेक चाही ? एहिपर विश्वनगर प्रसन्न होइत अछि आ ओकरा मासु, माछ, बड़, सजमनि, बथुआक साग, परोड़, मूङक दालि, टटका दही, सोन्हगर दूध, पुष्ट कऽ घी, केरा, शक्कर आदि खयबाक वस्तुक विन्यास करबाक लेल कहैत छैक। एहि सम्बन्धमे ज्योतिरीश्वरक मैथिली गीत द्रष्टव्य अछि :-

भिखिया मोरि करब रे।
सुवदनि भिखिया मोरि करब रे आ॥ ध्रुवं॥
मासु माछ बल बटिका सांजवि
सद्य(?) मुनि साग परोले आ।
मुद्ग दितले परकार करब
सबे सङ्गिनि ! कहञो थोले आ॥
तहि दिन जनमाओल दधि
सुनु सत्वर सोन्ध दूध बड़ घीवे।
केरा सङ्गि रस वेध (?) युगुताओब
कविशेखर जोतिक एहु गावे॥

सुरतप्रिया महात्माकेँ देखि एतेक प्रसन्न होइछ जे ओकर समक्ष आत्मसमर्पण करबाक लेल आतुर भऽ उठैत अछि आ बजैत अछि जे बाहरी वस्तुक तँ कथे नहि, ओकर अपन शरीर तथा प्राणो ओकरे (महात्माक) थिकैक। ओ बाजलि जे अपने घरक भीतर आबि विश्राम करू। हम तावत इच्छित वस्तु सभक ओरिआओन करैत छी।

स्नातककेँ सुरतप्रियाक व्यवहार अनसोहाँत लगैत छैक। ओकर केश पाकल छैक, गाल पिचकल छैक, स्तन लटकि गेल छैक, देह लीबि गेल छैक, भूखल किच्चिन सन लगैत अछि। मुदा तैयो ई दुष्टा बुढ़िया तापसीकेँ फँसाबऽ चाहैत अछि। विश्वनगर डाँटिकऽ स्नातककेँ चुप करैत अछि आ सुरतप्रियाकेँ सभ व्यवस्था करबाक लेल कहैत छैक।

सुरतप्रियाकेँ भनसाघर चल गेलाक बाद स्नातक विश्वनगरकेँ कहैत छैक जे भिक्षा-सिद्ध होयबाक समयधरि ओ ओतहि बैसल रहय आ अपने स्नातक अनंगसेनाक हाल-चाल बुझने अबैत अछि। परंच अनंगसेनाकेँ देखबाक लोभमे विश्वनगर सेहो स्नातकक संग लागि जाइत अछि।

स्नातक सुनने छल जे मूलनाशकं नामक एक नौआक घर लग अनंगसेना रहैत अछि। ओ खोज करैत ओतऽ पहुँचैत अछि। अनंगसेनाक नीलकमलक पात सन आँखि,पूर्णचन्द्र सन मुखमण्डल, पीन पयोधर, कृशकटि एवं गजेन्द्र सन चालि छैक। ओ लगैत अछि जेना ओ कामदेवक शृंगार संजीवनी मोहन लग हो। स्नातक ओकरा देखिते विभोर भऽ उठैत अछि। विश्वनगर सेहो अनंगसेनाकेँ देखैत रोमाञ्चित भऽ जाइत अछि तथा अनंगसेनाक रूप-सौंदर्यक प्रशंसा करऽ लगैत अछि तथा ओकरा लग अपन कामवासना प्रकट करऽ लगैत अछि। ओ बजैत अछि जे पूर्वमे जे ओ प्रतिदिन तपस्या कयलक, तीर्थयात्रापर गेल, पुरुषोत्तमक अर्चना कयलक, तकर फलस्वरूप आइ ई दिन प्राप्त भेलैक अछि। एहि आगाँ शास्त्र, स्वर्ग अथवा मोक्ष की ? विश्वनगर अनंगसेनाकेँ देखैत ततबा अधिक कामवासनासँ पीड़ित भऽ उठैत अछि जे ओ ओकरासँ प्रणय-निवेदन करऽ लगैत अछि। कविशेखर ज्योतिरीश्वर अपन गीतमे एहि भावकेँ एहि प्रकारेँ व्यक्त करैत छथि :–

चल सरोज-सुन्दर नयने !
मामनुकम्पय शशिवदने ॥ ध्रुवं ॥
राज-मराल-विदित-गमने ।
रतिपति सब हुतवह शमने ॥
विसलतिका मृदुभुज युगले ।
कामकलामय रस कुशले ॥
काम निधन कलश पयोधरे ।
सञ्जत मुनि जन मनमनोहरे ॥
विश्वनगरमिह भज नमिते ।
कविशेखर जोतिक भणिते ॥

स्नातक अपन गुरुक आचरणसँ दुखी भऽ उठैत अछि। ओ सोचैत अछि जे ई लम्पट तँ मूसक बीहरिमे साँपजकाँ सन्हिया गेल अछि। ओ नीतिपूर्ण वचनसँ विश्वनगरकेँ ओहि झंझटसँ मुक्त करबाक चेष्टा करैत अछि। ओ कहैत छैक जे अहाँ संसारक सुख-सुविधाक उपेक्षा कऽ मोक्ष प्राप्त करऽ चाहैत छी। तखन पुनः कोना एहि प्रकारेँ मृगतृष्णा सदृश कामुक भऽ अपन आत्महत्या करबाक लेल तैयार भऽ गेल छी ? एहि दुष्ट गणिकाक संग छोड़ि दियऽ। ई तँ हमर दारा थिक। एहि प्रसंगक मैथिली गीत एना अछि :–

हरि हरि हरि, न सुधे आन।
थापहि थीर भगव गेआँन ॥ ध्रुवं ॥
हमरि दारा कतहु जानी।
तेजहि तासु अनुबन्धक हानी ॥
खन एक रतिरङ्ग-तरङ्गे।
छाड़ गोसाञी ज़ुवति सङ्गे ॥
कुलिस-कठिन दण्डपहारे।
भगव-चरित योतिक भासा।
सुनिञे मन्ति गणेसर हासा ॥

विश्वनगर उत्तर दैत छैक जे यावत काल धरि मृगनयनीक आँखिक वाण नहि लगैत छैक तावते काल धरि ज्ञानवानक चित्तमे विवेकक भावना रहैत छैक। एहि वाग्युद्धकेँ देखि अनंगसेना हँसैत बजैत अछि जे हम तँ धनक अधीन छी, आ आब विलम्ब करब अनावश्यक अछि। विश्वनगर बजैत अछि जे हम तँ एक संन्यासी छी। धन कतऽसँ आओत ? तेँ हमरा शरीरसँ जे सुख लेबाक हो से लियऽ। ई कहैत कामातुर भऽ ओकरा दिस ताकऽ लगैत अछि। अनंगसेना ओ स्नातक दूहू गोटे विश्वनगरकेँ बुझबऽ लगैत छैक जे संन्यासीकेँ एहि तरहेँ कामपीड़ित नहि होयबाक चाही। परञ्च वासनाभिभूत भऽ विश्वनगर अनंगसेनाक आँचरकेँ पकड़ि लैत छैक। एहि अनौचित्यकेँ देखैत स्नातक क्रोधमे विश्वनगरसँ कहैत छैक जे रे परलोककेँ नष्ट कयनिहार दुष्ट संन्यासी ! ई पहिने हमरा ग्रहण कयलासँ तोहर पुतहु होइत छौक। तेँ छोड़ एकरा। प्रतिरोधक स्वरमे विश्वनगर बजैत अछि जे ई हमर पत्नी थिक; अतएव ई तोहर मातृतुल्य गुरुपत्नी भेलौक। तोँ एकरा संग शृंगारक गप करबाक अधिकारी नहि छेँ। स्नातक उत्तर दैत छैक जे तोँ लम्पट छेँ। लाठीसँ कपार फोड़ि देबौक। एहि विवादकेँ बढ़ैत देखि अनंगसेना ओकरा दुनू गोटाकेँ पंचैती करयबाक लेल असज्जाति मिश्रक ओतऽ जयबाक आग्रह करैत छैक।

ई मिश्र महाशय सेहो एक धूर्त आ पाखण्डी पंडित अछि। एकर अनुसार संसारमे सर्वश्रेष्ठ वस्तु 'सुरत' छैक। एकर मित्र बन्धुवञ्चक एकरासँ अधिके लम्पट अछि। ओ कहैत छैक जे एहि पृथ्वीपर परस्त्री सहवासमे जतेक आनन्द प्राप्त होइत छैक ततेक मोक्षो भेलापर नहि होइत छैक। ई दूनू अपनामे एहि प्रकारेँ वार्तालाप कैए रहल छल कि ओकरा लोकनिक समक्ष दूनू गुरु-शिष्य तथा अनंगसेना निर्णयक लेल उपस्थित होइत अछि। वस्तुतः ओहि धूर्तपुरीमे जेहने गुरु असज्जाति मिश्र तेहने ओकर चेला बंधुवञ्चक अछि।

असज्जाति मिश्र चिंतित अछि जे आठ दिनसँ ने केओ पंचैती करबऽ आयल छैक आ ने कपट श्राद्धमे लाभ भेलैक अछि। कोनो गणिकासँ वार्तालाप करबाक अवसर सेहो नहि भेटल छैक। अनंगसेना सहित विश्वनगर ओ स्नातकक आगमनसँ असज्जाति मिश्रकेँ भिक्षा देबाक आशंका होइत छैक आ ताहिसँ ओ चिंतित भऽ उठैत अछि। परंच पंचैती करबाक उद्देश्य जानि उल्लाससँ स्वागत करैत सभकेँ आसनपर बैसबैत अछि। दूहूक इजहार आरंभ भेलैक। विश्वनगर स्वाधीन-यौवना अनंगसेनाकेँ अपन बल्लभा होयबाक दाबा उपस्थित करैत अछि। स्नातक बाजल जे सर्वप्रथम ओ अनंगसेनाकेँ देखलकैक अछि, ओकरा दस गोट टाका देलकैक अछि, आ तेँ स्नातकक बल्लभा थिकैक।

असज्जाति मिश्र अनंगसेनाकेँ देखैत चकित भऽ जाइत अछि, कारण ओ अप्रतिम सुन्दरी अछि। ओ आदेश करैत अछि जे निर्णयक दिनधरि अनंगसेनाकेँ निर्णायकक लग रहब उचित एवं न्याय संगत होयत। अपन लगमे अनंगसेनाकेँ बैसाकऽ ओ बजैत अछि जे अनंगसेना ओकरा दूनू गोटामे सँ ककरो नाहि थिकैक, कारण बहुत दिन पूर्व ओ स्वयं स्वप्नमे अनंगसेनाक संग समागम कयने अछि आ ताहि कारणसँ अनंगसेना ओकर प्रिया थिकैक।

किछु एकांत देखि बंधुवञ्चक अनंगसेना सँ कहैत अछि–हय सुन्दरि ! मिश्र महाशय मूर्ख अछि, निर्धन अछि तथा स्नातक स्वेच्छाचारी अछि। अतएव एकरालोकनिकेँ छोड़ि हमर समागमसँ तोहर यौवन सफल होयतौक ! एहिपर अनंगसेना बजैत अछि जे यथार्थतः ई तँ धूर्तसभक समागमक एकटा प्रहसने भऽ गेल। विश्वनगर स्नातककेँ दोष देबऽ लगैत छैक जे तोरे कुमतिक कारणसँ असज्जाति मिश्र अनंगसेनाकेँ छीनि लेलक। विश्वनगर आ स्नातक निराश भऽ पुनः सुरतप्रियाक खोजमे चल जाइत अछि।

तत्पश्चात् कतहुसँ मूलनाशक नामक नौआ अपन धूर्तताक परिचय दैत प्रवेश करैत अछि। अबितहिँ अनंगसेनापर ओकर दृष्टि पड़लैक। चारूदिस सतर्कतासँ देखैत ओ अनंगसेनासँ कहैत छैक जे तोहर चरित बुझलियौक जे बारम्बार 'मदन-मन्दिर'क केश कटबाक वेतन हमरा एखन धरि नहि देलह अछि। से एँखन लाबह। नहि तँ आब बड़ पैघ अभागलि होयबाक शाप देबहु। एहिपर अनंगसेना हँसैत कहैत छैक जे एखने असज्जाति मिश्रसँ लऽ तोरा बेतन दऽ देबौक।

बंधुवञ्चक ओहि नौआक वर्णन करैत कहैत अछि जे ओकर ठोर आ नाक काटल छैक, गाल फूलल छैक, बामा आँखिसँ कनाह अछि तथा एक गोट हाथ गलिकऽ खसऽवला छैक; ऐहने रूपवान नौआक नाम मूलनाशक छैक। मूलनाशकक अयलापर जखन असज्जाति मिश्र ओकरा अपन दाढ़ी काटि देबाक लेल कहैत छैक तँ ओ पहिने अपन वेतनक माङ करैत छैक, कारण केश कटबाक काल यदि 'परिस्खलन'सँ ओकर मृत्यु भऽ जयतैक तँ ओकरा वेतन नहि भेटि सकतैक। असज्जाति मिश्र नौआकेँ परिहास नहि करबाक लेल कहैत परितोषिक रूपमे झोरीसँ गाँजा बहार कऽ ओकरा दैत छैक। नौआ गाँजाकेँ प्रसन्नतापूर्वक सुंघैत अछि आ मिश्रमहाशयक दूनू हाथ-पयरकेँ बान्हि केश कटबाक अभिनय करऽ लगैत अछि। असज्जाति मिश्रक छातीमे दर्द करऽ लगैत छैक आ हड्डीक

जोड़सभ टूटय लगैत छैक। ओ मूलनाशकसँ छोड़ि देबाक लेल प्रार्थना करैत अचेत भऽ जाइत अछि। पछाति विदूषक बन्धुवञ्चक ओकर हाथपयरक वन्धन खोलि दैत छैक। तखन ओकरा होश अबैत छैक। अन्तमे भरतवाक्यक संग प्रहसन समाप्त होइत अछि।

परिवेश

ज्योतिरीश्वर अपन एहि प्रहसनमे हास्य एवं शृंगारक माध्यमसँ मिथिलाक तत्कालीन समाजिक कुरति सभपर पर्याप्त व्यंग्य कयलनि अछि। ओहि कालमे समाजमे कोन प्रकारेँ ब्रह्मचारी एवं संन्यासीक भेषमे रहऽवला लोकसभक द्वारा भ्रष्टाचार, विकृत वासना, ढोंग आदिकेँ प्रश्रय भेटि रहल छलैक, लेखक समाजक समक्ष तकरे नग्नरूपमे प्रस्तुत करबाक प्रयास कयलनि अछि। एकर माध्यमसँ ओ समाजकेँ एहन तत्व सबहिसँ दूर रहबाक चेतावनी देमऽ चाहैत छथि। राजदरबार, बिहार ओ मठमे रहनिहारि स्त्रीगण स्वेच्छाचारिणी भऽ निर्लज्जतापूर्वक कोना व्यवहार करैत छलि, तकरोपर लेखक कठोर व्यंग्य करैत छथि। दबल ओ कुंठित वासनासँ व्यथित कामिनी कंचनक लोभसँ भरल बिहारमे रहऽवला गुरु-शिष्यक सम्बन्ध तककेँ ताकपर राखि कोन तरहेँ वासनाक क्षुधाकेँ तृप्ति कयल जाइत छलैक एहि सभक अत्यन्त मनोवैज्ञानिक तथा प्रभावी हास्य-चित्र विश्वनगर, स्नातक तथा सुरतप्रियाक माध्यमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। धनी वर्गक कृपणता, ढोंगीक मिथ्याभिमान, जनसामान्यक कामुकता, तत्कालीन समाजमे भोजनक विन्यास, बाममार्गक प्रभावसँ तामसी भोजनक प्रचुरता, पंचलोकनिक कपट आ धूर्तता, विकृत लोलुपता तथा समाजक तथाकथित कर्णधार लोकनिक व्यक्तिगत जीवनक चरित्रहीनता आदिपर प्रहार करबामे लेखक कोनो कोताही एवं संकोच नहि कयलनि अछि। एकर अतिरिक्त, एहि प्रहसनमे चौदहम शताब्दीक मिथिलामे प्रचलित पंचायत-प्रणाली, भोजन-सामग्री, जमाय ओ बरियातीकेँ विदाक कालमे नौआ द्वारा ओकरा अयना देखयबाक प्रथा आदिक झाँकी प्रस्तुत करबामे सफल भेलाह अछि।

एकर एक पात्र मृतांगार ठाकुर जाहि अराजकताक चर्चा करैत छथि से ऐतिहासिक तथ्य थिक। मुसलमानी आक्रमणक फलस्वरूप कर्णाटवंशीय राजा हरसिंहदेवकेँ अपन देश मिथिला त्यागि नेपाल चल जाय पड़लनि। एहिमे ओकर एक रोमांचकारी संकेत अछि। पुनः १३५३ ई. मे ओएनबार वंशीय कामेश्वर ठाकुरकेँ दिल्लीक सुलतानसँ मिथिलाक राज्य प्राप्त भेलनि। एहि मध्य लगभग तीस वर्ष धरि मिथिलाक राजनीतिक मंचपर सर्वथा अराजकता ओ अंधकार रहल। एहि अराजकताक स्थितिमे सामाजिक एवं नैतिक मूल्यक ह्रासकेँ ओकर स्वाभाविक परिणाम कहल जा सकैत अछि।

मिथिला प्राचीन कालहिसँ रूढ़िवादी एवं कट्टरपंथी रहल अछि। बैद्ध धर्मक प्रभावसँ समाजमे पसरल रक्तक अशुद्धताक निवारणार्थ कर्णाटवंशी राजा आ ज्योतिरीश्वरक आश्रयदाता हरसिंहदेव पञ्ची-प्रथाक प्रारंभ कयलनि। एक दिस एहिसँ रक्तमिश्रणक परिहार भेल तँ दोसर दिस समाजमे कुलीनताक प्रथा प्रचलित भेल। समाजमे अनेक प्रकारक भ्रष्टाचारक समावेश भेलैक। जनसामान्यक जीवनमे विलासिता, आडम्बर, भ्रष्टाचार,

कपट, धूर्तता तथा मिथ्या भक्तिक प्रवेश भेलैक। दासता, दरिद्रता एवं वेश्यावृत्ति तत्कालीन समाजक अंग जकाँ बनि गेलैक । अतएव ज्योतिरीश्वरकेँ समाजक एहि व्याधि सभपर निर्मम प्रहार तथा ओकर उपचारक हेतु 'प्रहसन'क आश्रय लोमय पड़लनि ।

ज्योतिरीश्वर एहिमे समाजक नग्न चित्र प्रस्तुत कयलनि अछि । ओ जे संन्यासी विश्वनगर तथा ओकर शिष्य स्नातककेँ उपहासक पात्र बनौलनि अछि, तकर कारण अछि। वर्णरत्नाकरमे 'बौद्धपक्ष अइसन आपात भीषण' तथा 'उदयन सिद्धान्त अइसन प्रसन्न' उक्तिसँ परम्परागत बौद्ध-ब्राह्मणक संघर्षक संकेत स्पष्ट अछि । उदयन तथा अन्य दार्शनिक विद्वान् अपन युक्ति ओ तर्कसँ बुद्धिजीवी एवं उच्चवर्गकेँ बौद्धधर्मसँ विमुख करबामे तँ सफल भेलाह, मुदा सामान्य जनतापर तखनहुँ ओकर प्रभाव छल । ज्योतिरीश्वरक समयमे बौद्ध परम्पराक सिद्ध लोकनि तथा नाथपंथी सभ बहुत सक्रिय छलाह आ नाना प्रकारसँ जनसमुदाय केँ आकर्षित कऽ रहल छलाह। ओ सभ सिद्धान्ततः किछु प्रचार करैत छलाह, मुदा साधारण लोक व्यवहारमे पूर्णतः सांसारिकतामे डूबल छल । एहि परिवेशमे परकीया-प्रेमक महिमाक गान स्वाभाविक छल। वस्तुतः जे 'महासुखवाद' हुनका लोकनिक जीवन-दर्शन छलनि, तकरे आवरणमे पंचमकार युक्त उन्मुक्त भोगवाद केँ प्रश्रय भेटि रहल छलैक। सामान्य जनसमुदाय एवं गृहस्थ एहि स्थितिसँ स्वतः आकर्षित होइत छल । एहि सामाजिक वातावरणकेँ 'धूर्तसमागम'क पात्रक चित्रणमे ज्योतिरीश्वर निःसंकोच उपस्थित कयलनि अछि ।

प्रहसन : एक समीक्षा

आलोच्य कृतिमे नाट्यशास्त्रीय लक्षणक निर्वाह अधिकांशतः भेल अछि । भारतीय नाट्यशास्त्रक आचार्य लोकनि प्रहसनक परिभाषा एवं विशेषताक उल्लेख कयने छथि । 'धूर्तसमागम' नाम सर्वथा ठीक अछि। एकर प्रत्येक पात्र धूर्तक आचारण करऽवला छैक।

दशरूपककारक अनुसार प्रहसन एक हास्यप्रधान रूपक होइछ । एकर तीन गोट भेद होइत अछि, शुद्ध, विकृत आ संकर। शुद्ध प्रहसनमे पाखंडी, ढोंगी, संन्यासी, ब्राह्मण, चेट, चेटी, विट आदिक बाहुल्य रहैत अछि। एहि पात्र लोकनिक भाषा एवं भेषक अनुरूप ओकर व्यवहार एवं चेष्टा होइत छैक । ई प्रहसन हास्यपूर्ण वचनसँ युक्त होइत छैक । पुनः जतऽ नपुंसक, कंचुकी अथवा तपस्वी पात्रक समावेश रहैत अछि, आ जे कामुक लोकक वचन एवं भेषक प्रयोग करय ओ प्रहसन विकृत कहबैत अछि। एकर अतिरिक्त धूर्त व्यक्ति सँ पूर्ण प्रहसनकेँ संकर कहल जाइत अछि। 'धूर्तसमागम'मे एहि तीनू प्रकारक प्रहसनक मिश्रण अछि । विशुद्ध प्रहसन जकाँ एहिमे पाखण्डी, संन्यासी, ब्राह्मण आदि पात्रक समावेश एवं हास्ययुक्त वचनक प्रयोग पाओल जाइत अछि । विकृत जकाँ एहिमे पात्रसभ कामुक भऽ अपन चेष्टा प्रदर्शित करैत अछि तथा संकर सदृश धूर्तपात्रक बाहुल्य अछि । तीनू प्रकारक प्रहसनमे केवल हास्यरसक प्रयोग होयबाक चाही । हास्यरस सेहो अपन छबो गोट भेद सहित,–'हसित, अपहसित, उपहसित, अवहसित, अतिहसित तथा विहसित' रहबाक चाही ।

यद्यपि प्रहसनक हेतु एके अंकक योजना अपेक्षित अछि, परञ्च ज्योतिरीश्वर एहिमे दू अंकक योजना कयने छथि। आचार्य विश्वनाथ प्रहसनक लेल दू अंकक योजनाकेँ विहित कहलनि अछि । जेना,–

"तत्पुनर्भवति द्वयङ्कमथवैकांक निर्मितम्" ।[१]

ज्योतिरीश्वर निश्चित रूपसँ एहिमे अङ्क योजना एही लक्षणग्रंथक आधारपर कयने होयताह, से कहब युक्तिसंगत नहि बूझि पड़ैछ । कारण, आचार्य विश्वनाथ की तँ ज्योतिरीश्वक परवर्ती कहल जा सकैत छथि अथवा समकालीन । मुदा पूर्ववर्ती तँ नहिये कहल जयताह । ई दूनु गोटे एके शताब्दीक मानल जाइत छथि । परञ्च, ज्योतिरीश्वर पूर्वार्धक छथि आ विश्वनाथ उत्तरार्धक । ज्योतिरीश्वरक समय १३२४ ई. छनि तथा 'धूर्तसमागम'क रचनाकाल सेहो ओही शताब्दीक पूर्वार्ध मानल जाइत अछि । परञ्च, साहित्यदर्पणक रचनाकाल १३८२-८५ ई. क समकाल मानल गेल अछि । एहि तथ्यक आधारपर ज्योतिरीश्वर आचार्य विश्वनाथसँ पूर्ववर्ती सिद्ध होइत छथि । अतः ई निश्चित रूपसँ कहल जा सकैत अछि जे ज्योतिरीश्वरक आधार साहित्यदर्पण कदापि नहि छलनि। ई अनुमान्य थिक जे ज्योतिरीश्वरक पूर्वेसँ एहन अनेक प्रहसनक रचना भऽ रहल छल हो जाहिमे दू गोट अंकक विधानकेँ विहित मान गेल हो आ एही मान्यताकेँ साहित्यदर्पणकार शास्त्रीय रूप अथवा स्वीकृति प्रदान कऽ देने होथि ।

दोसर विषय ई जे विभिन्न आचार्यक मतानुसार प्रहसनमे अंगीरस हास्यरस होयबाक चाही, परञ्च 'धूर्तसमागम' मे शृंगाररसक प्रधानताक आभास भेटैत अछि । संस्कृत 'धूर्तसमागम'क प्रस्तावनामे स्वयं ज्योतिरीश्वर शृंगार रसक प्रधानताक उल्लेख कयलनि अछि । परंच, प्रस्तुत प्रहसनक परीक्षण एवं अनुशीलनसँ स्पष्ट होइछ जे एहिमे शृंगारक नहि, हास्य रसक प्रधानता छैक । यदि एहिमे किछु अंशमे शृंगारकेँ स्वीकार कइयो लेल जाय तँ ओ श्लील शृंगार नहि कहल जा सकैछ । मुदा, हमरा लोकनिक आचार्यक मत छनि जे रस अथवा भाव यदि अनौचित्य (लोक-शास्त्र विरुद्ध) रूपसँ वर्णित हो तँ ओकरा रसाभास कहल जाइत छैक । 'धूर्तसमागम' मे ई अनौचित्य स्नातक-गुरुक संभाषण, अनंसेना विश्वनगर तथा असज्जाति मिश्रक वार्तालाप, नौआक मदनमंदिर क्षौरकर्म आदिमे पाओल जाइछ अतएव ई स्पष्ट प्रतीत होयत जे एहिमे शृंगारक रसाभास भऽ सकैत अछि। ओकर रस-पुष्टि नहि होइछ ।

एकर विपरीत, एकर रचनाशैली, एकर पात्रक नाम, एकर कथोपकथन अथवा अन्य विचित्र प्रकारक स्थिति सभसँ स्पष्टरूपेण हास्य सृष्टि होइत अछि । भारतीय आचार्य लोकनिक मान्यता छनि जे स्वयं अथवा दोसराक विकृत आकार देखिकऽ हासक उत्पत्ति होइत छैक । सम्पूर्ण धूर्तसमागममे अश्लील शृंगारक मध्य सेहो हास्यक उत्पत्ति होइत छैक । प्रारंभमे मृतांगारक बहाना बनायब, विश्वनगरक द्वारा एक भोजनभट्ट जकाँ भोजनक वस्तुक सूची प्रस्तुत करब, गुरु-शिष्यक बीच अनंगसेनाककेँ प्राप्त करबाक उत्तर-प्रत्युत्तर,

---

१. साहित्यदर्पण, ६/२६७

विदूषकक प्रलाप, आसज्जाति मिश्रक चतुरतासँ अनंगसेनाकेँ अपना लग राखि लेबापर विश्वनगरक स्थिति आदि प्रसंग सभसँ हास्यरसक पर्याप्त पुष्टि होइत अछि। एहि प्रहसनमे किछु प्रसंग एहन अछि जाहिमे अश्लीलता आ वीभत्स चरम सीमापर पहुँचि गेल अछि। अनंगसेनाक 'मदन-मंदिर क्षौर', सुरतप्रियाक नीरस पयोधर, असज्जाति मिश्रक क्षौर कर्मसँ 'परिस्खलन' आदि प्रसंगमे अश्लील शृंगारक संगहि वीभत्सरसक सृष्टि होइत अछि। अतएव 'धूर्तसमागम' प्रहसनमे प्रधान रस, अंगीरस हास्ये भऽ सकैत अछि। अंगक रूपमे शृंगार, वीभत्स एवं शांत रसकेँ सेहो मानल जा सकैत अछि।

ए. बी. कीथक कथन छनि जे ई प्रहसन अवश्ये जन-नाट्य रहल होयत।[१] डॉ. शैलेन्द्र मोहन झाक मत छनि जे–" धूर्तसमागमक रचनामे जन-नाट्य अर्थात् नाट्यक जे प्रेरणा छल तकरा अस्वीकार नहि कयल जा सकैत अछि। एकरा भाषागीतसँ युक्त करबाक इएहटा कारण प्रतीत होइत अछि। लोकधर्मी नाट्य चिरकालसँ अशिक्षित ग्रामीण ओ समाजक ओहि वर्गक, जकरा ज्योतिरीश्वर मन्द जातिक कोटिमे गनने छथि मनोविनोदक साधन रहल अछि। धूर्तसमागमक विषयवस्तु सर्वथा अश्लील अछि। मुदा ओ वर्ग एहि अश्लीलताकेँ सिनेहेटा नहि करैत छल अपितु ओकरा एहिमे रस भेटैत छलैक।"[२] परञ्च आचार्य रमानाथ झाक मत एहिसँ भिन्न छनि। अश्लीलताक कारणे एकर अभिनय भेल होयत से हमरा बुझने संभव नहि अछि। साधारण जन-समूह आ नवतुरिया वर्गमे एखनहुँ एतेक अश्लील नाटक देखबाक अथवा ओकर मंचन करबाक साहस नहि होयतैक। प्रो. रमानाथ झा कहैत छथि,–"...एहि प्रहसनकेँ पढ़ि कल्पनो नहि कए सकैत छी जे एहन अश्लील नाटकक रङ्गमञ्चपर प्रदर्शन भेल होएत, ओकर अभिनय भए सकल होएत, ओ तकर संकेतो नहि अछि।"[३]

हमरा प्रो. रमानाथ झाक मत समुचित बूझि पड़ैत अछि। ओना, श्याम नारायण सिंह द्वारा ई जनाओल गेल अछि जे प्रवाद अछि जे नेपाल मध्य हरसिंहदेवक राजसभामे एहि प्रहसनक अभिनय कयल गेल छल।[४] संभव थिक जे तत्कालीन राजा लोकनिक मनोरंजनार्थ एहि प्रकारक प्रहसन लिखल जाइत छल, आ राजमहलक परिसरमे राजाक मोसाहिब लोकनिक बीच बौसि राजा मनोरंजनक लेल एकर मंचन करबैत होथि। यदि मंचन करबाक कोनो आशा नहि रहितैक, तखन एहि तरहक नाटक लिखबाक लेल ज्योतिरीश्वर सन गंभीर विद्वान, कवि आ सभासद अपन समय किएक बेरबाद करितथि। एक बात ईहो जे एहि प्रकारक अश्लील प्रहसनक रचनाक प्रारंभ कोनो ज्योतिरीश्वरे नहि कयने छलाह। हुनक पूर्ववर्ती तथा परवर्ती कतोक रचनाकार तत्कालीन समयमे लोक-रंजनार्थ एहि प्रकारक प्रहसनक रचना कयने छलाह। ज्योतिरीश्वरक पूर्ववर्ती शंखधर अपन आश्रयदाता गोविन्दचन्द्रक मनोरंजनार्थ ''लटकमेल' (बदमासक संघ) प्रहसन लिखने

१. संस्कृत नाटक, दिल्ली; १९६५; पृ. २७५
२. ज्योतिरीश्वर; मैथिली अकादमी, पटना; पृ. ७१
३. प्रबन्धसंग्रह; पृ. ७४
४. हिस्ट्री ऑफ तिरहुत, कलकत्ता १९२२, पृ. ६७ एवं १४२

छलाह। ज्योतिरीश्वरक परवर्ती कालमे सेहो जगदीश्वर भट्टाचार्यक 'हास्यार्णव', गोमराज दीक्षितक 'धूर्तनर्तक', गोपीनाथ चक्रवर्तीक 'कौतुक सर्वस्व' सदृश कतोक प्रहसन प्राप्त अछि। एहि प्रहसन सभमे अश्लीलताक प्रचुर मात्रा अछि। बुएलर (Buchler) एहि प्रकारक प्रसन सभक संग्रह कयने छलाह तथा विन्टरट्जि (Winternitz) कैँ सूचना देने छलथनि जे ओ भारतवर्षसँ बहुत रास प्रहसन अपना संग अनलनि अछि। मुदा, अति अश्लीलताक कारणे ओकरा प्रकाशित करब संभव नहि छैक।

हास्यार्णव प्रहसन

उपर्युक्त कतोक प्रहसनमे एहिठाम हास्यार्णव प्रहसनक चर्चा आवश्यक बूझि पड़ैत अछि. कारण शैली, चरित्रचित्रण एवं कथानकमे ई धूर्तसमागमसँ बहुत अधिक समानता रखैत अछि। सी. कैपलर एकर प्रकाशन 'धूर्तसमागम'क संगहि कयने छलाह। दुनू प्रहसनक कथा बहुत किछु एके प्रकारक अछि। 'हास्यार्णव'क रचनाकार जगदीश्वर भट्टाचार्यक काल ज्योतिरीश्वरसँ बहुत पाछतिक छनि। अतएव ई संभव थिक जे 'हास्यार्णव'क कथा 'धूर्तसमागम'सँ प्रभावित भेल हो। एहि प्रहसनमे सेहो प्रारंभमे शिवक स्तुति कयल गेल अछि। तकर बाद राजा अभयसिंधुक राज्यव्यवस्थाक अत्यन्त हास्यपूर्ण वर्णन कयल गेलैक अछि। एकर पात्रक नामकरण ओकर गुणानुरूप एवं हास्ययुक्त भेल छैक, जेना अयथार्थवादी नामक सैनिक, रणजम्बूक नामक सेनापति, कुमतिवर्मा नामक महामंत्री, विश्वभण्ड नामक गुरु, कलहांकुर नामक शिष्य, बन्धुरा ओ मृगांकलेखा नामक वेश्या, रक्तकल्लोल नामक नौआ तथा मिथ्यार्णव नामक ब्राह्मण। नौआ द्वारा अयना देखेबाक प्रथाक एहू प्रहसनमे उल्लेख अछि।

राजा अभयसिंधुक राज्य व्यवस्थाक बहुत व्यंग्यात्मक वर्णन अछि। राज्य-व्यवस्थामे पसरल दुर्व्यवस्थासँ राजाकैँ बहुत क्षोभ छैक। ओतऽ चांडाल जुत्ता बनबैत छैक, पत्नीसभ प्रतिव्रता अछि, पति एकनिष्ठ अछि तथा सज्जन व्यक्तिक आदर-सम्मान कयल जाइत छैक।

'हास्यार्णव' प्रहसनक कथावस्तु संक्षेपमे एहि प्रकारक अछि। कलहांकुर मृगांकलेखा नामक वेश्यापर आसक्त अछि। अतएव जखन ओकरा विश्वभण्ड आदेश दैत छैक जे मृगांकलेखासँ कहैक जे रातिमे ओकर घरमे आबि सहवास-सुखकैँ प्राप्त करय तँ ओ स्वयं ओहि वेश्याकैँ अपन आलिङ्गनमे कसि ओकर चुम्बन करऽ लगैत छैक। एहि अशिष्ट व्यवहारसँ गुरु क्रुद्ध भऽ उठैत अछि तथा दूनूक मध्य 'धूर्तसमागमे' जकाँ हास्यपूर्ण वाद-विवाद होमऽ लगैत छैक। एहि कालमे बन्धुरा नामक वेश्या आबि कहैत छैक जे मृगांकलेखाक कामशास्त्रक अध्यापक श्री मदनान्धमिश्र अहाँ दुनू गोटाक झगड़ाक निर्णय करताह। श्रीमदनान्धमिश्र मृगांकलेखा कैँ देखैत देरी मदनान्ध भऽ जाइत छथि आ तत्काल ओही स्थानपर ओकरा संग सुरतक्रिया सम्पन्न करऽ लगैत छथि। ई देखि गुरु-शिष्य दूनू गोटे उदास भऽ ओहि ठामसँ विदा भऽ जाइत अछि। एहि 'सुरतक्रिया'क पश्चात् पंचैती होइत छैक, जे 'धूतसमागम' सँ मिलैत छैक। एकर अतिरिक्त नौआक "मदन-मंदिर-

क्षौरकर्म'', मिथ्यार्णव ब्राह्मणक प्रवेशक– जाहिमे ओ कहैत अछि जे एक ब्राह्मण एक धोबिनक संग व्याभिचार कऽ रहल छल, जकरा देखि लोक सभ ओकरा पाथरसँ मारि देलैकक, अतएव ओकरा ब्रह्महत्याक दोष लगबाक चाही; एतबामे ओकर दृष्टि मृगांकलेखापर पड़ैत छैक आ ओ कामाभिभूत भऽ उठैत अछि, मुदा धूर्तमंडलीक उपस्थितिसँ मन मसोसिकऽ रहि जाइत अछि आ बजैत अछि जे एतऽ धूर्तक जमघट लागि गेल अछि। एही प्रकारेँ आन-आन प्रसंगक वर्णन तहिना अछि जेना 'धूर्तसमागम'मे छैक।[1]

मैथिली गीत

'धूर्तसमागम'क मैथिली साहित्यमे अत्यधिक महत्त्व ओकर मैथिली गीतक कारणे अछि। मैथिली युक्त 'धूर्तसमागम'मे कुल बारह गोट गीत शेष रहि गेल अछि। ओहिमे किछु तँ संस्कृत श्लोकक पद्यानुवाद थिक, शेष स्वतंत्र रूपेँ रचल गेल अछि। जयदेवक 'गीतगोविन्द'क प्रभाव तथा चर्यापदक अनुकरणपर राग ओ तालक निर्देश स्पष्टतः परिलक्षित होइछ। एकर भाषा 'वर्णरत्नाकर'सँ भिन्न तथा विद्यापतिक समान बूझि पड़ैछ। कतोक पदक रूप तँ आधुनिक मैथिलीक समान व्यवहृत भेल छैक। एहिमे प्रवेश-गीत, राजवर्णना गीत ओ ऋतुवर्णना गीत कीर्तनियाँ नाटकक गीत-सदृश अछि।

गीतक भाषा परिमार्जित अछि। शब्दालङ्कारक पथार लागल अछि, अर्थालङ्कार थोड़ अछि। परञ्च स्वभावोक्ति, रूपवर्णन तथा सर्वबोधगम्य भावक समावेश एहि गीतसभक महत्त्वकेँ आओरो बढ़ा दैत छैक। ई मैथिली साहित्यक उपलब्ध प्राचीनतम गीत थिक। गीत सभक भनितामे 'कविशेखर जोतिक' , 'कविशेखर', 'योतिक', 'ज्योतिरीस' भेटैत अछि। ई सभ कविशेखर ज्योतिरीश्वरक नामक विभिन्न रूप थिक, जकरा स्वीकार करबामे कोनो आपत्ति नहि छैक। एहि ग्रंथमे हुनक आश्रयदाताक रूपमे हरसिंहदेवक नामक उल्लेख सेहो अछि। एहि गीतसभसँ ई स्वतः सिद्ध अछि जे ज्योतिरीश्वर मैथिलीक प्रथम गद्यकारे नहि, प्रथम कवि सेहो छथि। ओना ई स्पष्ट अछि जे 'वर्णरत्नाकर' मे व्यवहृत हुनक गद्यक तुलनामे एहि गीत सभक काव्य-सौष्ठव अति साधारण छैक। डॉ. शैलेन्द्र मोहन झाक ई कथन यथार्थ छनि जे–'' संस्कृत प्राकृत कथोपकथन युक्त मिथिलाक नाटकमे भाषा-गीतक प्रयोगक आधारभूत कारण इएह कहल जायत जे ओ सामान्य प्रेक्षककेँ बोधगम्य हो, ओकर मनोरंजनमे साधक हो। एक गोट सचेत कलाकार सदृश ज्योतिरीश्वर भाषाक ओएह रूप रखलनि।''[2]

एहिमे तीन प्रकारक गीत पाओल जाइछ,–प्रवेश गीत, वर्णनात्मक गीत तथा संस्कृत श्लोकक अर्थपरक गीत। एहि गीत सभमे स्वतंत्र कल्पनाक यद्यपि अवसरे थोड़ छल,

१. 'हास्यार्णव'क विशेष विवरणक लेल दृष्टव्य :–
 (i) विन्टतरनिट्ज कृत 'भारतीय इतिहास का इतिहास; भाग ३ खण्ड १ पृ. ३४६;
 (ii) ए. बी. कीथ; संस्कृत नाटक; पृ. २७६-२७७; तथा
 (iii) डॉ. प्रतापनारायण झा; मैथिली नाटक का उद्भव और विकास; पृ. ८४

२. ज्योतिरीश्वर; मैथिली अकादमी; पृ. ७५

मुदा ई नहि कहि सकैत छी जे एहन गीत अछिये नहि जाहिमे ज्योतिरीश्वरक कवि-कल्पना परिलक्षित हो। अनंगसेनाक प्रवेशक गीत अछि, जाहिमे ओकर सौंदर्यक वर्णन अछि। ओहिठाम कवित्व साकार भऽ उठल छनि। भाव ओ शृंगारक सम्मिश्रणसँ ओ जयदेवसँ प्रतिस्पर्धा करैत लगैत अछि। सभ गीत संगीतपरक अछि आ प्रत्येक गीतक आरंभमे ओकर राग आ ताल निर्दिष्ट अछि।

ई गीतसभ प्रहसनक कथावस्तुक विकासमे कोनो बाधा उपस्थित नहि करैत अछि, अपितु ओकर सहायक सिद्ध होइछ। प्रवेश-गीत सबहिसँ पात्रक व्यवहार ओ स्वभावक परिचय भेटैत अछि। उदाहरणक लेल ओहि प्रसंगकेँ लेल जा सकैत अछि जखन विश्वनगर आ स्नातक अनंगसेनाक संग असज्जाति मिश्रक ओतऽ पंचैतीक लेल अबैत अछि। अनंगसेनाक रूप-सौंदर्यसँ मोहित भऽ असज्जाति मिश्र कोन प्रकारेँ अपन कपट-जाल पसारैत अछि, तकर रोचक चित्र निम्न गीतमे भेटैत अछि–

तोहरि आ नहिके सनातक !
भगव ! तोहरि नहि नारि।
हमरिए हमरा लग अछ बैसलि
परतष हलिअ विचारी ।। ध्रुवं ।।
परुकाँ सपने हमे अवलोकलि
हमरि तेहि के न जाने ।।
हारल भगब सनातके दुहु जने
तन्हि असजातिक थाने ।।
कविशेखर जोतिक एहु गाबे
राए हरसिंह बुझ भावे ।।

एहि गीतक माध्यमसँ विश्वनगर तथा स्नातककेँ चल जयबाक बात कहि कथावस्तुमे स्वाभाविक विकास अनबाक प्रयास कयल गेलैक अछि।

एक दोसर गीतक माध्यमसँ, जे संस्कृत श्लोकक भावानुवाद थिक, वृद्धा परञ्च कामुक सुरतप्रियाक देहक हास्यपूर्ण एवं मार्मिक वर्णन कयल गेल अछि–

चल चल वलम्भा विफल तञी।
सिक्षा महु बोलसि मसवासि राजी ।। ध्रुवं ।।
गाल पचकि, लबि गेलऔक कया।
तइअओ न छाड़सि अपनुकि मया ।।
भुषलि किञ्चिनि सन तोहर चान।
कके बिहुँसि हसि लेसि परान ।।
पड़अ पयोधर पाकल बार।
सिव सिव कत कर नयन विकार ।।
कविशेखर जोतिक एहु गाव।
राए हरसिंह बुझए रस भाव ।।

जगदीश्वर भट्टाचार्य सेहो अपन 'हस्यार्णव' प्रहसनमे एही तरहेँ बन्धुरा नामक बृद्धा वेश्याक देहक हास्यपूर्ण वर्णन कयलनि अछि, जे ज्योतिरीश्वरसँ स्पष्टरूपेँ प्रभावित अछि। ओ एना अछि;–

प्रलम्बित पयोधरा क्षतरजाबिकारास्पदं,
सदा विगत हंसका तिमिर लुप्त तारा रुचिः ।
तिरस्कृतनिशाकरा गतवया इयं बन्धुरा,
सदा सपदि दृश्यतां जलधरागम श्रीरिव ।।
स्तनौ तुंगौ निपतितौ काम संग्राम मर्दितौ ।
पुरस्तादवलोक्यास्या भगं शुष्कं भयादिव ।।[१]

एहिसँ स्पष्ट होइछ जे ज्योतिरीश्वर प्रतिभाशाली व्यक्तिसँ मैथिलीक संग-संग संस्कृत नाटककार लोकनिपर सेहो अपन प्रभुत्व स्थापित करबामे सफल भेलाह । 'धूर्तसमागम'क सभसँ पैघ महत्त्व ई अछि जे सर्वप्रथम एहीमे संस्कृत-प्राकृतक संग 'देसिल-बयना'क महत्त्व एवं लालित्यकेँ स्वीकार करैत गीतक रूपमे ओकर समावेश कयल गेलैक। संस्कृत-अपभ्रंशक शासन-कालमे ज्योतिरीश्वर क्रांतिकारी डेग उठौलनि आ मैथिलीक प्रौढ़ताकेँ सिद्ध करैत ओकर उदाहरण प्रस्तुत कयलनि । 'वर्णरत्नाकर'सँ कनियो कम महत्त्वपूर्ण 'धूर्तसमागम' नहि अछि। एहिमे रचनाकारक परिचय, आश्रयदाताक उल्लेख तथा मैथिली काव्य-सौन्दर्यक प्राचीनतम रूपक दर्शन होइत अछि ।

---

१. हास्यार्णव प्रहसन, प्रथम संस्करण, चौखम्भा, वराणसी, पृ. २३

वर्णरत्नाकर

ज्योतिरीश्वरक सभसँ चर्चित महत्त्वपूर्ण ग्रंथ वर्णरत्नाकर छनि। चौदहम शताब्दीक प्रथम चरणक पूर्वार्द्धमे रचित ई मैथिलीक अपूर्व गद्यग्रन्थ थिक।

'वर्णरत्नाकर'क एकमात्र उपलब्ध हस्तलेख बंगाल एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ताक लाइब्रेरीमे हस्तलेख संग्रहमध्य (संख्या ४८/३४) सुरक्षित अछि। ई सुन्दर तड़िपतपर प्रचीन तिरहुता अक्षरमे लिखल अछि। एहिमे ७७ पात छल, किन्तु संग्रहक समय १७ गोट पात (१सँ ९ धरि तथा ११, १२, १४, १५,१७,१९, २६ ओ २७) हेरायल छल। तड़िपतक विस्तार लगभग ३८×१५ से० मी० अछि। सामान्यतया एक पीठपर पाँच गोट पाँती अछि, किछुमे चारि पाँती आ कतोकमे छओ पाँती भेटैत अछि। सौभाग्यसँ एहि हस्तलेखक अंतिम पृष्ठ सुरक्षित अछि, जाहिमे तिथि अंकित अछि। ई लक्ष्मण संवत ३८८ मे आश्विन बदि सप्तमी रवि दिन लिखल गेल। हिसाब लगौलासँ ई हस्तलेख १५८७ ई. मे लिखल गेल छल। ज्योतिरीश्वरक मूल लेखनक समय आ एहि हस्तलेखक समयमे कालक समानताक खोज नहि करबाक थिक।

एकर एकमात्र हस्तलेख म.म. हरप्रसाद शास्त्रीक सहायक पंडित विनोद बिहारी काव्यतीर्थकेँ मिथिलामे भेटल छलनि। एहि विषयमे म.म. सर गंगानाथझा अपन जीवनीमे लिखने छथि जे म. म. हरप्रसाद शास्त्री एक पण्डितकेँ प्राचीन हस्तलेखक संग्रह करबाक उद्देश्यसँ मिथिला पठौने छलाह आ सर झा हुनका बहुत सहायता कयने छलथिन। ओ व्यक्ति विनोद बिहारी काव्यतीर्थे छलाह, जे वर्णरत्नाकरक खोज करबाक यश प्राप्त कयलनि।

म. म. हरप्रसाद शास्त्री बंगाल एशियाटिक सोसाइटीसँ १९०१ ई. मे प्रकाशित अपन 'रिपोर्ट ऑन द सर्च ऑफ संस्कृत मैनुस्क्रिप्ट (१८९५-१९००) मे पृष्ठ २३ पर वर्णरत्नाकरक सम्बन्धमे मोटामोटी एक रूपरेखा प्रस्तुत कयने छथि।

'वर्णरत्नाकर'क ई तड़िपत बंगाल एशियाटिक सोसाइटीक पुस्तकालयमे चिरकाल धरि ओहिना पड़ल रहल। १९१९ ई० मे कलकत्ता विश्वविद्यालयमे नव्य भारतीय भाषा

साहित्य (Modern Indian Language) रूपेँ मैथिली स्वीकृत भेल। तखन धरि एकर अधिकांश साहित्य अप्रकाशिते छल। पठन-पाठनक असुविधाकेँ देखैत कलकत्ता विश्वविद्यालयक तत्कालीन कुलपति सर आशुतोष मुखर्जी कतोक मैथिली-ग्रंथकेँ विश्वविद्यालय दिससँ प्रकाशित करबाक योजना बनौलनि। मुदा १९२४ ई. मे हुनक मृत्युक कारणे ओ योजना कार्यान्वित नहि भऽ सकल। 'वर्णरत्नाकर' कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली एम. ए. परीक्षाक पाठ्यग्रंथ रहल। कलकत्ता विश्वविद्यालय देवनागरीमे एकर प्रतिलिपि तँ करा लेलक, मुदा प्रकाशन किछु कारणसँ बहुतो दिन धरि रुकल रहल।

एहि प्रतिलिपिकेँ सुनीति कुमार चटर्जी स्वयं मूल ग्रंथसँ मिला संशोधित कऽ पण्डित खुद्दीझाकेँ ओकर प्रेसकापी तैयार करबाक लेल कहलथिन। ओहि समयमे पण्डित खुद्दीझा कलकत्ता विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागक व्याख्याता रहथि। एहि ग्रंथकेँ सम्यक् रूपेँ सम्पादित करबालेल एकर कोनो दोसर परिपूर्ण हस्तलेख प्राप्त करब आवश्यक छलैक। मुदा से नहि भेटि सकल। अन्ततोगात्वा एशियाटिक सोसाइटीक उक्त हस्तलेखक आधारपर सुनीति कुमार चटर्जी एवं पण्डित बबुआजी मिश्र एकरा सम्पादित कऽ १९४० ई. मे प्रकाशित करौलनि। आब सुनबामे आयल अछि जे ओहो एशियाटिक सोसाइटीक लाइब्रेरीसँ लुप्त भऽ गेल अछि।

ग्रंथक विषय

वर्णरत्नाकर सर्वथा एक विलक्षण कृति थिक। भारतक कोनो दोसर भाषामे एहि प्रकारक ग्रंथ प्रायः प्राप्त नहि अछि। एहि ग्रंथकेँ कोन विषयमे राखल जा सकैत अछि से कहब कठिन। ई ककरा लेल कोन उद्देश्यसँ लिखल गेलैक सेहो कहब कठिन अछि। एहि सम्बन्धमे विद्वान लोकनिक बीच मतान्तर स्वाभाविके अछि। म. म. हरप्रसाद शास्त्री, जे एकर अवलोकन सभसँ पहिने कयलनि, कहैत छथि जे एहिमे कविपरिपाटी प्रतिपादित अछि। एकर अर्थ भेल जे कविकेँ काव्यक रचनामे कोन वस्तुक वर्णन कोना करबाक चाही, तकर मार्गदर्शन कयल गेल अछि।

एकर प्रथम सम्पादक सुनीति कुमार चटर्जी कहैत छथि जे ई लौकिक ओ संस्कृत शब्द सभक एक प्रकारक कोश थिक, काव्यमे वर्णनीय विविध वस्तु ओ भाव सभक प्रसिद्ध उपमा ओ वर्णन–परिपाटीक संग्रह थिक।[1]

एहि ग्रंथक प्रत्येक अध्यायमे विभिन्न शब्द ओ उपमाक सूची अछि आ प्रत्येक सूची अथवा वर्णनक आरंभ अथ.... वर्णनासँ कयल गेल अछि। प्रत्येक अध्यायक अंतमे अध्याय, लेखक तथा कृतिक नामक उल्लेख अछि; जेना–"इति कविशेखराचार्य श्री

१. इन्ट्रोडक्शन टू वर्णरत्नाकर; पृ. २१

ज्योतिरीश्वर विरचित वर्णरत्नाकरे नगर वर्णनो प्रथमः कल्लोलः।" ई कृति सम्पूर्ण रूपसँ एक विश्वकोश थिक अथवा साधारणतया मध्यकालीन समस्त भारतक आ खास कऽ मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवनक सार-संग्रह थिक। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीक कथन छनि जे "वर्णरत्नाकरक पृष्ठभूमि विशुद्ध हिन्दू अछि, आ मुसलमानी कालसँ पूर्वक अछि, यद्यपि उत्तर भारतमे मुसलमानी-तुर्की शासनक स्थापनाक एक शताब्दीसँ किछु अधिक समयक बाद एकर रचना भेल छल। मुसलमानी कालक पूर्वक वातावरण, जाहिमे एहि ग्रंथक रचना भेल अछि, एकर प्रामाणिकताक लेल पर्याप्त साक्ष्य उपस्थित करैत अछि।"[1]

लेखकक उद्देश्य जे रहल हो, मुदा एक बातमे प्रायः सभ विद्वानक सहमति छनि जे 'वर्णरत्नाकर' मे तत्कालीन जनजीवनक सामाजिक ओ सांस्कृतिक पक्षक अद्भुत वर्णन अछि। एहि प्रकारक एक ग्रंथ संस्कृतमे सेहो भेटैत अछि,–'मानसोल्लास', जे गायकवाड़ ओरियेन्टल सिरीज, बड़ौदासँ प्रकाशित भेल अछि। किछु अंशमे एकर तुलना 'आइने-अकबरी'सँ सेहो कयल जा सकैछ।

एहि ग्रंथक सम्बन्धमे सभसँ महत्त्वपूर्ण ई अछि जे ज्योतिरीश्वरक सम्पूर्ण चिंतन आ उपागम राजा एवं राजनीतिक चारू कात चक्कर कटैत पाओल जाइत अछि। तड़िपत जाहि रूपमे आ जतबा बाँचल अछि, ताहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे एहिमे राजाकेँ केन्द्र बिन्दु बनाय समकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शास्त्रीय परिवेशक वर्णन लेखकक अभीष्ट छलनि। पं. गोविन्द झाक कहब ठीके छनि जे,–" एहिमे लेखक दू शैलीक प्रयोग कयलनि अछि, वर्णनात्मक ओ परिगणात्मक। किछु भाग शुद्ध वर्णनात्मक अछि, जेना प्रभातवर्णन, ऋतुवर्णन आदि; किछु अंशमे वर्णन ओ परिगणन दूनू अछि ; यथा नृत्यवर्णनमे; ओ कतोकमे केवल परिगणन अछि, यथा ६४ कला, १२ आदित्य आदि। सहज प्रश्न उठैत अछि जे प्रत्येक वर्णन कोनो एक सूत्रमे क्रमबद्ध अछि कि पूर्णतः परस्पर असम्बद्ध ? हमरा जनैत एहिमे जँ कोनो सूत्र अछि तँ से थिकाह राजा, किन्तु ग्रन्थक सभ खण्डकेँ राजाक सम्पर्क-सूत्रसँ जोड़ब कठिन अछि।"[2]

सम्पूर्ण ग्रन्थ सात गोट कल्लोलमे विभाजित अछि। यथा (१) नगर वर्णना, (२) नायिका वर्णना (३) स्थान वर्णना (४) ऋतु वर्णना (५) प्रयाणक वर्णना (६) भट्टादि वर्णना तथा (७) श्मशान वर्णना।

सातम कल्लोलक बाद आठम कल्लोलक सेहो किछु अंश अछि। मुदा ग्रंथक खंडितावस्थाक कारणसँ ओकर शीर्षक निश्चित करब कठिन अछि। एहि सातो कल्लोलमे

---

१. तत्रैव; पृ. ३६

२. वर्णरत्नाकर; सम्पादक प्रो. आनन्दमिश्र आ पं. गोविन्द झा; पृ. ११

प्रधान वर्णनक संग कतोक स्थलपर अप्रधान वर्णन सभ सेहो समाहित अछि। प्रत्येक कल्लोलक अंतर्गत पुनः उपशीर्षक दऽ अवान्तर विषयक समावेश कयल गेल छैक।

प्रथम कल्लोल थिक–नगर वर्णना। मूल तड़ितक नओ गोट पात अनुपलपब्ध रहबाक कारणे ई कल्लोल आंशिके रूपमे प्राप्त अछि। प्रस्तुत अंशमे नगरक ओहि भागक वर्णन भेटैछ जकरा ग्रन्थकार 'मंदजातीय तेँ वास' कहने छथि।

"......चण्डार, चमार, गौँष्ठ, गोष्ठि, गोति, गोआर,...... प्रभृति मन्दजातीय तेँ वास।"

ततूपश्चात ओहि असामाजिक तत्त्व सभक वर्णन अछि जे सामान्यतः नगरक ओहि अंचलमे सक्रिय छल, यथा–

"चोर, चञ्चल, जुआर, छिनार, लगवार, ...अनुचीती तकर आश्रय देषु कइसन।" तदुपरांत भिक्षुक वर्ग–" 'जगा, योगी, नागरि, भरहर, भण्डुआ प्रभृति अनेक भिषारि तेँ भरल नगरक तुमुल कोलाहल, मजिरा, कठताल, सींगा" आदि बाजाक मधुर ध्वनि, लोरिक आदिक गीतक मादक नाद एवं 'लेह, देह, तोरह, पुनु देहक" शब्दसँ युक्त नगरक वर्णन कयल गेल अछि।

दोसर कल्लोलमे नायिकावर्णन अछि, मुदा एहि अध्यायमे पहिने नायकक वर्णन अछि तखन नायिकाक। एकरहि अंतर्गत सखी वर्णना तथा नायिकाहास्य वर्णना सेहो अछि। ई सभ वर्णन परम्परागत तथा लेखकक शास्त्रीय ज्ञानक बोध करबैत अछि।

नायक धनुर्विद्यामे कुशल, उच्जन, गुटिका, पादुका, रस, परस, खन्ह, बेताल, यक्षिणी, एहि आठ प्रकारक उपसिद्धि; स्तम्भन, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, मारन, विद्वेषकरण, प्रक्षोभन एवं आकर्षण एहि प्रकारक प्राकृतसिद्धि तथा अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, उशिद्ध, वशिद्ध, प्राकाम्य, कामावशायिता, एहि आठ महासिद्धिमे निपुण होइछ। नायक छत्तीस प्रकारक शास्त्र तथा चौरासी प्रकारक राजनीतिक ज्ञाता होइछ। दया, दान, दाक्षिण्य आदि शिष्ट धर्मसँ संयुक्त एवं तेरह प्रकारक गुण जे उपनायकमे रहबाक चाही ओहिसँ समन्वित रहैछ।

ई बुझबाक थिक जे ज्योतिरीश्वर एहिठाम राजाकेँ इंगित करैत नायिकाक गुणक वर्णन कयलनि अछि। एकर बाद नायकक वर्णनमे नायिकाक नख-शिख वर्णन, ओकर अलंकार आदिक विस्तृत वर्णन कयल गेल छैक। नायिकाक सौंदर्यक वर्णन तुलनात्मक शैलीमे अछि। नायिकाक उभय जंघा कोमल सुकुमार ओ हाथीक सूढ़सन; नितम्व पुष्ट, मांसल ओ काछुक पीठसन; नाभि गँहीर, दक्षिणावर्त शंख सदृश मण्डलाकृत; कटि क्षीण, सुकोमल ओ गोल एहि तीन गुणसँ युक्त,....बाहु विशाल, सोंटल ओ कमल नालसन; हाथ कोमल, रक्ताभ, निर्मल, ललित ओ लाल अशोकक पल्लव सन; ग्रीवा तूर जकाँ

मोलायम ओ तीन गोट रेखासँ बलित अछि। एहि संदर्भक आगाँक पृष्ठ खण्डित अछि।

तकर बाद नायिकाक देहपर शोभायमान अनेक प्रकारक आभूषणक नाम गनाओल गेल अछि। लगैत अछि एना जे कामदेव संसार जीतिकऽ अयलाह तकर ई विजय-पताका होथि। हिनके रूपक दर्शन करबाक लेल इन्द्र सहस्राक्ष भेलाह, ब्रह्मा चतुर्मुख भेलाह तथा कृष्ण हिनके आलिङ्गन करबाक हेतु चतुर्भुज बनलाह।

एकर बाद सखीवर्णन प्रकरणमे सखीक नखशिख सौंदर्यक भव्य वर्णन पाओल जाइछ,–'पूर्णिमा चाँद अमृत पूरल अइसन मुह। श्वेत पंकज काँ दल भ्रमर वयिसल अइसन आँषि। कामदेव नगर अइसन शरीर। निष्कलङ्क चान्द अइसन मुह। कन्दल खञ्जीर अइसन लोचन आदि।' सखी वर्णनामे क्रमशः श्यामा, चित्रणी, मोहिनी ओ भद्रा जातिक सखीक रूप सौंदर्यकेँ विविध उपमानसँ समृद्ध कऽ उद्भासित कयल गेल अछि।

सखी वर्णनाक अनन्तर नायिका हास्यवर्णना अछि। नायिकाक हास्य कुमुद, कुन्द, कदम्ब, काल, भास, कैलास, कर्पूर ओ पीयूषक कान्ति पसार सन अछि। पुनः ई हास्य क्षीर सागरक दक्षिणानिलसँ संचालित तरंगक लहरि सन, अमृत सरोवरक तरङ्गक सहोदर सन, शरत्पूर्णिमाक चन्द्रमाक ज्योत्स्नासन, सद्यःप्रकाशित कमल-कोषक प्रसारित शोभासन, कन्दर्पक दर्प प्रकाश सन,.... अछि। स्वेद, स्तम्भ,रोमांच... आदि जे आठो भाव अछि तकर भण्डार थिक ई हास्य। नायिकाक ई हास्य मानू मोहनता, प्रकाशिता.... आदि रस जगबैत तीनू लोककेँ वशीभूत करैछ।

तेसर कल्लोलमे 'स्थानवर्णना' अछि। एहिमे स्थानक शुद्ध पाठ आस्थान छैक, जकर अर्थ राजसभा होइछ। राजसभा भूपाल, मण्डलीक, सामन्त, सेनापति... आदि अनेक लोकसँ मण्डित अछि आ हुनकालोकनिक बीचमे सर्वगुणसम्पन्न राजा सिंहासनपर विराजमान छथि। ओहिठाम अनेक राष्ट्रक शिष्ट, अनेक वणिक-पुत्र सेहो बैसल छथि। ई राजसभा अनेक राजोपजीवक लोकनिसँ भूषित अछि।

राजदरबारक वर्णनक बाद स्नानगृहक वर्णन अछि। ओतऽ स्नानक सामग्री, स्नानक विधि आदिक क्रमबद्ध वर्णन अछि। स्नानोपरांत राजा पूजाक हेतु मांदिरमे जाइत छथि। ओतऽ पूजाक विविध सामग्री ओरिआयल रहैछ। पूजाक उपरान्त भोजन एवं पान खयबाक वर्णन अछि। तकर बाद शयनगृहक मनोरम वर्णन अछि।

इन्द्रभवन सदृश झकझक करैत एकटा चित्रशाला। एहिमे हाथीदाँतक पौआ, माणिकक पासि, मरकतक सिरमा, सोनाक तकथा....आदिसँ युक्त साढ़े तीन हाथ लाम आ अढ़ाय हाथ एक गोट शय्या ओछाओल अछि। ओहिपर चारि गोट कम्बल, पाँच दोलाइ... आदि सामग्री छैक। एकटा चन्द्रमण्डल ऊपरमे टाङल छैक...। लगमे कामोद्दीपक वस्तु सभ राखल छैक। सेज लगमे कलशी, एकटा झाड़ी... राखल अछि। प्रतिष्ठित,

आप्त, कुलक्रमागत, विश्वसनीय, गोआर, कोइरी, कुरमी, धोबी आदि दसटा पहरेदार नियुक्त अछि। दू गोट नौआ पयर जाँति रहल अछि। दू गोट परिचारिका पान, कर्पूर लऽ हाथमे धरैत अछि। नायक योगनिद्रामे शयन करैत छथि। तदुपरान्त प्रभात, मध्याह्न, रात्रि, अंधकार, चन्द्रमा तथा मेघ वर्णना अछि।

ज्योतिरीश्वरक अंधकारवर्णना बहुत काव्यात्मक छनि। यथा,–" पाताल अइसन दु:प्रवेश, स्त्रीक चरित्र अइसन दुर्लक्ष्य, कालिन्दीक कल्लोल आइसन मांसल.... एवम्बिध अतिव्यापक, दु:संचर,... शुचिभेद अंधकार।" ई अंधकार अभिसारिकाक संचार, चोरक व्यापार ... आदि गुणसँ विशिष्ट दशम द्रव्यथिक।

चतुर्थ कल्लोल ऋतुवर्णना कहबैत अछि। कविपरम्परानुकूले षटऋतुक एहिठाम विस्तृत विवरण अछि। एहिमे वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरत, हेमन्त तथा शिशिर एहि छबो ऋतुक वर्णन अछि। ऋतुवर्णना शीर्षक रहितहुँ एहि कल्लोलक अंतर्गत कतोक अन्य विषयक समावेश कयल गेल अछि, यथा: चतु:षष्टिकला वर्णना, षोड्श महादान वर्णना, रत्नवर्णना, उपमणिवर्णना, वस्त्रवर्णना, देशीय वस्त्रवर्णना, निर्भूषण वस्त्रवर्णना, नेतवर्णना, अभिषेक वर्णना, वस्त्रगृहवर्णना, ज्योतिर्विद वर्णना, द्यूतवर्णना, वेश्यावर्णना, कुट्टनी वर्णना एवं कामावस्था वर्णना।

चतु:षष्टिकला वर्णनामे चौसठि गोट कला, जे भारतीय सौंदर्यशास्त्रमे प्रसिद्ध अछि, तकर नाम गनाओल गेल अछि। संगहि षोडश महादान, अष्टादश प्रकारक रत्न, वत्तीस प्रकारक उपमणि, तीस प्रकारक वस्त्र, बीस प्रकारक देशी वस्त्र, तेरह प्रकारक निरभूषण वस्त्र तथा चौदह प्रकारक नेत वस्त्रक वर्णन अछि। एकर अतिरिक्त विभिन्न प्रकारक वस्त्रगृहक वर्णन, ज्योतिर्विद वर्णन, द्यूतवर्णन, वेश्यावर्णन एवं कुट्टनी आदि प्रकरण अछि।

एहि कल्लोलक अन्तमे कामावस्था वर्णना अछि। ई कामशास्त्रक पैघ विद्वान् छलाह। तकर साक्ष्य हुनक रचित 'पञ्चसायक', 'रङ्गशेखर' तथा 'रतिरहस्य' थिक। एहिठाम हुनक अभीष्ट छनि कामशास्त्रसँ सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दावली प्रस्तुत करब। एहिमे दस कामदशा, कामदेवक पाँच गोट वाण, आठ सात्विक दशा, चारि प्रकारक कोमलालिङ्गन, सात प्रकारक कठिनालिङ्गन, दस प्रकारक चुम्बन, दसटा चुम्बन स्थान, पाँच प्रकारक नख विन्यास, पाँच प्रकारक दशन विन्यास, तीन प्रकारक केशाकर्षण, चारि प्रकारक सामान्य सुरत, सोलह प्रकारक आन सुरत (जाहिमे तेरह गोट नाम गनाओल गेल अछि), आठ प्रकारक पुरुषायित आन बन्ध, छओ प्रकारक नायिका-सुरत-शिक्षा तथा पाँच प्रकारक सुरत चेष्टाक नाम कहल गेल अछि। एहि सभक निर्वहनसँ नायक-नायिका विगतकांक्षा होइत छथि।

पाँचम कल्लोलक शीर्षक थिक प्रयाण वर्णना आर्थात् राजाक विजय-यात्रा। एहि

कल्लोलक अन्तर्गत आखेट, वन उपवन, सरोवर, पोखरि, पर्वत एवं ऋष्याश्रमक वर्णन अछि ।

राजाक विजय यात्रा क्रममे छत्तीस प्रकारक राजपूतकुल, विभिन्न प्रकारक घोड़ा एवं हाथीक वर्णन अछि । प्रयानक वर्णनक पश्चात् आखेट वर्णनाक प्रसंगमे शिकारक विशद वर्णन ज्योतिरीश्वर कयने छथि । आठ प्रकारक हाथी, चौबीस प्रकारक घोड़ा, आठ प्रकारक महिसा तथा दस प्रकारक कुकूरक लालन-पालन एवं शिक्षण सम्बन्धी तत्कालीन व्यवस्थाक सम्यक् चित्रण अछि । शिकारमे सैनिक समुदायक प्रस्थान कयलपर धूरा ओ गर्दसँ भरल रास्तासभ पदाघातसँ पंकमय भऽ गेल अछि । एकर अतिरिक्त वनक भीषणता, सघनता तथा रमणीयताक मनोरम चित्रण अछि । ओहि भयानक जंगलमे कोच, किरात, कोल्ह, भिल, षस, पुलिंद, सबर, छैरंग, म्लेच्छ, गोष्ठ, वोट, नेट, पहलिया, पोध, दोनबार सागर एवं बांतर आदि जातिक लोकक निवास छैक । उपवनक प्रसंगमे नाना प्रकारक फल-फूल, कृत्रिम निर्झर, भाँति-भाँतिक गाछ-वृक्ष एवं पक्षीक नाम गनाओल गेल अछि ।

सरोवरक वर्णनमे सर्वप्रथम ओकर विशेषता एवं विलक्षणताक वर्णन अछि । ई–" शरतचन्द्र अइसन निर्मल; बौद्धपक्ष अइसन आपात भीषण; उदयनक सिद्धान्त अइसन प्रसन्न; योगीक चित्त अइसन सौम्य; हरिश्चन्द्रक त्याग अइसन अगाध ।" सरोवर वर्णनाक बादमे अछि पोखरा वर्णना । एतहु प्रारंभमे ओकर विशेषताक वर्णन अछि, जेना "महाजल ह्रद अइसन प्रसन्न; कालिदासक कविता अइसन मनोहर; रामक यश अइसन निर्म्मल, बालिक त्याग अइसन अगाध ।" पोखरि कादो, काँकर, डोका.... सेमारसँ झाँपल अछि तथा एकर तट आम, चानन, श्रीफल, अशोक, अगरु वृक्ष सभसँ अलंकृत अछि तथा "सर्व्वगुण संपूर्ण' अछि ।

पर्वतक वर्णनक क्रममे पर्वतीय लता, पादप, जीव-जन्तु, यक्ष, किन्नर, व्याध एवं विद्याधर आदिक नाम आयल अछि । ई पर्वत दुर्ग आ गहन अछि, संगहि कमनीय सेहो अछि । एहि प्रकारेँ एकर भीषणता ओ रमणीयता दूनू देखबा योग्य अछि ।

अंतमे ऋष्याश्रमक वर्णना अछि । आश्रम आक, पलास शमी,... आदि आठो यज्ञवृक्षसँ आच्छादित अछि । कंद, मूल, फल आदि यज्ञक सामग्रीसँ परिपूर्ण अछि । जओ, गोधूम,....आदि सप्तधान्यसँ संयुक्त अछि । ई आश्रम विशेष प्रकारसँ निर्मित कुटीसँ भव्य अछि । एतय श्रद्धाक पुञ्ज अइसन, अग्निक सहोदर अइसन, संतोषक रासि अइसन, लोभक कृतांत अइसन, परमहंस दशापन्न एक महामुनि छथि । ऋष्याश्रममे अनेक मुनिकुमार रहैत छथि । ओलोकनि मुनिक सेवामे संलग्न रहैत छथि, शांति-पाठ करैत रहैत छथि तथा यम, नियम आ प्राणायामक संग सामवेदक गान सेहो करैत छथि ।

छठम कल्लोलक नाम थिक 'भाटवर्णना', मुदा एकर अतिरिक्त एहिमे आओरो कतोक प्रकारक वर्णन समाविष्ट अछि,– जेना मल्लयुद्ध वर्णना, विद्यावन्त वर्णना, नृत्य

वर्णना, पात्रनृत्यवर्णना, प्रेरणानृत्य वर्णना एवं वीणा वर्णना। ई कल्लोल नाच-गांन एवं संगीत कलासँ सम्बन्धित अछि।

मल्लयुद्ध वर्णनामे दू गोट मल्लक कुश्तीक सम्बन्धमे दाव-पेंचक विशद वर्णन अछि। विद्यावंत वर्णनामे विद्यावंतक विशद ओ विलक्षण चित्रांकन अछि। विद्यावंतक संग दू गोट चित्रणी नायिका राजसभामे प्रवेश करैत छथि। एहि गायिका लोकनिक वर्णनक्रममे राग, श्रुति, सात प्रकारक गायन दोष आदिक चर्चा अछि। संगीतक वर्णनक उपरान्त नृत्यक प्रसंग अबैत अछि। नृत्यकेँ तीन वर्ग–नृत्यवर्णना, पात्रन्तनृत्य वर्णना तथा प्रेरणनृत्यवर्णनामे विभाजित कयल गेल अछि। एकर अतिरिक्त सभ प्रकारक नृत्यक भाव-भंगिमाक वर्णन पाओल जाइछ। एहिमे दस प्रकारक मुरजि, बारह प्रकारक मुरज, वाद्य, ताल, रास, व्यभिचारी एवं सात्विक भावक वर्णन अछि।

पात्रनृत्यवर्णनामे स्त्रीनृत्यक वर्णन छैक। एकर पात्र छथि प्रसन्नमुखी, कुटिल भउँह, निर्मल सीमन्त, प्रचुर केश....कन्दलित तारुण्य... सर्वकला कुल लता जाति नायिका। प्रेरणानृत्यवर्णनमे पुरुष नृत्यक विवरण अछि। तरुण प्रौढ़... विभूति मलने, घँघरा तथा जांघिया पहिरने। फूलसँ विभूषित पुरुष नर्त्तकक रंगमंचपर प्रवेश भेल।

अन्तमे वीणावर्णनामे वीणाक भेदक नाम गनाओल गेल अछि। सत्ताइस प्रभेदमे मात्र पचीसटा पुरैत अछि।

सातम कल्लोलक शीर्षक थिक–'श्मशान वर्णन'। एहि प्रकरणमे आठ भैरव, आठ शक्ति, चौदह योगिनी, बारह बेताल तथा अनेक कापालिक आदिक वर्णन अछि। श्मशान वर्णनाक संग मरुस्थल, तीर्थ, नदी, ऋषि एवं पर्वत आदिक सांगोपांग वर्णन अछि। एकर अतिरिक्त चौरासी नाथपंथी सिद्ध, दशावतार, शिवक अष्टमूर्ति, नवग्रह, आठ वसु, एगारह रुद्र, दस विश्वदेव, चौदह मनु, बारह साध्य, उनचास पवन, बारह आदित्य, आठ दिग्गज, अठारह पतिव्रता रामायणक सात काण्ड, महाभारतक अठारह पर्व, आठ दिक्पाल, दस उपपुराण, सोलह पुराण, अठारह स्मृति तथा अंतमे आगमक वर्णनक संग ई अध्याय समाप्त होइत अछि।

आठम कल्लोलक कोनो शीर्षक नहि देल गेल अछि। एकरा अंतर्गत कतोक वर्णना अछि, जेना– राजपुत्रकुलवर्णना, छत्तीस दण्डायुध वर्णना, देशवर्णना, वाहनवर्णना, राज्यवर्णना, विवाह वर्णना, द्वादश पुत्र वर्णना, अष्टनायिका वर्णना, वणिकपुत्रवर्णना तथा पुनत्मोजन वर्णना।

एहिमे सोमवंश, सूर्यवंश प्रभृति बहत्तरि गोट राजपुत्र कहल गेल अछि। मुदा एहि ठाम गनलापर चौंतीसेटा पुरैत अछि। छत्तीस प्रकारक शास्त्रास्त्रक नामक उपरान्त देशक वर्णनक प्रसंग अछि, जाहिमे केवल तीन गोट देशक नाम देल गेल अछि–मगध, मुलतान

ओ मालवक। तकर बाद अकारण वैद्यक वर्णन आबि जाइत अछि। तदुपरांत जहाजक वर्णन (वहित्रवर्णना) ओ विविध देशक स्त्रीक वर्णन अछि।

राज्यवर्णनामे राज्यक नहि, अंतःपुरक वर्णन अछि। विवाह वर्णनामे वैवाहिक विधिक उल्लेख अछि। मिथिलामे प्रचलित लाबा छीटब, पाथरपर चढ़ब, अग्नि-प्रदक्षिणा ओ सप्तपदी आदि विधिक उल्लेख अछि। आठ प्रकारक विवाहमे ई प्राजापत्य विधिसँ सम्पन्न भेल छल। सोनसँ सिन्दुरदान तथा आभूषण सहित घोघट देबाक उल्लेख सेहो कयल गेल अछि।

तदुपरान्त द्वादश पुत्रक वर्णनमे बारह पुत्रक नाम गनाओल गेल अछि। अष्ट नायिकाक वर्णनमे आठ गोटक बदलामे नौ नायिकाक वर्णन अछि। एतऽ नायिकासँ अप्सराक ज्ञान करबाक थिक। वणिकपुत्र वर्णनामे वणिक पुत्रक विशेषतापर प्रकाश देल गेल छैक। 'चौर वर्णन' एक रोचक प्रसंग थिक। एहिमे उपमाक आश्रयसँ चोरक विभिन्न प्रवृत्तिक निरूपण अछि। चोर थिक " नट अइसन नाना रूपकर्ता, दुर्ज्जनं अइसन परमर्म्मघातक, वेश्या अइसन परअनुग्राहक, राक्षस अइसन रात्रिञ्चरशील, आपद अइसन दुःखदायक, पाखण्ड अइसन परलोक निस्पृह, पतङ्ग अइसन आततायी, मूर्षदरिद्र अइसन लोभी, विद्युत अइसन दुष्ट, नष्टकाम अइसन चकित दृष्टि, सर्प्प अइसन वक्रगति, चाण्डाल अइसन निर्द्दय, सलभ अइसन उपेक्षित मृत्यु... एवम्बिध सर्वगुण सम्पूर्ण।"

तकर बाद दुर्ग, नाव, वैद्य आ बोहित (जहाजक बेड़ा) क वर्णनक प्रसंग अबैत अछि। अंतमे भोजनक मनोरंजक वर्णनक संग ग्रन्थक समाप्ति होइछ। भोजनक वर्णनमे रातुक भोजनक वर्णन अछि। भोजनमे मिथिलाक प्रसिद्ध ओ लोकप्रिय चूड़ा-दही भोजनक विषयमे ज्योतिरीश्वर लिखलनि अछि। भोजन कयनिहार नायक छथि। ज्योतिरीश्वर सदिखन नायक सँ कोनो राजाक अर्थ करैत बूझि पड़ैत छथि। एहि ठाम नायक रत्नमण्डित खड़ाओंपर सुन्दर सुवर्ण घटित रत्न रचित ताम्रपात्रमे राखल कर्पूरसँ सुवासित जलसँ पयर धोइत छथि तथा नीपल-पोतल ठाँवक ऊपर एक पीढ़ीपर बसैत छथि। तकरा बाद हुनका समक्ष कर्प्पूरमञ्जरी, क्षीरोदक, लोहुरी प्रभृति धानक अगहनमे कूटल, बटेरक नहसन मेहीं, सूगाक पाँखिसन, तेतरिक पातसन आकारक गमकैत चूड़ा आनल गेलनि। सोनक कटोरामे दूधसँ भिजाओल चूड़ा पर सुन्दरि दही परसलनि। ओ दही ओहि दूधक छलैक जे तेरिया (तीन खुट्टा अर्थात् दू बिआनक) महीस.... जे एक दिन लागय तँ दू दिन नहि, एहन बकैनि, तीन काँठ (खट्टा दू गोट बच्चा, एक अपने), बारह खुर, तकरा एकटा वृद्ध गोप दुहने छल आ साढ़े बारह वर्षक कन्या तकरा लेबारी खड़क आँचमे औँटलक। ओहि दूध कें एक एहन सुन्दरी ऊँच उखरि पर पौरलक जकरा पाछू कामदेव टोकारा दैत छथिन एवं जे भावभाव विवर्जित अछि। पौरैत देरी ओहि दूधमे एगारह आंगुर बरड़ी पड़ि गेलैक।

ओ दही शरत्पूर्णिमाक चन्द्रमासन छल, स्वादमे अमृतकेँ जितने छल आ देखबामे पवित्र छल। सुन्दरी चूड़ापर दही परसलनि। अपन पल्लवप्राय करकमल द्वारा सोनक सीपसँ तरासिकऽ शंखक आकारमे जे दही कटलनि से चन्द्रकला सदृश शोभायमान छल, कटलापर कम्पायमान भऽ गेल, मुदा पात्रमे दितहि स्थिर भऽ गेल। नायक पंचग्रास कयलनि। तकर बाद मुंगबा, लड़िबी, सरुआरी, मधुकुपी, माठ, फेना,तिलबा प्रभृति मिठाइ ओ पकमान देल गेलनि। नायक दूध पीबि चुरु लेलनि। खांड (चीनी) सँ हाथ सुखौलनि अञ्चओलनि। खड़िका कयलनि। तकर बाद हुनका तेरह गुणसँ संयुक्त पाँच प्रकारक फल सहित चानीक सराइमे पान देल गेलनि। "नायकेँ पान लेल, मुखशुद्धि उद्यमल।"

अंतमे ई कृति आदर्श ग्रंथक समाप्ति–सूचनाक संग समाप्त होइत अछि। एहि कल्लोलमे वर्णित राजपुत्रकुल, छत्तीस दण्डायुध आदेश एहि तीनूक पश्चात सेहो आदर्श ग्रन्थक समाप्ति कहल गेल अछि। आठम कल्लोलक फराकसँ अस्तित्वक सम्बन्धमे विद्वान लोकनि शंका करैत छथि। कारण, एक तँ आठम कल्लोलक कोनो नामकरण नहि अछि, दोसर एहि कल्लोलमे वर्णित विषय सभक उल्लेख अन्यान्य कल्लोल सबहिमे भेटैत अछि। एहि सम्बन्धमे डॉ. शैलेन्द्र मोहन झाक मत विचारणीय अछि। हुनक कहब छनि जे एहि (आठम) कल्लोलमे वर्णित राजपुत्रकुल, छत्तीस-दण्डायुध एवं देश–ई सभ सातम कल्लोलक अंशीभूत थिक जतऽ अन्यान्य परिगणात्मक वर्णना अछि। ओ कहैत छथि–"इएह बात विवाह, द्वादश पुत्र, अष्टनायिका दुर्ग, नौका एवं बोहित विषयक प्रसंगमे कहल जा सकैत अछि। पुनः चौर वर्णना, वणिकपुत्र वर्णना ओ वैद्य वर्णना चारिम कल्लोलक अंश बुझि पड़ैत अछि जतऽ एंहि प्रकारक अन्य वर्णनासभ अछि। तहिना राज्यवर्णना मूलतः तृतीय कल्लोलमे रहल हैत जतऽ आस्थान ओ राज्यसम्पर्कित आन-आन वर्णना अछि।"[1]

एक गोट तथ्य बहुत स्पष्ट अछि जे संपूर्ण ग्रंथक वर्णन-शृंखलाक केन्द्रमे राजा छथि आ वर्णरत्नाकर मूलतः एक राजनीतिशास्त्रक ग्रंथ थिक। ज्योतिरीश्वरक समयमे मिथिलामे राजतंत्र छलैक। ओ मिथिलाक प्रभुत्वसम्पन्न कर्नाट राजवंशक अन्तिम राजाक आश्रित छलाह तथा राजतंत्रक तामझाम, राजाक दैनन्दिन क्रिया-कलाप, राजदरबारक शोभा, अंतःपुरक सौन्दर्य, राजनर्तकी, गाणिका एवं अन्य सुन्दरीक पसारल मनमोहक वातावरण, राज्यवैद्य, राजा द्वारा आखेट, राजाक प्रयाण एवं विजयाभियानसँ पूर्ण परिचित छलाह। प्राचीन ओ मध्यकालीन भारतक राजनीतिक चिंतक लोकनि–याज्ञवल्क्यसँ लऽ वाचस्पतिमिश्र द्वितीय धरि, मिथिलाक स्मृतिकार लोकनि राजतंत्र ओ राजाक विषयमे जे किछु लिखलनि तकर एक स्पष्ट झलक एहि कृतिमे भेटैत अछि।

१. ज्योतिरीश्वर, मैथिली अकादमी, पटना; पृ. ४८

एकर गद्य तेहन ललितगर अछि जे काव्यात्मक शैलीक एक विशिष्ट नमूना कहल जा सकैछ। ज्योतिरीश्वर अपनाकेँ कविशेखराचार्य कहैत छथि, ताहूसँ ई सिद्ध होइत अछि जे हुनक ई ग्रंथ काव्यकृति थिकनि। ई आगूक कविलोकनिक लेल विभिन्न विषयपर लिखबाक लेल एक कोशक कार्य कयने होयत। काञ्चीनाथझा 'किरण' एकरा काव्यग्रंथ मानैत छथि आ हुनक 'शोधप्रबन्ध'क नामे थिकनि 'वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन'। ओ लिखैत छथि जे'' वर्णरत्नाकरक अर्थ थिक चित्ररत्नाकर, सौन्दर्यरत्नाकर तथा गीत-विषय-विन्यास रत्नाकर।''[1] परवर्ती कवि लोकनिक रचनामे हुनक प्रभाव अवश्य पड़ल होयत। हुनक पश्चात् आ विद्यापतिसँ पूर्व जे सय वर्षक अवधि बीतल ताहि बीच कोनो कवि भेलाह अथवा नहि से तँ कहब कठिन अछि, मुदा विद्यापतिपर तँ हुनक प्रभाव स्पष्ट अछि। कीर्तिलताक बहुत ठामक वर्णन वर्णरत्नाकरसँ प्रभावित अछि। किरणजीक कथन यथार्थ छनि जे विद्यापति वर्णरत्नाकरक अर्थालंकारसँ प्रभावित भेलाह तँ गोविन्द दास एकर शब्दालंकारक झंकारसँ।[2]

---

१. वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन; पृ. २०.
२. तत्रैव; पृ. ३०६

वर्णरत्नाकरक ऐतिहासिक मूल्यांकन

मिथिलामे ज्योतिरीश्वरक प्रादुर्भाव एहन संकट कालमे भेलनि, जखन मुसलमान आक्रमणकारी सम्पूर्ण उत्तर भारतमे प्रवेश कऽ चुकल छल तथा मिथिलाक सीमापर हुलकी दऽ रहल छल। मिथिलाक कर्णाटवंशीय अन्तिम राजा हरसिंहदेव अपन शौर्य एवं राजनीतिक सूझ-बूझसँ मुसलमानी सत्ताकेँ अपन राज्यसीमासँ दूर हँटौने छलाह। मुसलमानक प्रभाव मगध आ बंगाल धरि दृढ़ भऽ गेल छलैक। मिथिला दिल्ली बंगालक मार्गसँ हँटल छल। मगध ठीक ओही मार्ग पर पड़ैत छल। अतएव प्रथम आक्रमण ओतहि भेलैक। गंगा, गण्डक आदि नदीसभ सेहो बहुत समय धरि बाहरी आक्रमणसँ मिथिलाक रक्षा करबामे सहायक भेलैक। मिथिला ताबत काल धरि मुसलमानक बदलामे बौद्धकेँ अपन शत्रु मानैत छल। बौद्धक प्रति ब्राह्मणक जे रुख छलैक, ताहिसँ ज्ञात होइत अछि जे हिन्दू एवं बौद्धमे कटुता ओहि समय धरि विद्यमान छल, यथार्थ बौद्ध विश्वविद्यालय नालन्दा एवं विक्रमशिलाक विध्वंस ज्योतिरीश्वरसँ एक सय वर्ष पूर्व भऽ चुकल छल। ज्योतिरीश्वर बौद्ध पक्षकेँ 'आपात भीषण' आ बौद्ध विरोधी उदयनाचार्यक सिद्धान्तकेँ 'प्रसन्न' कहलनि अछि।

समाज

वर्णरत्नाकरक समयमे समाज सामंती छल। मिथिलाक लोक कट्टर सनातनी तथा रूढ़िवादी विचारक छल। चौदहम शताब्दीक प्रारम्भ मिथिलाक सामाजिक संरचनामे एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन अनलक। ई सामाजिक स्वरूपकेँ झिकझोड़ि देलकैक। मिथिलामे राजा हरसिंहक द्वारा पञ्जीप्रथाक आरम्भसँ एतऽ एक नव प्रकारक सामाजिक व्यवस्था जन्म लेलकैक। मैथिल समाजमे रक्तक शुद्धताकेँ बचयबाक हेतु एहि प्रथाकेँ आरंभ कयल गेल छल। एहिसँ आन जातिक तँ कथे नहि, जे ब्राह्मण सेहो चारि गोट वर्गमे विभाजित भय गेल :.(१) श्रोत्रिय (२) योग्य (३) पञ्जीबद्ध आ (४) जयबार। नीचाँवला ऊपरवलाक ओतऽ वैवाहिक सम्बन्ध करबाक प्रयास करय लागल। कोनो पञ्जीबद्ध परिवार अपनासँ

नीचाँ रहनिहार जयबारक ओतऽ वैवाहिक सम्बन्ध नहि करऽ चाहैत छल। ई कम अधिक रूपमे आइयो धरि चलि रहल अछि।

ई प्रथा समाजमे एक नवीन वर्गक जन्म देलक, जकरा 'पञ्जीकार' तथा 'घटक' कहल जाइत छैक। पंजीकार वंशावलीक रेकार्ड रखैत छल आ ओकरा निरन्तर आगू बढयबाक कार्य करैत छल। कोनो वैवाहिक सम्बन्ध बिना पञ्जीकारक 'सिद्धान्त' सँ संभव नहि छल। दोसर दिस 'घटक' दू परिवारमे वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करबाक कार्यमे ठीकेदार अथवा 'विचौलिया'क कार्य करैत छल।

मिथिलामे जाति-प्रथा अपन उच्चतम शिखरपर छल। राजा ओ सामंत लोकनि छोट जाति अथवा आर्थिक रूपेँ कमजोर वर्गक लोकसँ बेगारी करबैत छल। यद्यपि ई जाति-व्यवस्था बहुत किछु श्रम-विभाजनपर आधारित छल आ समाजमे सभ वर्गक लोक शांतिपूर्वक अपन जीवन बितबैत छल। उपभोक्तावादक भूत ताबत समाजमे नहि आयल छल। लोक सादा जीवन बितबैत छल। मुसलमनी आक्रमणक आशंकासँ मिथिलामे स्त्रीगणक बीच पर्दा-प्रथा दृढ़ भऽ गेलैक। स्त्री शिक्षा बन्द छलैक। बाल-विवाह आ ओकर स्वाभाविक परिणामतः कमे अवस्थामे विधवा बनबाक भयावह स्थिति विद्यमान छलैक।

राजाक अंतःपुरमे ओकर विलासी जीवनक लेल अधिक संख्यामे युवती अथवा गणिकाकेँ राखल जाइत छलैक। समाजमे वेश्या ओ कुट्टनीक बाहुल्य छल। छोट आ साधारण वर्गक लोकक बीच जे 'प्रहसन' अथवा नाटकक मंचन होइत छल, ताहिमे अश्लीलताक एहन प्रस्तुतीकरण होइत छल जकरा आधुनिक कालक 'ब्लूफिल्म' प्रायः टक्कर नहि लऽ सकत। ज्योतिरीश्वरक 'धूर्तसमागम' मे "मदन-मन्दिर क्षौर", "सुरत-क्रिया", आँचर पकड़ब ओ 'चुम्बन' आदिक जे उल्लेख अछि, से एकर दृष्टान्त थिक। मिथिलाक प्रसिद्ध इतिहासकार श्याम नारायण सिंहक अनुसार 'धूर्तसमागम'क मंचन नेपालमे राजा हरसिंहदेवक मनारंजनार्थ कयल गेल। एहि प्रकारक 'प्रहसन' ओ 'नाटक'क राजाक महल आ समाजमे कमजोर वर्गक बीच दूनू ठाम मंचन होइत छल।

स्त्रीगणक स्थिति साधारणतया समाजमे बहुत हीन छलैक। शूद्र ओ स्त्रीकेँ एके समान बुझल जाइत छलैक। मुसलमानी आक्रमणक आशंका आ परिवेशमे समाजमे मनु तथा अन्य मिथिलाक स्मृतिकारक विधिक अनुसार स्त्रीगणकेँ कोनो स्वतंत्रता नहि देल जाइत छलैक। ओकरा समाज ओ परिवारमे आदरक दृष्टिसँ नहि देखल जाइत छलैक। ओ मात्र घरक भीतर रहि विलास आ सहवासक वस्तु बूझल जाइत छल।

ज्योतिरीश्वर स्त्रीक मधुर एवं कटु दुहू रूप वर्णन कयलनि अछि। एहि वर्णनमे विलास एवं विरक्तिक समन्वय अछि। नायिका, सखी, वेश्या आदिक चित्रण विलास भावक तथा श्मशान, अंधकार आदिसँ स्त्रीक तुलना विरक्तिभावक द्योतक थिक। एक दिस प्रशंसा 'पूर्णिमा चाँद अमृतपूरल अइसन मुँह, पारिजात पल्लव अइसन हाथ तथा पद्म अइसन चरण' कहि कयल गेल छैक, तँ दोसर दिस श्मशानकेँ "स्त्री चरित्र अइसन

दारुण' तथा अंधकारकेँ 'स्त्रीक चरित्र अइसन दर्लक्ष्य' सेहो कहल गेलैक अछि।

वेश्याक प्रथा खुलिकऽ स्थापित छल। वेश्याकेँ ज्योतिरीश्वर "निर्ल्लज्ज, आचारहीन, निर्गति निराश्रय, ... धनार्थे प्रेम, लोभार्थे विनय"... " वेश्या अइसन परअनुग्राहक" आदि कहलनि अछि। वेश्याकेँ समाजमे निकृष्ट बूझल जाइत छलैक, लोक घृणा क़रैत छलैक, मुदा ओहि समयक सामंती व्यवस्थाक ओ एक अभिन्न अंग बनि गेल छल। यदि राजा समाजक शीर्षपर बैसल आ भगवानक प्रतिनिधि बनल अपन अंतःपुरमे विलासितापूर्ण जीवन वितबैत छल, तँ ओकर देखा-देखी साधारण वर्गक लोक यदि वेश्यालयमे जाकऽ स्वच्छन्दरूपेँ अपन कामवासनाकेँ मेटबैत छल तँ कोन आश्चर्य !

दोसर दिस सतीप्रथा सेहो स्थापित छलैक। मध्यकालीन मिथिलामे ई प्रथा बहुत व्यापक रूपेँ प्रचलित छल। ज्योतिरीश्वरक बादक समयमे राजा भवसिंहक दू गोट पत्नी वागमती नदीक कछेरमे सती भऽ गेलथिन। ईहो कहल जाइत अछि जे शिवसिंहक अंतर्धानक बाद बारह वर्ष पुरलापर लखिमा सेहो सती भऽ गेलीह।

डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीक अनुसारेँ ज्योतिरीश्वरक मिथिलामे 'शांति' आ 'खुशी' छलैक। 'शांति' तँ छल, मुदा वर्णरत्नाकरक तत्कालीन समाजमे एहन कोनो बात नहि भेटैत अछि, जाहिसँ ई आभास होयत जे लोक सुखी छल। ओहि समयमे राजा छलाह तथा बाँकी सभ हुनक प्रजा छल। समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आ म्लेच्छमे बँटल छल। एक दिस विलास-वैभव छलैक दोसर अकिंचनता। एक दिस महलमे अपूर्व सुन्दरी लोकनिक राजाक भोगक सामग्रीक लेल जमघट छल जे असंख्य परिचारिकासँ घेरल रहैत छलीह, दोसर दिस सड़क दरिद्र भूखल भिखमंगा आ लज्जाहीन वेश्यासँ भरल रहैत छल।

समाजमे ब्राह्मण सभसँ उच्च मानल जाइत छल तथा ओकरा अधिक सुविधा प्राप्त छलैक। समाजमे अछूत सभसँ निचला सिढ़ीपर छल, जकर छाँह लगलासँ ब्राह्मण अपवित्र भऽ जाइत छल। ओ वर्ग खास-खास राजमार्गपर चलबासँ सेहो वंचित छल। ज्योतिरीश्वर एहि 'मंदजातीय' मे– "तापसि, तेलि तिवर... धाङ्गल, धाकल, धानुक, धोआर, धुनिया, धलिकार, डोंव ... चमार, गोआर'... साव, पटविआ... नागर प्रभृतिक गणना कयलनि अछि।

जतऽधरि मैथिल समाजमे धार्मिक विश्वासक प्रश्न अछि, ब्राह्मण एतऽ प्राचीन कालहिसँ रूढ़िवादी आ कट्टरपंथी रहल अछि। एतएव बौद्धधर्मक प्रभावसँ ओ स्वयं तँ बचले रहल, जे सर्म्पूण देशसँ ओकर प्रभावकेँ निरस्त कऽ देबामे सेहो सफल भेल। एहि सम्बन्धमे उदयनाचार्यक अवदान समस्त भारतमे उल्लेखनीय अछि। मुदा मिथिलाक धार्मिक जीवनमे अन्य प्रकारक प्रभाव प्रचुर मात्रामे भेलैक। ओना ज्योतिरीश्वरकालीन मिथिला पञ्चदेवोपासक छल, जे ज्ञान, धर्म एवं भक्तिक समन्वयपर आधारित छल, परञ्च बौद्धधर्मक वज्रयानक प्रभावक कारणे तांत्रिक पद्धतिकेँ प्रश्रय भेटलैक। फलस्वरूप शिव-

भक्तिक प्रधानता प्रतिष्ठत भेलैक । 'भागवत्' धर्मक लोकप्रियता सेहो क्रमशः बढ़ैत गेलैक, जकर प्रचारमे जयदेवक 'गीतगोविन्द' पर्याप्त रूपेँ सहायक भेलैक । रागात्मिकता वृत्तिक स्वाभाविकता तथा सरलता एवं सुगमताक करणे वैष्णव धर्म, खासकऽ कृष्ण-भक्ति सेहो जन-जीवनकेँ अत्यधिक प्रभावित कयलकैक । इएह कारण छैक जे वर्णरत्नाकरक परवर्ती कालमे विद्यापति आ उमापति राधा-कृष्ण सँ सम्बन्धित अनेक उत्कृष्ट पदक रचना कयलनि, जकर लोकप्रियता समस्त उत्तर भारतमे पसरि गेलैक ।

सिद्ध तथा नाथ सम्प्रदायसँ सेहो मिथिलाक जन-जीवन प्रचुर मात्रामे प्रभावित भऽ गेल छल । नाथपंथी लोकनि अपन समुदायमे योग एवं शिवतत्त्वक समावेश कऽ ओकरा जनताक बीच आकर्षक बनौलनि । बादमे एहि सम्प्रदायसँ कतोक भ्रष्टाचार सेहो जनताक बीच जन्म लेलक । योग ओ मंत्रक आश्रय लेनिहार पाखंडी साधु, महंथ आ योगीक संख्यामे वृद्धि भेलैक आ समाजमे अंधविश्वास दृढ़ होइत गेलैक । मंत्र आ योगसँ उत्पन्न चमत्कारक बलपर एक एहन घृणित सम्प्रदाय बनल, जे तंत्रक नामपर पञ्चमकारक प्रचार करऽ लागल तथा स्त्री-पुरुष दूनूकेँ मद्य आ मैथुनक पूर्ण स्वतंत्रता देलक । एकर प्रभाव वैष्णक धर्म धरिमे भेलैक आ 'परकीयवाद' एवं 'सरसता'क समावेश भेलैक । ज्योतिरीश्वरक प्रहसन 'धूर्तसमागम' सँ तत्कालीन समाजमे पसरल भ्रष्टाचार, पञ्चमकारक उन्मुक भोग, मठ द्वारा धर्म तथा नैतिकताक दुर्दशा तथा समाजक कर्णधारलोकनिक धूर्तताक पूर्ण परिचय भेटैत अछि ।

राजनीति एवं शासन

'वर्णरत्नाकर' हमरा बुझने प्रधानतया एक राजनीतिक ग्रंथ थिक । ज्योतिरीश्वर मिथिलाक अपन पूर्ववर्ती स्मृतिकार एवं निबन्धकार लोकनिक पदचिह्नपर चलैत अपन एहि अमूल्य ग्रंथमे राजनीति एवं प्रशासनसँ सम्बन्धित विषयपर लिखलनि । ई उल्लेखनीय अछि जे ज्योतिरीश्वरक परवर्ती स्मृतिकारो लोकनि एहि विषयपर लिखैत रहलाह, जाहिमे चण्डेश्वर 'राजनीतिरत्नाकर'क कारणेँ सभसँ अधिक लोकप्रिय भेलाह । ज्योतिरीश्वरक पूर्ववर्ती स्मृतिकारमे एहि सम्बन्धमे श्रीकर आ लक्ष्मीधरक नाम प्रमुख अछि । श्रीकर अपन 'श्रीकरनिबंध' आ लक्ष्मीधर अपन विस्तृत स्मृतिग्रंथ 'कृत्यकल्पतरु'क अंतर्गत 'राजधर्मकाण्ड' 'व्यवहारकांड'मे राजनीति एवं विधि व्यावस्था पर लिखने छथि । ज्योतिरीश्वरक परवर्ती स्मृतिकारमे चण्डेश्वरक अतिरिक्त विद्यापति आ द्वितीय वाचस्पतिक नाम एहि सम्बन्धमे प्रधान अछि । विद्यापतिक 'पुरुष-परीक्षा' तथा 'विभागसार' आ द्वितीय वाचस्पतिक 'विवादचिंतामणि' तथा 'व्यवहारचिंतामणि' राजनीति एवं विधिक लेल भारत-प्रसिद्ध ग्रंथ थिक ।

ज्योतिरीश्वर अपन 'वर्णरत्नाकर'मे राजा तथा तत्कालीन राज्य-व्यवस्थापर बहुत किछु लिखलनि अछि। विगत छौ सय वर्ष पूर्व मिथिलाक राजनीतिक पद्वति लेल हुनक विचारक प्रामाणिकतापर भरोस कयल जा सकैत अछि। चंडेश्वर ज्योतिश्वरक दू पीढ़ीक बाद भेलाह। ई दूनू गोटे एक दोसरक सम्पूरक मानल जा सकैत छथि।

वर्णरत्नाकरमे राजनीति पर जे किछु लिखल गेल अछि, ताहि लेल फराकसँ सुसंबद्ध रूपेँ कोनो अध्याय अथवा 'कल्लोल' नहि अछि। मुदा एहि दृष्टिएँ दोसर, तेसर, चारिम, पाँचम तथा बिना शीर्षकक अंतिम किंवा आठम 'कल्लोल' महत्त्वपूर्ण अछि। ई तँ पूर्वे कहल जा चुकल अछि जे लेखकक सम्पूर्ण राजनीतिक विचार एवं व्यवस्था राजाकेँ केन्द्रमे राखि चक्कर कटैत अछि। ओहि समयमे आन ठाम राजतंत्र छल आ तेँ कोनो राजनीतिक चिंतक वा लेखकक लेल ई स्वाभाविके छलैक जे ओ राजाकेँ केन्द्रमे राखि प्रशासन आ राजक अन्य व्यवस्थाक सम्बन्धमे लिखय। मिथिला अथवा भारतक ओहि समयक अन्यो राजनीतिपर लिखनिहार लोकनि विशेषतया राजाक गुण, विशेषता, अभिषेक, कर्तव्य, दैनन्दिन कार्य, दुर्ग, सेना, सेवक, राज्यक उच्च एवं कनिष्ठ अधिकारी; शत्रु ओ मित्र, अभियान, आखेट, अंतःपुर, राजसभा आदि पर ध्यान केन्द्रित कयलनि अछि। कौटिल्य एही सभमेसँ सात गोट विषयकेँ चुनि अपन 'अर्थशास्त्र' नामक राजनीतिक ग्रंथमे राज्यक सप्ताङ्ग सिद्धान्तक व्याख्या प्रस्तुत कयलनि अछि। मिथिलाक याज्ञवल्क्य सँ वाचस्पतिमिश्र द्वितीय धरि समस्त स्मृतिकार ओ निबन्धकारक राज्य ओ राजनीतिसम्बन्धी कृतिक यदि मंथन कयल जायत तँ एहि तथ्यक उद्‌घाटन स्वतः भऽ जायत।

वर्णरत्नाकरक दोसरे अध्यायसँ राजाक उल्लेख प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ आरम्भ भऽ जाइत अछि। एतऽ नायकक नामसँ राजाक गुणक वर्णन कयल गेल अछि। ओहि वर्णनक क्रममे ज्योतिरीश्वर भारतक दू गोट सर्वश्रेष्ठ राजवंश,– सूर्यवंश तथा चन्द्रवंशक उल्लेख कयलनि अछि। राजाकेँ धनुर्विद्यामे निष्णात ओ छौ गुणसँ सम्पन्न होयबाक चाही। ज्योतिरीश्वरक राजा अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, उशिद्ध, शिद्ध, प्राकाम्य, कामवसायिता, आठो महासिद्धिमे पारंगत छथि। संगहि ओ अञ्जन, गुटिका, पादुका, रस, परस, खड्ड, वेताल, यक्षिणी आठ उपसिद्धिसँ समन्वित छथि। राजा स्तम्भ, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, मारन, विद्वेषकरण, प्रक्षोभन, आकर्षण एहि आठ प्रकारक प्राकृतिसिद्धिमे कुशल छथि। एतेक गुणक वर्णनक माध्यमसँ ज्योतिरीश्वर कहऽ चाहैत छथि जे राजामे ई सब गुण होयबाक चाही।

राजा छत्तीस प्रकारक आयुध चलयबामे सिद्धहस्त छथि। आयुध दू प्रकारक होइत छल। हाथसँ पकड़िकऽ चलबऽवला केँ पालायुध तथा हाथसँ फेकिकऽ चलबऽवलाकेँ दण्डायुध कहल जाइत छलैक। ओकरे एखन शस्त्र तथा अस्त्र कहल जाइत छैक। मुदा ज्योतिरीश्वर जखन आयुधक नाम गनबऽ लगैत छथि तँ ओहिमे मात्र बारहे गोट पुरैत छनि।

एकर अतिरिक्त राजाकेँ चौरासी प्रकारक राजोचित शिष्टाचार एवं राज्य व्यवस्थाक ज्ञान होयबाक चाही। एहिमे हाथी ओ घोड़ाक प्रशिक्षण एवं नियंत्रण, किला अथवा दुर्गमे प्रवेश करब, अपन आदेशक रक्षा, शक्तिशाली ओ दुर्बलक ज्ञान, राजकोषक वृद्धि, विभिन्न जाति तथा संकट अयलापर निर्णय तथा शासनकला शामिल अछि। राजाकेँ स्त्रीक प्रकृति, औषधि एवं ज्योतिष विज्ञान तथा प्रतीक शास्त्रक ज्ञाता होयबाक चाही। राजाकेँ क्षमा, दान, मित्रता एवं अन्य मानवीय गुणसँ सम्पन्न होयबाक चाही। एकर अतिरिक्त राजाक कर्मचारी एवं अधिकारीगण सेहो उपनायकक तेरह गोट गुणसँ सम्पन्न रहथु

"सात्विक. सुशील. सत्यसंघ. सज्जन. ।
सुजाति. शास्त्रज्ञ. सेवक. सुवेष. शुद्ध.
सुन्दर. सानुबंध, सुवचन. साचरि. सकरुण.
तेरहो जे उपनायक गुणतेँ सम्पूर्ण शिष्ट देषु ।।"

एहि सूचीक अनुसार राजाक शिष्ट (कर्मचारी) लोकनिकेँ सात्विक, नेक, सत्यवादी, शास्त्रज्ञ, प्रजासेवक, सुन्दर, मधुरभाषी, नैतिक रूपसँ चरित्रवान तथा दयालु होयबाक चाही। ई उल्लेखनीय अछि जे ज्योतिरीश्वरक समयमे राज्यक पदाधिकारी लोकनिमे जतेक गुणक वर्णन कयल गेल अछि, ओतबे गुणक प्रयोजन आधुनिक जनतांत्रिक राज्य अपना पदाधिकारीमे देखऽ चाहैत अछि। यदि आजुक पदाधिकारीमे छौ सय वर्ष पूर्वक राज्यपदाधिकारीक गुण होइतैक तँ भारतक स्थितिमे कायाकल्प भऽ गेल रहितैक।

ज्योतिरीश्वरक राजाकेँ वीर, निर्णय करबामे ओ शस्त्र चलयबामे निपुण आ विद्वान राजनेताक संग-संग मस्तिष्क एवं हृदय मानवीय मूल्यसँ भरल रहबाक चाही। ओ राजनीति तथा प्रशासनमे केवल साध्येटा पर ध्यान नहि देलनि अछि, अपितु राजनीति एवं राज्य-व्यवस्थाकेँ नैतिक आधार सेहो प्रदान करऽ चाहैत छथि। राजनीतिमे साध्य एवं साधन दूनूकेँ समान रूपेँ नैतिक मूल्यपर आधारित होयबाक चाही।

राजा अथवा नायकक गुणक वर्णनक पछाति प्रशासनिक अधिकारी एवं कर्मचारीक दीर्घ सूचीक संग राजदरबारक दृश्य उपस्थित कयल गेल अछि। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीक कथन छनि जे राजदरबारी तथा पदाधिकारी लोकनिक जतेक टा सूची ज्योतिरीश्वर प्रस्तुत कयलनि अछि, ततेक टा सूची हुनक समकालीन केओ दोसर राजनीतिक चिंतक नहि देलनि अछि। आ ई हुनक एक महत्त्वपूर्ण अवदान मानल जयबाक चाही।

वर्णरत्नाकरमे 'स्थान' राज्यसभा अथवा राजदरबारक अर्थमे आयल अछि, यद्यपि स्थानक बदलमे 'आस्थान' पाठ होयबाक चही। राजदरबारक वर्णनक पश्चात् लेखक राजाक दैनिक जीवन ओ कार्यक सम्बन्धमे विस्तारसँ लिखलनि अछि तथा ओही संदर्भमे ओ राज्यक विभिन्न पदाधिकारी एवं कर्मचारीक चर्चा कयलनि अछि।

ज्योतिरीश्वरक आश्रयदाता राजा हरसिंह एक सम्राट सदृश छलाह। ओ अपन राज-

अधिकारी तथा व्यक्तिगत सेवक लोकनि, जेना सेनापति, राजकुमार, नगरपति ओ निजी आदेपालक अतिरिक्त अपन अधीनस्थ राजा, जागीरदार एवं सरदार सभहिं सँ सेहो घेरल रहैत छलाह। राजाक अपन एहि आंतरिक मंडलीक अतिरिक्त दोसर राज्यक राजदूत आ अन्य शिष्ट अधिकारी सेहो राजदरबारमे उपस्थित रहैत छल। ज्योतिरीश्वर एहि सम्बन्धमे नेपाल, गौड़, भूटान, कामरूप, उत्कल, अयोध्या तथा मगध सदृश मिथिलाक सीमावर्ती राज्येटाक नाम नहि गनवैत छथि, अपितु ओ कर्णाटक, कोंकन, सिंघल, मालव, गुर्जर, महाराष्ट्र एवं अन्य दूरस्थ राज्यक नामक उल्लेख सेहो करैत छथि। ई वर्णन तत्कालीन मिथिलाक सम्प्रभुतासम्पन्न राजनीतिक स्थितिपर पर्याप्त प्रकाश दैत अछि, जखन कर्णाटवंशीय अन्तिम राजा हरसिंह मिथिलामे राज करैत छलाह।

ओहि समयक पदाधिकारी.एवं कर्मचरीक सूची कतबो दीर्घ किएक ने बनाओल जाय, मुदा ओहि समयमे राजसँ सम्बन्धित ओहि प्रकारक सभक नाम ओहिमे सम्मिलित नहि कयल जा सकैछ। राजकुमार, विशिष्टपुत्र, अश्ववाहक, गजवाहक, चारण, प्रशस्ति गायक,– जेलोकनि राजकोषपर आधारित छलाह,– तनिकालोकनिसँ राज-दरबार भरल रहैत छल। एकर अतिरिक्त ओतऽ उच्च पदाधिकारी जेना सेनापति, सान्धिविग्रहिक, प्रधानमंत्री, अन्य मंत्रीगण, शांतिकर्णिक, राजपुरोहित, निबन्धकार, अंगरक्षक, गुप्तचर, नर्तक एवं गायक सेहो रहैत छलाह। 'वर्णरत्नाकर'क द्वितीय कल्लोलक स्थानवर्णना सम्पूर्ण रूपसँ राजसभा ओ राज्यसँ सम्बन्धित अनगिनत पदाधिकारी एवं कर्मचारीक नामसँ भरल अछि। ओहि सब नामक अर्थ अद्यावधि नहि फरिछायल अछि। से जहिया भऽ जायत, तहिया वर्णरत्नाकर भारतक मध्यकालीन राजनीतिक स्थितिपर प्रचुर प्रकाश देबामे सक्षम भऽ सकत आ ओ ज्योतिरीश्वरक एक पैघ अवदान मानल जायत।

एही क्रममे ज्योतिरीश्वर अपना राजाकेँ युधिष्ठिर सन सत्यवादी, परशुराम सन वीर, लङ्केश्वर सन आज्ञा देनिहार, दुर्योधन सन अहंकारी, गोपाल सन विलासी, समुद्र सन मर्यादापूर्ण, सुमेरु सन गुरुतर, महादेव सन ऐश्वर्यशाली, एहि सब गुणसँ सम्पन्न मानैत छथि। ओ परोक्ष रूपसँ कहऽ चाहैत छथि जे राजाकेँ एहि सभ गुणसँ पूर्ण होयबाक छनि।

राजसभासँ उठलाक उपरान्त राजाकेँ स्नान, भोजन, विश्राम, मनोरजंन तथा पूजा-उपासनाक लेल अंतःपुरमे जाय पड़ैत छनि। एहि ठाम राजाक सम्पूर्ण दिनक क्रिया-कलापक, रातिमे शयनागार चल जयबा काल तकक एक सजीव चित्रण प्रस्तुत अछि। ओहि समयमे राज्यशास्त्रपर लिखनिहार राजाक वैयक्तिक जीवनक विषयपर सेहो विचार करैत छलाह। राजा राष्ट्रक प्रतीक तथा मुखिया होइत अछि। हुनक वैयक्तिक जीवनं तथा कार्य सेहो सार्वजनिक महत्त्वक होइत छैक। राजाकेँ अपन व्यक्तिगत जीवन एहि प्रकारेँ बितयबाक चाही जाहिसँ ओ सर्वदा नीक स्वास्थ्य आ नैतिक वातावरणसँ सम्पन्न होथि। आजुक ई धारणा जे राजपुरुष अथवा राजनेताक व्यक्तिगत जीवन तथा सार्वजनिक

जीवनमे कोनो सम्बन्ध नहि छैक, मध्यकालीन भारतीय चिंतक लोकनिकेँ ग्राह्य नहि छलनि ।

डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीक ई कथन यथार्थ छनि जे– "एतऽ राजदरबार तथा ओकर चारू कातक परिवेशक जे चित्र उपस्थित करैत अछि से आइने अकबरीक स्मरण करबैत अछि, जे सूची तथा विस्तृत वर्णन सहित एक 'गजेटियर'क रूपमे पूर्णतया भिन्न उद्देश्यसँ लिखल गेल छल ।"[1]

चारिम अध्यायमे राजाक राज्याभिषेकक वर्णन अछि । हुनका समय धरि मिथिला एक स्वतंत्र एवं संप्रभुतासम्पन्न राज्य छल, आ तेँ नवीन राजाक सिंहासनारूढ़ होयबाक समयमे राज्याभिषेकक परिपाटी चलि रहल छल । बादमे चंडेश्वरक समयमे मिथिलाक स्वतंत्रता मुसलमानी आक्रमणसँ बहुत दूर धरि नष्ट भऽ गेल छलैक । चण्डेश्वर अपन ग्रंथ 'राजनीतिरत्नाकर' मे एहि शाही-संस्कारक चर्चा नहि कयलनि अछि । मुदा ज्योतिरीश्वर राज्याभिषेक-समारोहक विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करैत छथि ।

मनोनीत राजाकेँ पँचमहला राजमहलमे राजसिंहासनपर बैसाओल जाइत छनि । हुनका पाँच गोट पवित्र नदीक जलसँ स्नान कराओल जाइत छनि तथा पाँच प्रकारक राजसी वस्त्र पहिराओल जाइत छनि । तकर बाद ओ दण्डक प्रतीक रूपमे एक सोनाक छड़ी धारण करैत छथि । विभिन्न प्रकारक मांगलिक वस्तु हुनका समक्ष राखल जाइत छनि । तदुपरान्त राजा शासनक कार्य प्रारंभ करैत छथि । राज्याभिषेक समारोह पाँच प्रकारक ध्वनि तथा स्वरपाठ, वैदिक मंत्रक ध्वनि, शंखनाद, मांगलिक एवं विजय-घोषाणक संग आयोजित होइत छल ।

पाँचम कल्लोलमे राजाक प्रयाणक वर्णन अछि । ओहि समयमे सीमावर्ती राज्यपर आक्रमणक लेल प्रयाण तथा विभिन्न प्रकारक सेना आ ओकर लस्करक संग विजय-घोषणा राजाक प्रमुख कर्तव्य बूझल जाइत छल । जे राजा अपन राज्यक सीमाकेँ बढ़बऽमे आ पड़ोसी राज्यकेँ अपन अधीन करबामे सक्षम होइत छलाह, तनिके गुणगान करैत कवि लोकनि पोथी एवं विरुदावलीक रचना करैत छलाह ।

ज्योतिरीश्वर अपन राजाक अभियानक क्रममे विभिन्न प्रकारक घोड़ा आ हाथीक वर्णन प्रस्तुत कयलनि अछि । ओहि समय राज्यक सैन्यबलमे अश्व एक प्रमुख स्थान रखैत छल आ ओकर विभाजन विभिन्न देश अथवा क्षेत्र जतऽ ओकर जन्म अवं पोषण होइत छलैक, ताहि आधारपर कयल जाइत छलैक । अनेक प्रकारक अश्वचिकित्सक अश्वमनोवैज्ञानिक आ प्रशिक्षक होइत छल । हाथीमे सभसँ अधिक महत्त्व श्वेत हाथीकेँ छलैक, जाहिपर सेनाक प्रधान जवान लोकनि आरूढ़ होइत छल । छत्तीस प्रकारक राज-पुत्र विभिन्न प्रकारक अस्त्र-शस्त्र चलयबामे निपुण छल । ज्योतिरीश्वर हाथीक वर्णन करैत

१. वर्णरत्नाकर; भूमिका; पृ. ३३

कहैत छथि जे हाथी सभ मानू काजरक पहाड़ अछि। ग्रह (पकड़ब), मोक्ष (छोड़ब) लय (नुकायब) आ लक्ष (लक्षित होयब) ओहि चारू काजमे ओ कुशल अछि तथा शत्रुक राज्यकेँ जितबामे समर्थ अछि।

अंतिम अध्यायमे पुनः राजनीतिपर चर्चा अछि। एहि ठाम एक उप-अध्यायमे 'राज्यवर्णना' नाम देल गेल अछि। मुदा एहिसँ पूर्व एहि ठाम 'राज्यपुत्रवर्णना' 'दण्डायुध वर्णना' आ 'देशवर्णना' अछि, जकर राजनीतिसँ प्रत्यक्ष कोनो सम्बन्ध नहि फरिछाओल जा सकैछ। एहिठाम 'राज्यवर्णना' शीर्षकक अंतर्गत लेखक द्वारा देल गेल वर्णन सब गड़बड़ा जकाँ गेल अछि। संदर्भसँ हटिकऽ विवाहवर्णन, बारह प्रकारक पुत्रक तथा आठ प्रकारक नायिका आदिक वर्णनमे ओ ओझरा गेल छथि। ओकर बाद ओ राज्यव्यवस्था सम्बन्धी विषयपर अबैत छथि तथा दुर्गक वर्णन प्रस्तुत करैत छथि। दुर्ग राज्यक एक महत्त्वपूर्ण अंग मानल जाइत छल। दुर्ग बैँत, काठ आ बाँससँ घेरल अछि। एक ऊँच गोलाकार स्थानपर बनल अछि तथा चारूभर नालासँ घेरल अछि। दुर्गमे अस्त्र-शस्त्र प्रचुर मात्रामे राखल छैक, जाहिमे नाना प्रकारक वाण ओ अनेक प्रकारक धनुष शामिल अछि। शाही दुर्गमे रहनिहार योद्धासभ धुनर्विद्यामे निपुण अछि आ निरंतर आक्रमणक अवस्थामे तैयार रहैत अछि। ओहि समयमे अथवा ओहिसँ पहिनहुँ कोनो राज्यक सामर्थ्य ओकर राजधानीमे स्थित दुर्ग अथवा किलापर निर्भर करैत छल। जाबत धरि बाहरी आक्रमणकारी दुर्गपर विजय प्राप्त नहि करैत, ताबतधरि ओ राज्य पराजित नहि मानल जाइत छल। तेँ राजा लोकनि दुर्गकेँ पूर्ण दृढ़ आ सुरक्षित बनाकऽ रखैत छलाह। बादमे हिन्दू आ मुगल राजा लोकनि किला बनयबामे विख्यात भेलाह। जयुपर राजाक आमेर किला आ आगराक लालकिला एवं फतहपुरसिकरीक किला सभकेँ एहि क्रममे राखल जासकैछ। कौटिल्य 'दुर्ग'केँ राज्यक सात गोट अंगमे एक अंग माननलनि अछि। अन्य लेखक जकाँ ज्योतिरीश्वर विभिन्न प्रकारक दुर्गक वर्णन नहि कयलनि अछि।

एहि प्रकारेँ कहि सकैत छी जे एक राजनीतिक लेखकक रूपमे ज्योतिरीश्वरक दू विषयमे मुख्य अवदान मानल जा सकैत अछि–

(क) राजाक राज्याभिषेक (ख) प्रशासनिक संगठन।

(क) राजाक राज्याभिषेक

भारतवर्षमे वैदिक कालसँ शाही अनुष्ठान सम्बन्धित किछु संस्कार आयोजित होइत रहल अछि। प्रत्येक राजा समय एवं परिस्थितिक परिवर्तित स्थितिकेँ देखैत ओहिमे संशोधन परिवर्द्धन करैत रहलाह। ज्योतिरीश्वर एहि सम्बन्धी विस्तृत वर्णन प्रस्तुत कयलनि अछि, जाहि संदर्भमे ऊपर चर्चा कऽ चुकल छी।

राज्याभिषेकक बाद इतिहासमे केवल राजसूय यज्ञक आयोजनक चर्चा भेटैत अछि। एहि अनुष्ठानक तीन हिस्सा होइत छल– प्रारंभिक यज्ञ, अभिषेक तथा अंतमे अभिषेकक बादक आयोजन। एहि तीनूमे अभिषेक सभसँ महत्त्वपूर्ण मानल जाइत छल। मध्यकालीन मिथिलामे राज्याभिषेक ओही तरहेँ आयोजित होइत छल, जेना कि वर्णरत्नाकरमे ओकर सांगोपांग वर्णन प्रस्तुत अछि।

(ख) प्रशासनिक संगठन

राजदरबार अथवा राजसभाक वर्णनक क्रममे ज्योतिरीश्वर अपन समयक प्रशासनिक अधिकारी एवं राज्यकर्मचरीक विभिन्न श्रेणीक सम्बन्धमे विवरण ओ विवेचन प्रस्तुत कयलनि अछि। ई स्पष्ट अछि जे हिनका द्वारा उल्लिखित विभिन्न प्रकारक राज्याधिकारी मिथिलाक कर्णाट एवं ओइनवार वंशक शासनकालमे कर्यरत छल।

ओहि समयमे राजा आ सम्राट (भूपाल)क संग हुनक प्रशासनिक संगठनकेँ सुदृढ़ करबाक लेल विभिन्न कोटिक अधिकारी वर्गक व्यवस्था छल। एहि सम्बन्धमे ओ संभवतः अपन पूर्ववर्ती एवं परवर्ती राज्यशासकवेत्ता लोकनिसँ विशिष्ट छलाह। राज्य 'मंडल'मे विभाजित कयल जाइत छल; तथा प्रत्येक मंडल एक मांडलिकक देखरेखमे रहैत छल। ओहि समयक मांडलिककेँ वर्तमान कालक प्रमंडलाधिकारी आयुक्त (कमीश्नर) सँ तुलना कयल जा सकैछ। राज्यक दोसर प्रभागकेँ 'पुर' कहल जाइत छलैक आ ओ क्षेत्र 'पुरपति' नामक अधिकारीक द्वारा शासित होइत छल। 'पुरपति'क तुलना कौटिल्यक 'नगरपति' सँ कयल जा सकैछ।

मनोनीत राजा कुमार कहबैत छलाह। सामंत छोट जागीरक सरदार होइत छल आ ओ स्वामिभक्त होइत छल। सभ सामंतक एक समान स्थान ओ महत्त्व नहि रहैत छल। सेनापति सेनाक नायक होइत छल। लिच्छवी गणतंत्रमे सेनाक मुखियाक चुनाव होइत छल। ओहि गणतंत्रक सेनापति सिंह इतिहासप्रसिद्ध अछि। ओकरा केन्द्रमे राखि महापण्डित राहुल एक प्रख्यात उपन्यास लिखने छथि। मध्यकालीन मिथिलामे सेनापतिक नियुक्ति कोना होइत छलैक, ताहिपर ज्योतिरीश्वर चुप रहि गेल छथि। मुदा एतबा स्पष्ट अछि जे मिथिलाक मध्यकालीन राजतंत्रक शासनमे सेनापतिक निर्वाचन नहिये होइत रहल होयत।

राजाक व्यक्तिगत कर्मचारी आ सहायक 'सेवक' अथवा 'परिचारक' कहबैत छल। राजाक शाही वस्त्रक देखरेख कयनिहारकेँ 'वैशिक' कहल जाइत छल। राजा, हुनक सम्बन्धी एवं राज्यक अन्य श्रेष्ठजनक पुत्रकेँ 'राजपुत्र' कहल जाइत छल। राज्यक उच्चपदासीन, राजाक दरबारी किंवा मोसाहेबकेँ 'राजशिष्ट' कहल जाइत छल। एकरा लोकनिक तुलना राजदूतसँ कयल जा सकैछ। ई बूझि पड़ैछ जे तत्कालीन राजा लोकनिक

राजसभा अन्य देश सबहिक राजदूत अथवा प्रतिनिधि सभसँ भरल रहैत छल होयत। ज्योतिरीश्वर 'राजोपजीविक'क एक दीर्घ सूची प्रस्तुत कयने छथि। एहि वर्गमे राजाक ओ निकट सम्बन्धी सभ अबैछ, जे पूर्णतया रोजकोषपर अपन जीवन-निर्वाह करैत छल।

राज्यक सभसँ महत्त्वपूर्ण अधिकारी मंत्री होइत छल, जे प्रायः गृहविभाग सम्हारैत छल। शुक्र कहैत छथि जे 'मंत्री तु नीति कौशलः, पण्डितो धर्म तन्ववित'। 'धर्माधिकरणिक' संभवतः विधिमंत्री होइत छल। शुक्र सेहो एहि नामक पदाधिकारीकेँ विधिवेत्ता मानैत छथि, जे राजाकेँ प्राचीन ओ अर्वाचीन विधिपर विचार-विमर्श कऽ एहन विधि अपनयबाक परामर्श देबाक कार्य करैछ जाहिसँ एहि लोक एवं परलोक दूनू आनन्ददायक हो। (शुक्रनीति; II ९९-१००)। मुदा प्रो० आनन्द मिश्र आ पं. गोविन्द झाक मत छनि जे उक्त अधिकारी केँ दान, देवालय, इनार, यज्ञ, पूजा-पाठ आदि कार्यक लेल प्रधान अधिकार रहल होयतैक।

'सान्धिविग्रहिक' परराष्ट्र मंत्री होइत छल तथा 'महामत्तक' प्रतिरक्षा मंत्री। 'युवराज' राजाकेँ राजनयिक कार्यमे सहायता करैत छल। 'नायक' सेनाक प्रधानक नाम छल। चन्द्रगुप्त मौर्यक समयमे एहि पदाधिकारी केँ १२०० पण वेतन देल जाइत छलैक। 'प्रतिबलकर्णाध्यक्ष' शत्रु-सेनाक गतिविधि रखनिहार विभागक प्रधान होइत छल। 'स्थानान्तरिक' संभवतः राजाक पर्यटन सम्बन्धी व्यवस्था कयनिहार अधिकारी छल। ई पदवी सभ मैथिल ब्राह्मणक प्राचीन पञ्जी मे प्रसिद्ध अछि। 'शांतिकर्णिक' शांति-व्यवस्था रखबाक कार्य करैत छल। 'राजगुरु' राज्यक भूमिक देखभाल तथा 'राजवल्लभ' अश्वारोही सेनाक व्यवस्थापक छल। उपर्युक्त पदाधिकारीक अतिरिक्त राजा तथा राज्यसँ कोनो प्रकारेँ सम्बधित अधिकारी तथा कर्मचारी निम्नलिखित होइत छल :-

१. नैबन्धिक - रजिष्ट्रार; दस्ताबेज लिखनिहार,
२. अक्षपटलिक - द्यूतगृहक अधिकारी
३. खड्गग्राह - हाथमे खड्ग लेने राजाक निकट रहनिहार सुरक्षा अधिकारी अथवा अंगरक्षक
४. प्रमत्तवार - ओ सुरक्षा अधिकारी जे बताह आ पागलकेँ नियंत्रित करैत छल
५. शयनपाल - राजाक शयन-सज्जाक व्यवस्थापक
६. अङ्गरक्षक - राजाक शरीर रक्षक।
७. अग्रजाणिक - राजाक प्रयाणमे आगाँ-आगाँ चलनिहार सुरक्षा दल
८. सावंत्सर - ज्योतिषी
९. अश्ववाहक - घोड़सबार
१०. दंडपान - दण्डपाल
११. दुर्गपाल - किला अथवा दुर्गक रक्षक

१२. सम्बाहक	-	सन्देशवाहक
१३. हस्तिपक	-	हाथीकेँ धोनिहार
१४. क्रीड़क	-	खेल-कूदमे हिस्सा लेनिहार
१५. कुहक	-	बाजीगर, ऐन्द्रजालिक
१६. प्रणधि	-	गुप्तचर
१७. वंथ	-	भाला रखनिहार
१८. सूपकार	-	भनसिया
१९. सूपकारपति	-	प्रधान भनसिया
२०. प्रसाधक	-	राजाक पोशाक ओ आभूषणक व्यवस्थापक; प्रसाधन-कर्मचारी ।

एकर अतिरिक्त ज्योतिरीश्वर आओरो बहुत रास अधिकारी सभक सूची देने छथि, मुदा ओहिमेसँ अधिकांशक अद्यावधि अर्थ स्पष्ट नहि भऽ सकल अछि। ओ सभ अनुसंधेय अछि। वर्णरत्नाकरक उपर्युक्त वर्णनसँ स्पष्ट अछि जे मध्यकालीन मिथिलाक प्रशासनिक ढाँचा बहुत सुगठित एवं ठोस छल ।

ज्योतिरीश्वर जाहि प्रशासनिक व्यवस्थाक सम्बन्धमे विवरण प्रस्तुत कयलनि अछि से मध्यकालीन मिथिलामे समस्त कर्णाटवंशीय एवं ओइनवारवंशीय राजा लोकनिक शासनकालमे छल। ओतबे नहि, ई व्यवस्था प्राचीन कालक राजतंत्रक आधारपर स्थित छल। संभव थिक जे ओहिमे किछु संशोधन आ परिवर्तन परिस्थितिक अनुसार होइत रहल हो। प्राचीन राजपर आँकुस रखबाक हेतु जे सात व्यक्तिक सामंतवादी परिषद् होइत छल से मध्यकालमे समाप्त भऽ गेल छलैक आ ओकर स्थानपर ज्योतिरीश्वर द्वारा वर्णित एवं परिगणित मंत्रिगण तथा अधिकारीवर्ग आबि गेल छल। राजनीतिक एवं प्रशासनिक दृष्टिकोणसँ वर्णरत्नाकरक अध्ययन बहुत आवश्यक अछि। ओहिलेल ई आवश्यक छैक जे एहि ग्रंथमे विभिन्न 'कल्लोल' मे छिड़िआयल जे राजनीति एवं प्रशासन सँ सम्बन्धित विषयपर वर्णन उपलब्ध अछि तकरा क्रमबद्ध एकत्रित कयल जाय आ ओहिमे प्रयुक्त पारिभाषिक एवं अन्य शब्द सभक अर्थक अनुसंधान कयल जाय तखनहि ज्योतिरीश्वर-कालीन मिथिलाक राज्य-व्यवस्था (Polity) क चित्र स्पष्ट भऽ सकत ।

संस्कृति

वर्णरत्नाकरमे मिथिलाक तत्कालीन जन-जीवनक सांस्कृतिक पक्षक विशिष्ट रूपमे वर्णन कयल गेल अछि। एहि ग्रंथक तुलना सर जार्ज ग्रियर्सनक 'बिहार पीज़ेन्ट लाइफ' सँ कयल जा सकैछ। एहि प्रकारक एक ग्रंथ संस्कृतमे 'मानसोल्लास' भेटैत अछि, जे गायकवाड ओरियन्टल सिरीज, बड़ौदासँ प्रकाशित अछि ।

वर्णरत्नाकरक माध्यमसँ ओहि कालक मिथिलाक सांस्कृतिक क्रिया-कलाप पर यथेष्ट प्रकाश पड़ैत अछि। एतऽ नृत्य, गीत ओः संगीतक वर्णन विस्तारपूर्वक कयल गेल अछि। एहिसँ संगीतक शास्त्रीय अध्ययन ओ अभ्यासपर सेहो स्पष्ट प्रकाश पड़ैत अछि। संभवतः चर्यापदमे जे रागक निर्देश अछि से एकरे पूर्वाभास होयत। एहिमे राग- रागिनीक नामक उल्लेख तथा विवेचन प्रस्तुत अछि , ताहिसँ रागाश्रित संगीत-परम्पराक समर्थन भेटैत अछि। एहिमे रागाश्रित गीत-परम्परापर प्रकाश भेटैत अछि सैह नहि, लोकरंगमंच तथा ओकर नाट्य परम्पराक आभास सेहो भेटैत अछि। डॉ. शैलेन्द्रमोहन झाक कथन छनि जे–'' नृत्य, गीत ओ संगीतक संग-संग ओहिमे जे नेपथ्यक रचना, रंगभूमिक उपस्थापन, नट-नटी तथा पात्रादिक विशद वर्णन कयल गेल अछि से सभटा अभिनयक अंग थिक। ई अभिनय कोन रूपक होइत छल तकर वर्णन थोड़-बहुत विद्यावन्त वर्णनामे प्राप्त होइत अछि।''[१] छठम कल्लोलमे 'विद्यावंत वर्णना' मे एक नृत्यकार राजदरबारमे उपस्थित होइत अछि। ओकर संगमे एक तैलङ्गी तथा एक महाराष्ट्री दुइ गोट नर्तकी सेहो छैक। ओहिमे एक गोटे कारी अछि तँ दोसर गोर। ओ दूनू नर्तकी चारि गोट आँचरसँ युक्त चीर पहिरने अछि। ओकरा संग विद्यावंत शुद्ध, सारङ्ग तथा संकीर्य तीन प्रकारक राग प्रारम्भ कयलक। एहि प्रकरणमे संगीतशास्त्रक पारिभाषिक पदसभ भरल अछि , जेना गमक, मूर्च्छना, ध्रुवक, मण्ड तथा प्रतिमण्ड। नृत्यवर्णनामे रङ्गभूमिक स्थापना, वाजाक पसार, नटीक प्रसाधन तथा नटीक वस्त्र आदिक वर्णन सेहो अछि। मृदङ्गवादक वर्णनमे कहल गेल अछि जे ओ अनुरक्त, बलवान सुवेष तथा सावधान अछि। पाट, मान, गृह तथा यतिक ज्ञाता अछि। ओ अनेक पद्धतिसँ मृदङ्ग बजबैत अछि। एकर बाद 'पात्रनृत्य वर्णना' मे स्त्री नृत्यक विवेचन अछि। नर्तकीक सांगोपांग वर्णन कयल गेल अछि। ओकर मुँह प्रसन्न छैक, ई लता जातिक नायिका थिक। चूड़ी आदि अलंकरणसँ युक्त अछि। अठारह प्रबन्ध नृत्यक बाद रेखानृत्य कयलक।

पुरुषक नृत्यमे 'प्रेरण' अर्थात् पुरुषनर्तक मंचपर अबैत अछि। ओ विभूति लगौने, घघरा तथा जंघिया पहिरने तथा फूलसँ विभूषित तरुण अछि। ई नर्तक चतुरस्र, त्र्यस्र, मिश्र तथा खण्ड एहि चारि प्रकारक तालक ज्ञाता अछि; दक्षिणवर्तिक, चित्र, चित्रतर, अतिचित्रतर आदि छबो मार्गक ज्ञाता अछि। चच्चपुट, चचपुट षटपित्रा पुत्रक, तनुट सम्पात, कङ्काल, कोकिला आदि अनेक ताल जनैत अछि। खण्डसारणि आदि पाँचों अङ्ग प्रदर्शित कऽ नृत्यमे प्रविष्ट भेल। एहि वाद्ययंत्रक वर्णनक क्रममे सत्ताइस प्रकारक वीणाक वर्णन अछि। ओहिमे किछु प्रभेदक नाम अछि विपञ्ची, वल्लकी, चित्रा, घोसुवती ब्रह्मवीणा, पिनाकधरणी, आलाप आदि।

---

१. ज्योतिरीश्वर; मैथिली अकादमी, पृ. ११-१२

बाजा आ वाद्ययंत्रक लेल 'वर्णरत्नाकर'क प्रथम कल्लोल सेहो उल्लेख्य अछि। एहिमे पन्द्रह गोट बाजाक नाम अछि; जेना-डमरू, मजिरा, कठताल, चुटकुल, बाँसी (बंशी) ओ सिंगा। ई सभ बाजा एखनहुँ प्रचलित अछि। एहिठाम लोरिक नाच, लगनी, मएना, बड़ती आदि लोकनृत्यक सम्बन्धमे सेहो नामक वर्णन अछि।

ज्योतिरीश्वरक समयमे मिथिलामे कला खूब उन्नत अवस्थामे छल। वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला आ नृत्य नीक स्थितिमे छल, मुदा ओहि सभमे संगीत सभसँ अधिक लोकप्रिय छल। ओ राजदरबारक संग-संग साधारण जनसमुदायक बीच सेहो प्रिय छल। राजा द्वारा संगीतकेँ बहुत अधिक प्रोत्साहित कयल जाइत छलैक। एतऽ ई कहब प्रासंगिक होयत जे मिथिलामे प्रथम ऐतिहासिक राजा नान्य स्वयं संगीतविद्यामे निष्णात छलाह तथा एतऽ कतोक लोकप्रिय रागसभक विकास कयलनि। सारङ्गदेवक 'संगीतरत्नाकर'सँ प्राप्त सूचनाक आधारपर ई स्पष्ट होइछ जे राजा नान्य संगीतक विख्यात रचनाकार छलाह। भरत-नाट्यशास्त्रक पुष्पिका (Colophon) मे ई स्पष्ट उल्लेख अछि जे नान्य 'स्वरस्वती-हृदयालङ्कार 'क रचयिता छलाह। नान्यक शिलालेख सेहो 'ग्रंथमहार्णव'केँ हुनका द्वारा लिखल जयबाक सम्बन्धमे साक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि। उपर्युक्त ग्रंथ सभ संगीत सम्बन्धी कृति थिक। 'जाति' आ 'राग'क वर्णनामे बहुत एहन नव विषयक उपस्थापन अछि, जकर चर्चा प्रायः भरत आ अभिनवगुप्त सेहो नहि कयने छथि। सभ मिलाकऽ नान्य १६० रागक उल्लेख कयलनि अछि।

नान्य द्वारा मिथिलामे संगीतक जे एक गौरवपूर्ण परम्पराक स्थापना भेलैक, तकर निर्वाह राजा हरसिंह तथा कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर; सिंह भूपाल जगद्धर, जगज्योतिर्म्मल्ल आ तकर बाद रागतरङ्गिणीक लेखक लोचन सन महान संगीतज्ञक द्वारा होइत रहल। एहि संगीतक एक विशिष्ट परिवेश एवं वातावरणमे मिथिलामे प्रारंभिक कालक मैथिलीमे विद्यापति, गोविन्ददास एवं उमापति सन महान गीतकार द्वारा गीतक रचना भेलैक। एकरे परिणाम स्वरूप मिथिलामे कीर्तनियाँ नाटकक परम्पराक विकास सेहो भेलैक। भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक एहि कालक सांस्कृतिक क्रिया-कलापक पैघ अवदान छैक। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. उपेन्द्र ठाकुरक कथन छनि जे;–प्राचीन क्लासिकीय भाषा सबहिक अवनतिक उपरान्त ई सर्वप्रथम सम्पूर्ण पूर्वी भारतमे स्थानीय लोकभाषाकेँ साहित्यिक अभिव्यक्तिक गरिमा प्रदान कयलकैक।''[१]

नान्यकेँ संगीतक मिथिला सम्प्रदाय (Mithila School) क संस्थापक होयबाक गौरव प्राप्त छनि, जे जयदेवक प्रभावसँ एक नवीन शैलीक प्रारंभ कयलनि। राजा हरसिंह संगीतक एक पैघ संरक्षक भेलाह। संगीतपर कतोक ग्रंथक एहि समयमे रचना भेलैक। शुभङ्कर ठाकुरक 'श्रीहस्तमुक्तावली' सेहो संगीतक लेल एक उल्लेखनीय ग्रंथ अछि। लोचन

१. हिस्ट्री ऑफ मिथिला; पृ. ३८२-३८३

अपन कृति 'रागतरङ्गिणी' मे मिथिला संगीतसँ सम्बद्ध अनेक 'राग' एवं 'रागिणी'क उल्लेख कयलनि अछि। आइयो काल्हि मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रमे ई संगीत-परम्परा प्रचलित अछि।

मिथिलाक आलोच्य कालक वास्तुकलामे सभसँ अधिक प्राचीन छल मंदिरक निर्माण, जे विभिन्न राजा लोकनि अपन रुचिक अनुसार करबैत रहलाह। डॉ. स्पूनर (Spooner) एहि मंदिर सभक विषयमे विस्तृत अध्ययन कयलनि अछि तथा ओकरा 'तिरहुत नमूनाक मंदिर' कहलनि अछि।[1] फरग्यूसनक (Fergusson) तर्ककेँ कटैत स्पूनर उत्तरी नमूनाकेँ तिरहुत नमूना कहैत छथि, जाहिमे गर्भगृह, मीनार तथा द्वारमण्ड़प रहैत छलैक। अधिक मंदिरमे गर्भगृहक देवाल आ 'शिखर'क देबालक बीच एक सम्बन्ध रहैत छलैक। एहि प्रकारक मंदिरक देबाल बिना चित्रकारीक सादा रंगक होइत छल तथा ओही प्रकारक अनलंकृत ओकर छत सेहो रहैत छलैक। मंदिरक नकशा चौकोर रहैत छलैक। एहि तरहक कतोक मंदिर मंदिर-निर्माणक वास्तुकला उच्चतम शैलीक संग निर्मित एहि मिथिलाक शैलीक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। प्राचीन मंदिरक भग्नावशेष एखनहुँ देखल जा सकैत अछि। उदाहरणस्वरूप भीठ भगवानपुर, अंधराठाढ़ी, भगीरथपुर, उच्चैठ, बिरपुर (बेगूसराय) अदि स्थानकेँ देखल जा सकैछ। दरभंगाक तिलकेश्वर मंदिर तथा कन्दाहा (सहरसा) क सूर्य मंदिरक एखनहुँ धरि कलात्मक दृष्टिकोणसँ अध्ययन नहि कयल गेलैक अछि। ई दूनू मंदिर मिथिलामे बहुत प्राचीन अछि आ मिथिलाक वास्तुकलाक उत्कृष्ट नमूनाक परिचय दैत अछि।

वास्तुकलाक सम्बन्धमे राजमहल एवं दुर्गक निर्माण सेहो उल्लेखनीय अछि। राजधानी बनयबाक समयमे कोनो स्थानमे राजा लोकनि दुर्ग आ राजप्रासादक निर्माण करबैत छलाह। 'सिमराँओगढ़'क, जे कर्णाट राजा हरसिंहदेवक राजमहल छलनि, भग्नावशेषसँ ओहि कालक वास्तुकलाक परिचय भेटैत अछि। सिमराँओगढ़ किलाक सजीव वर्णन धर्मस्वामी प्रस्तुत कयलनि अछि। मिथिलाक राजधानी सुदृढ़ किलासँ घेरल छल, तकरा परिस्ता, बरनी तथा मुल्ला तकिया सन इतिहासकारो सम्पुष्ट करैत अछि। मिथिलामे गढ़ तथा किला ई बात स्वतः साबित होइत अछि जे एतऽ एहि प्रकारक वास्तुकला अत्यंत विकसित छल। एखनहुँ मिथिलाक प्रत्येक भागमे प्राचीन किलाक भग्नावशेष पाओल जाइछ ओहिमे किछु स्थानक नाम एना अछि – असुरगढ़, अलौलीगढ़, श्रीनगर (मधेपुरा), साहुगढ़, जललगढ़, गरही, नौनागढ़ जयमंगलागढ़, मंगलगढ़, मीठ भगवानपुर, हावीडीह, हरिसिंहपुर, शिवसिंहपुर, बालिराजगढ़ खजौली, बवानगढ़ही, सिमराओगढ़, बिजलगढ़ कापगढ़, एकमा आ अन्य।[2]

आठम कल्लोलक दुर्गवर्णनामे ज्योतिरीश्वर दुर्गक वर्णन प्रस्तुत कयलनि अछि। दुर्ग केहन होइछ ? ओ बेँत, काठ आदिसँ घेरल रहैत अछि तथा वपा, खोल आदिसँ

१. जे. बी. ओ. आर. एस. २-१२१

२. प्रो. राधाकृष्ण चौधरी; मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति, पृ. ३६२

युक्त अछि, एहिमे नाना प्रकारक वाण तथा अनेक प्रकारक धनुष अछि। एहिमे रहनिहार सैनिक सभ आलीढ़, प्रत्यालीढ़ आदि युद्धमुद्रामे रहैत अछि। एहिठाम 'हाथि, घोल, नौका, पदाति' चतुरङ्ग सेना रहैत अछि।

वास्तुकलासँ सम्बन्धित मूर्तिकला सेहो अछि। आलोच्य समयमे मूर्ति-निर्माण मंदिरक निर्माणक संग-संग होइत रहल। मंदिरक निर्माण होयतैक तँ ओहि ले' देवी, देवताक मूर्तिक प्रयोजन पड़बे करतैक। तँ वास्तुकला एवं मूर्तिकलाक विकास मिथिलाक मध्यकालमे संगहि भेलैक। सिमराओंगढ़मे जे किछु मूर्ति प्राप्त भेलैक ओ मूर्तिकलाक उत्कृष्ट नमूनाक प्रमाण उपस्थित करैत अछि। एखन धरि मिथिलाक मूर्तिकलाक सम्बन्धमे कोनो गंभीर अध्ययन-अन्वेषण नहि कयल गेलैक अछि। सभ लोकप्रिय देवी-देवताक मूर्तिक प्राप्ति जखन-तखन होइत रहैत छैक, जे कलाक दृष्टिसँ बहुत महत्त्वपूर्ण बूझल जाइत रहलैक अछि। कारी पाथरक मूर्ति-निर्माणक परम्पराक निर्वाह मैथिल राजा लोकनि करैत रहलाह। नान्यदेवक समयसँ प्रारंभ भऽ ई कला मिथिलामे विकसित होइत रहल। सिमराओंगढ़, हाबीडीह, आसी, भगवानपुर आदि स्थानमे प्राप्त भग्नावशेष एकर साक्ष्य अछि। अंधराठाढ़ीक कमलादित्यक प्रतिमा, बरौनी बरइपुर तथा जयमंगलागढ़क मूर्तिसभ एवं अन्य स्थान सभमे पाओल गेल मूर्ति एहि भूमिक मूर्तिकलाक गौरवकेँ प्रतिष्ठापित करैत अछि। एहि सम्बन्धमे एखनहुँ मिथिलाक माटि तरमे पड़ल कतोक मूर्ति तथा कला एवं वास्तुकलाक अवशेष एवं उत्खननक बाट ताकि रहल अछि। मंदिरोक सम्बन्धमे वर्णरत्नाकरमे उल्लेख भेटैत अछि।

राजमहल, किला, कुल भगवतीक मंदिरक भग्नावशेषसँ स्पष्ट होइछ जे ओकर पाथरक आधारशिला मनमोहक उत्खनित चित्रकारी, सुन्दर ईंटा आदिसँ युक्त छल। वास्तुकलाक सौंदर्यक संग एहि भग्नावशेष सभमे मूर्तिकलाक उत्कृष्ट नमूना सेहो प्राप्त भेल अछि। नेपाल तराइमे उक्त भग्नावशेषमे माटि तरसँ लगभग बीस गोट मूर्ति बहार कयल गेल अछि से पाथरक थिक आ आधुनिक मूर्तिकलाक दृष्टिसँ उच्चकोटिक अछि। शिलापर उन्खनित देवी-देवताक मूर्ति, विष्णु, शिव, आ काली जे अंधराढाढ़ीक मंदिरक देबालपर देखल गेल अछि से एक वैभवशाली मूर्तिकलाक दृष्टांत प्रस्तुत करैत अछि। ज्योतिरीश्वरक काल आ बादोमे पजेबा ओ पाथरपर कलाकृति विकसित छल। भगीरथ उन्खननसँ विभिन्न प्रकारक अलंकृत आ चित्रित पाथरक पैघ-पैघ शिलापट्ट भेटलैक अछि। पानक आकृतिक एक खास ढंगक पजेबा सेहो भेटलैक अछि। किछु पजेबापर तांत्रिक चक्रक नूमना सेहो उपलब्ध भेल छैक।[1]

चित्रकला मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनक एक अभिन्न वस्तु रहल अछि। ई कला प्रधानतया देबाल परक चित्रकारीक रूपमे विकसित होइत रहल। आर्चर साहेब एकरा मैथिल चित्रकलाक नाम देलनि अछि। ई प्रधानतया मिथिलामे मैथिल ब्राह्मण तथा मैथिल

१. डॉ. उपेन्द्र ठाकुर, हिस्ट्री ऑफ मिथिला; पृ. ३८४-३८६

कायस्थ लोकनिक चित्रकला थिक। ई चित्रकला माटिक भीतक अतिरिक्त कागजपर विकसित भेल। माटिक वर्तन, तस्तरी तथा पंखापर सेहो एहि प्रकार चित्र बनाओल जाइत छल, जकर व्यवहार एवं उपयोग विवाह आ उपनयन संस्कारक अवसरपर होइत रहल अछि। एहि प्रकारक चित्रकारी संभवतः अस्थायी होइत छैक, कारण भीत अथवा अन्य उपर्युक्त वस्तुपरहक चित्र स्थायी नहि भऽ सकैछ। इएह कारण अछि जे ओहि कालक चित्रकलाक नूमना हमरा लोकनिकेँ प्राप्त नहि अछि। मुदा एहि कला विकासक एक अविच्छिन्न धारा प्राचीन ओ मध्यकालसँ लऽ आइधरि मिथिलामे वर्तमान अछि। चित्र मेटा जाइत अछि, मुदा ओकर शैली चलि रहल अछि आ आगुओ चलैत रहत।

एक विशिष्ट बात ई अछि जे ई कला मिथिलाक महिला-समाजमे केन्द्रित रहल। एहिमे पुरुष वर्गक कोनो योगदान नाहि रहल अछि। मिथिलामे घर-घर एकर परम्परा एक 'गृह-कला'क रूपमे चलैत रहल अछि। ब्राह्मण, कायस्थ किंवा मिथिलामे रहनिहार सभ वर्गक विभिन्न संस्कारमे एकर प्रयोजन होइत छैक, आ स्त्रीगण लोकनि ओहि कार्यकेँ पूरा करैत छथि। एहि तरहेँ कहि सकैत छी जे मिथिलाक चित्रकला धार्मिक अनुष्ठान तथा पारिवारिक संस्कारसँ जुड़ल अछि। द्विज लोकनिक ओतऽ उपनयन, विवाह तथा धार्मिक अन्य कार्यक अवसरपर एहि चित्रकलाक आवश्यकता होइत छैक तँ अन्य वर्गक ओतऽ विवाहमे एकर कार्य पड़िते छैक। स्त्रीगण लोकनि एहि कलाकृतिक कार्य ओहिना स्वाभाविक रूपसँ करैत रहलीह अछि जेना अंगनाकेँ बहारब आ इनारपर पानि भरबाक लेल जायब।

चित्रकलाक क्षेत्रमे मिथिलाक दू प्रकारक चित्रकलाक अवदान प्रमुख छैक; प्रथम अइपन अथवा अल्पना अथवा 'अरिपण'। ई एक लोकप्रिय लोककला छल। एखनहुँ कोनो मांगलिक अथवा धार्मिक कृति अथवा अनुष्ठान बिना अरिपणसँ नहि भऽ सकैछ। मिथिलाक स्त्रीगण लोकनि आंगनमे, द्वारपर आ अन्य स्थानमे जमीनपर नीप-पोतिकऽ एहि चित्रकलाक उपयोग करैत छथि। अइपन एहि बातक सबूत थिक जे मिथिलामे शक्ति-पंथक प्रधानता रहल तथा तंत्रक विकास सेहो एतऽ भेलैक। प्राचीन पुराण एवं हर्षचरितमे अइपनक संकेत भेटैत अछि। एहिमे अष्टदल अइपन अत्यधिक लोकप्रिय अइपनमे सँ एक थिक। चित्रकलाक लेल वर्णरत्नाकरमे 'विलेपन' शब्दक प्रयोग कयल गेल अछि। मिथिलाक दोसर प्रमुख चित्रकलाकेँ 'कोहबर' कहल जाइत अछि। विद्यापतिक गीतसभमे एहि सम्बन्धमे कतोक बेर संकेत भेटैत अछि। 'कोहबर' ओहि चित्रावलीकेँ कहल जाइत छैक जे नवविवाहित वर-वधुकेँ प्रथम मिलनक लेल निर्धारित कक्षक देबालपर बनाओल जाइत अछि। ओहि कक्षकेँ सेहो आब 'कोहबरघर' कहल जाइत छैक। एहि हेतु निश्चित घरक देबालपर लोक-गाथा आ पौराणिक कथासभपर आधारित चित्रसभ बनाओल जाइत छैक। एहि प्रकारक चित्रकलामे मिथिलाक स्त्रीगण बहुत दक्ष होइत छथि। एहि चित्रकलाक स्वरूप जे ज्योतिरीश्वरकालीन मिथिलामे छल सैह आइयो अछि। शैलीमे कोनो विशेष परिवर्तन नहि भेल अछि।

शिक्षा, साहित्य ओ भाषा

कर्णाट ओ ओइनवार वंशक राजमे संस्कृत शिक्षा चरम उत्कर्षपर छल। ओहि समयमे साहित्य, दर्शन, स्मृति आ निबन्धक रचना एवं संकलन संस्कृतमे अबाध रूपसँ होइत रहल। मुसलमानी आक्रमणक आशंका तथा ओकर सेनाक मिथिलाक भूमिपर आबियो गेलासँ संस्कृत पण्डितलोकनिक रचना करबाक कार्यमे कोनो परिवर्तन नहि अयलनि। स्मृति साहित्यक रचनाक एहि समयमे प्रधानता रहल। मुसलमानी प्रभावसँ सनातन धर्म ओ सामाजिक स्वरूपकेँ बचयबाक लेल आवश्यक बुझल गेलैक जे स्मृतिक रचना कऽ सामाजिक तथा धार्मिक नियमकेँ कठोर बनाओल जाय। चण्डेश्वर आ हुनक परिवारक तथा अन्य उल्लेखनीय विद्वान जे ई कार्य कयलनि से छलाह– श्रीदत्तोपाध्याय, हरिनाथ, इन्द्रपति तथा हुनक शिष्य लक्ष्मीपति[1]।

एहि समयमे व्याकरणक एक गोट प्रसिद्ध सम्प्रदाय (School) पद्मनाभ 'सुपदम' नामसँ प्रारंभ कयलनि। काव्यशास्त्र तथा कामशास्त्रपर सभसँ लोकप्रिय ग्रंथक रचना भानुदत्त मिश्र द्वारा भेल। काव्यशास्त्रक ग्रंथ 'सरस्वती कष्ठाभरण'पर रत्नेश्वर टीका लिखलनि तथा कामशास्त्रपर स्वयं ज्योतिरीश्वर 'पञ्चसायक', 'रङ्गशेखर' तथा 'रतिरहस्य' नामक ग्रंथक रचना कयलनि।

साहित्यिक रचनामे 'नैषध-चरितम्' पर भवदत्तक टीका एखनहुँ रुचिक संग पढ़ल जाइत आछि। 'मृच्छकटिक' नाटकपर पृथ्वीधर आचार्यक टीका साहित्यिक क्षेत्र मे रखनहुँ बहुत लोकप्रिय अछि। कोशपर सेहो एहि समयमे ध्यान देल गेलैक। 'अमरकोश' पर श्रीकराचार्यक टीका संस्कृत साहित्यमे एक रत्न थिक। 'वर्णरत्नाकर' मैथिली साहित्यक अद्यावधि प्राप्त निधिमे सभसँ प्राचीन एवं अमूल्य अछि। बादमे कामेश्वर ठाकुरक राजकालमे साहित्याकाशकेँ जहिना जगद्धर प्रकाशमान कयलनि, तहिना शिवसिंहक मिथिलाकेँ कविकोकिल विद्यापति चमत्कृत कयलनि।

मिथिलामे 'मीमांसा' सेहो बहुत लोकप्रिय रहल। ओकर दू गोट सम्प्रदाय एतऽ विकसित भेल– भट्ट आ प्रभाकर। राजा पद्मसिंहक पत्नी रानी विश्वासदेवीक राजकालमे मीमांसाक अध्ययनक लेल मिथिला उच्चतम शिखरपर आसीन छल। रानी विश्वासदेवी एक गोट विशाल सभा मिथिलाक पण्डितक आयोजित कयने छलीह। कहल जाइत अछि जे ओहिमे चौदह सय संख्यामे केवल मीमांसक आमंत्रित कयल गेल छलाह। एहिठाम न्यायक एक विशेष शाखा– नव्यन्यायक प्रारम्भ गंगेश उपाध्याय अपन अमूल्य ग्रंथ 'तत्त्वचिंतामणि'क रचनासँ कयलनि। एहि शास्त्रकेँ आगाँ विकसित करबाक कार्य वर्धमान, पक्षधर आ अन्य विद्वान लोकनि कयलनि।

---

१. जे. ए. बी. एस., १९१५, पृ. ४१४

एहि तरहेँ मिथिलाक मध्यकालीन समयमे संस्कृत साहित्य, व्याकरण, दर्शन आ कोशक एक गौरवशाली परम्पराक आरंभ भेल छैक। मिथिलाक ई कालखण्ड भारतीय साहित्यिक इतिहासमे 'स्वर्ण' युग छल। एहि समयक एक विशिष्टता ईहो छैक जे संस्कृत साहित्यक संग-संग लोकभाषा साहित्यक विकासक प्रथम प्रभावशाली प्रयास सेहो प्रारंभ होइत छैक। वर्णरत्नाकर लोकभाषाक एक कीर्तिस्तंभ थिक।

'वर्णरत्नाकर' मध्यकालीन समस्त उत्तर भारतक सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्थितिक अध्ययनक लेल तँ उपादेय अछिए, संगहि एहि युगक भाषाक विकासक अध्ययन हेतु सेहो एकर असाधारण महत्त्व छैक। उत्तर भारतक आधुनिक आर्यभाषा सभमे ई प्राचीनतम गद्य-ग्रंथ उपलब्ध अछि। लोक-भाषाक यथार्थ रूप गद्येटामे परिलक्षित होइछ। अतएव भाषावैज्ञानिक अनुसंधानक हेतु ई ग्रंथ वस्तुतः रत्नाकर थिक। मैथिलीभाषा ओ साहित्यक विकासकेँ जनबाक लेल एहि ग्रंथक अध्ययन अत्यंत आवश्यक छैक। ई ग्रंथ एहू तथ्यकेँ उद्घाटित करैत अछि जे जखन अन्य लोकभाषा अपन साहित्यिक अभिव्यक्ति लेल संघर्ष कऽ रहल छल, ताहि समयमे मैथिली साहित्यिक क्षेत्रमे अपन प्रौढ़ताकेँ प्राप्त कऽ चुकल छल। वर्णरत्नाकरमे प्रयुक्त अरबी-फारसी शब्द सभक समावेशसँ ई मानल जा सकैछ जे एहि ग्रंथक रचनाकाल धरि मिथिलामे मुसलमान अपन उपस्थिति नीक जकाँ बना लेने छल।

ज्योतिरीश्वरक कालमे प्रायः राष्ट्रभाषा संस्कृत छल। दर्शन, निबंध, स्मृति, नाटक आदि सभ किछुक रचना संस्कृतमे होइत छल। परञ्च ओहि समयमे लोकभाषा सेहो विकसित भऽ रहल छल। ई लोकभाषा मैथिलीसँ पूर्व प्राकृत, पालि, अपभ्रंश एवं अवहट्ट आदिक रूपमे प्रतिष्ठा पाबि चुकल छल। मुदा बादमे एहिमे एक नव दिशा आयल, जे मैथिली दिस अग्रसर भेल।

मुदा ई सहसा मानव संभव नहि अछि जे 'वर्णरत्नाकर' मैथिली गद्यक प्रथम ग्रंथ थिक तथा 'धूर्तसमागम' नाटक आ गीतक प्रथम रचना थिक। ज्योतिरीश्वर अपन गद्य ओ गीतमे अनेक आधुनिक मैथिलीक शब्दक प्रयोग कयलनि अछि। एहिसँ ई पुष्ट होइछ जे हुनकासँ पूर्व मैथिलीक कतोक ग्रंथ लिखल गेल होयत। ज्योतिरीश्वरक बाद गीत आ कविता लिखनिहार तँ विद्यापति सन महान कवि भेटलाह, मुदा गद्यकार तँ एकर बाद चन्दाझासँ पूर्व केओ नहि भेटैत छथि। ई निर्विवाद जे बीचक अवधिक कतोक मैथिली कृति नष्ट भऽ गेल। मिथिलामे विद्वान लेखक आ साहित्यकार लोकनिक संतानमे ई मनोवैज्ञानिक विलक्षणता छनि जे अपन पूर्वज द्वारा लिखित ग्रंथ नष्ट भऽ जाय से नीक मुदा पाण्डुलिपि आ हस्तलेख पोथीक अन्वेषककेँ देबाक कोन कथा जे देखऽ पर्यन्त नहि देथिन। एहि मानसिकताक करणे मिथिलामे संस्कृत एवं मैथिलीक कतेक कृत नष्ट भऽ गेल होयत, तकर अनुमान के लगाओत ?

'वर्णरत्नाकर'क भाषाक विश्लेषणसँ एक महत्त्वपूर्ण तथ्य ईहो प्रकट होइछ जे– "जे शब्द पूर्वमे व्यवसाय सूचित करबाक हेतु उपनाम वा उपाधि जकाँ नामक आगाँ वा पाछाँ लगाओल जाइत छल से व्यवसाय सूचक उपनामक संग-संग कौलिक उपाधि बनि गेल।... वर्णरत्नाकरमे एहन बहुत शब्द आयल अछि जे प्रत्यक्षतः पदनाम मानल जाय वा कुलनाम अथवा व्यवसाय-सह-कुलसूचक नाम ई बेकछाकऽ कहब कठिन भऽ जाइत अछि।"[१]

अंतमे हम डॉ. शैलेन्द्र मोहन झाक एहि उक्तिक संग समापन करैत छी जे– "लोक भाषाक शक्ति ओ सीमाकेँ देखैत जखन संस्कृतज्ञ लोकनि एहि दिस आकृष्ट भेलाह तँ साहित्यक अभियानमे नव स्फूर्तिक संचार भेल। ज्योतिरीश्वर एकर एकान्त साक्षी छथि। हुनक वर्णरत्नाकर एहि अभियानक प्रथम कीर्तिमान थिक।"[२]

१. वर्णरत्नाकर; प्रो. आनन्द मिश्र आ पण्डित गोविन्द झा, पृ. १३
२. ज्योतिरीश्वर; मैथिली अकादमी, पटना; पृ. १३

परिशिष्ट

(क) डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीक भूमिकाक मुख्य अंश

१. पाण्डुलिपि

अद्यावधि प्राप्त सूचनाक आधारपर 'वर्णरत्लाकर' मैथिली भाषाक सभसँ पुरान कृति सिद्ध होइछ। संभव जे एकर रचना चौदहम शताब्दीक प्रारम्भिक पचीस वर्षक अभ्यन्तरे भेल हो। तालपत्रपर लिखित ई अमूल्य पाण्डुलिपि 'रोआयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल'क पुस्तकालयमे पाण्डुलिपिक सरकारी संग्रह (संख्या ४८/३४) मे सुरक्षित अछि। पाण्डुलिपि मैथिलीक प्राचीन लिपिमे अछि। ई मूलतः ७७ पातमे लिखल गेल, एहि पाण्डुलिपिक १७ टा पात हेरा गेल छैक (प्रारम्भिक पातमे १ सँ ९ धरि आ पुनः ११, १२, १४, १५, १७, १९, २६ आ २७)। आकारमे ई पातसभ १५ इञ्च नाम ओ $१^{७}/_{८}$ इञ्चसँ २ इञ्च धरि चाकर अछि। किछु पातकेँ छोड़ि, जकरा कने-मने दिबार चाटि गेल छैक, आन सभ पात पूर्णरूपेण सुरक्षित छैक। साधारणतया एक गोट पातमे चारि पाँती छैक। मुदा किछु पात एहनो छैक जाहिमे पाँतीक संख्या छओ छैक। लिपि स्वच्छ छैक। पाण्डुलिपिक प्रारम्भ १०असँ छैक। संयोगसँ एकर अन्तिम पात ७७ ब, जतऽ लेखक आ कृतिक परिचय रहैत छैक, सुरक्षित छैक। एहिमे लिखित सूचनाक आधारपर पाण्डुलिपिक तैयारीक वर्ष मिथिलामे प्रचलित लक्ष्मण संवत ३८८ छैक जे गणनाक आधारपर १५०७ ईसवी भेल। लक्ष्मण संवतक प्रारम्भ १११९ ई. मे भेल छलैक।

वर्तमान हस्तलेख पूर्वक दूगोट अन्य उपलब्ध पाण्डुलिपिक-आधारपर तैयार कयल गेल छैक। उक्त दूनू पाण्डुलिपि दोषयुक्त वा अपूर्ण बूझि पड़ैछ। कमसँ कम एकटा पाण्डुलिपि तँ अवश्ये दोषयुक्त छलैक। रचनामे परिच्छेद सभक नाम कल्लोल राखल गेल छैक। पाण्डुलिपिक सातम कल्लोलक समाप्ति पृष्ठ संख्या '६९ ब'क पंक्ति ३ पर भेल छैक, जकर बाद कल्लोल ८ प्रारम्भ भऽ जाइत छैक, जे पुनः पृष्ठ संख्या '७० ब'क पंक्ति ४ पर जाकऽ विभिन्न प्रकारक जहाज ओ नाओक नाम सभक उल्लेखक संग सहसा समाप्त

भऽ जाइत छैक। रचना समाप्तिक सूचना 'शार्दूलविक्रीड़त छन्दमे एकटा श्लोकसँ छैक, जाहिमे अनेक अशुद्धि आ विलुप्ति छैक :–

यावन्नि (= न्नी) (र) धिनन्दिनी मुरतिपोर्वक्षःस्थल गाहते यावन्निर्ज (= र्झ) रसिन्धु × स(म) सुखं रत्नाकरो विन्दति यावत्पङ्कजबान्धवस्यभु (= भ) वनान्युद्योतयन्ते कराः काव्यं श्री कविशेष (= ख) रस्य सुधियां तावत्कृतर्षाष्टो त्सवम् ।।

अन्तमे अशुद्ध संस्कृतमे एक गोट उक्ति छैक-- "आदर्श ग्रन्थमेकं समाप्तं (,) द्वितीयस्य कतिपय लिखितव्यस्ति ताल्लिख्यते ।। पछाति 'राज्यवर्णना'सँ प्रारम्भ भऽ अन्तिम पृष्ठ (७७ ब) धरि अनेक 'वर्णना' सभ छैक। मुदा पुनः एतऽ आबि अंतिम 'कल्लोल'क नामक उल्लेख नहि छैक आ रचना समाप्त भऽ जाइत छैक। तकर बाद "यावन्निरधिनन्दिनी" बला श्लोक अशुद्ध संस्कृतमे पुनः उद्धृत छैक आ तखन छैक लेखकक ओ कृतिक परिचय जाहिमे अनुकृतिक तिथि आ अनुकृतिकारक नामक उल्लेख छैक सौरिया। रचनाक समाप्ति एकटा अभिवादनसँ कयल गेल छैक (ल. सं. ३८८ आश्विन वदि सप्तमी रबौ सौरिया ग्रामे सदुश्रीमणिकरैल्लिखितेयं पुस्तीति ।। ओं भैरवाख्य शिवलिङ्गाय नमः ।।)

एहिसँ एतेक स्पष्ट भऽ जाइत छैक जे प्रथम स्रोत पाण्डुलिपि दोषयुक्त छलैक; ओहिमे रचना समाप्तिक उचित सूचनाक अभाव छलैक आ एकर अतिरिक्त रचनाक मुख्य अंगसँ अनेक अंश विलुप्त छलैक; अनुकृतिकार स्पष्टतया दोसर पाण्डुलिपिक स्रोतसँ छुटलाहा अंश सभकेँ रचनाक अंतमे जोड़ने छथि। दुर्भाग्यसँ आठम कल्लोलक शीर्षक अनुकृतिकार नहि देने छथि। एकर कारण ई भऽ सकैछ जे की तँ दोसर पाण्डुलिपिमे शीर्षक छले नहि अथवा अनुकृतिकार शीर्षक देब बिसरि गेलाह।

साधरणतया आधुनिक भारतीय आर्य भाषाक उपलब्ध पाण्डुलिपिक जे आयु आँकल जाइत छैक तकर आधारपर एहि पाण्डुलिपिक अनुकृति-काल १५०० ईसवी भेल, जे कम पुरान नहि भेलैक।

'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल'क अनुरोध आ बंगाल सरकारक सहमतिसँ स्व. महामहोपाध्याय पं. हरप्रसाद शास्त्री, एम. ए., डी. लिट., सी. आइ ई. १८९५ आ १९०० ईसवीक मध्य संस्कृतक पुरान पाण्डुलिपि सभक खोज कयलनि। एहि कार्यक लेल ओ दू बेर नेपाल आ एक बेर बनारस गेलाह। हुनक नेपाल-यात्राक उपलब्धिक वृत्तान्त सर्वविदित अछि। जाहि कृति सभकेँ हेरायले बूझल जाइत छल आ एहनो कृतिसभ जकरा सम्बन्धमे लोककेँ किछु ज्ञान नहि छलैक– एहन-एहन रचना सभक ओ खोज आ विवरण प्रस्तुत कयलनि। हुनक दूगोट सहायक, पं. राखालचन्द्र कार्व्यतीर्थ आ पं. विनोद बिहारी काव्यतीर्थ सम्पूर्ण बंगाल (बिहार, छोटानागपुर आ उड़ीसाकेँ लऽ पुरान सीमावला बंगाल) क्षेत्रमे घूमि-घूमि व्यक्तिगत लोकक पाण्डुलिपि सभक संग्रहकेँ देखि ओकर परिचय टिपैत रहलाह आ जतऽसँ जे संभव भेटलनि ओतऽसँ सरकारक हेतु पाण्डुलिपि प्राप्त करैत

रहलाह। एही पाण्डुलिपि-अनुसंधान अभियानक अभ्यन्तर पं. विनोद बिहारी काव्यतीर्थ मिथिला सँ 'वर्णरत्नाकर'क पाण्डुलिपि हस्तगत कयलनि। सोसाइटिक अवैतनिक सचिवकेँ प्रेषित ''संस्कृत पाण्डुलिपिक खोज सम्बन्धी विवरण'' (१८९५-१९००) शीर्षकसँ अपन रिपोर्ट (पृ० सं० २३) मे पँ० हरप्रसाद शास्त्री एहि पाण्डुलिपिक सम्बन्धक निम्नलिखित विवरण दैत छथि–

''विवेच्य वर्षक एहि अवधिमे अंतिम मैथिल पाण्डुलिपि जे प्राप्त भेल अछि से थिक ज्योतिरीश्वर कविशेखराचार्यक 'वर्णन-रत्नाकर'। पाण्डुलिपिक स्थिति अत्यंत जर्जर अछि, किन्तु जे अंश नीक जकाँ सुरक्षित बचल अछि तकर अक्षर पैघ-पैघ आ लिपि सुन्दर छैक। पाण्डुलिपि जाहि पुरान मैथिली लिपिमे छैक तकरासँ पुरान बंगला लिपिक अन्तर बुझब कठिन अछि। भाषा मैथिली छैक, किन्तु ताहिसँ बंगला भाषाक बीच अन्तर करब एहि लेल कठिन छैक जे एहि भाषाक पचास प्रतिशत उक्ति बंगला भाषामे सेहो पाओल जाइत छैक। एहि कृतिक रचनाक समय चौदहम शताब्दीक प्रारम्भिक काल अछि। एहिसँ प्राचीन पाण्डुलिपि ने बंगलामे आ ने मैथिलीमे उपलब्ध अछि। एकर विषयवस्तु विलक्षण छैक। पुस्तक काव्यमे अपनाओल जाइत पारंपरिक विविध विषयमे अछि। जेना, जँ राजाक वर्णन करबाक हो तँ ध्यान राखी जे राजाक गुण सब की होयबाक चाही, जँ राजधानीक वर्णन अभीष्ट हो तँ ओहि वर्णनमे की सभ रहबाक चाही तकर ध्यान राखी, इत्यादि। वर्णनक ई काव्यपरंपरा किछु स्थलपर बड़ रोचक अछि। उदाहरणक लेल हम 'कुट्टनी'क वर्णन उपस्थित करब; 'कुट्टनी'क आयु कमसँ कम एक सय वर्षक हो, ओकर शरीरक चाम घोकचल हो, ओकर केश शंख सन उज्जर हो, घाड़ तँ सोझ मुदा देहपर मासुक सर्वथा अभाव हो, गाल पिचकल आ दाँत टूटल हो; ओ नारद (झगड़ाक देवता) क सहोदरा हो; किन्तु दू गोट व्यक्तिक बीच सम्पर्क स्थापित करबामे चतुरा हो, इत्यादि। लगैछ जेना ई ग्रंथ विद्यापति सन विलक्षण प्रतिभावान व्यक्तिक पथ-प्रदर्शन कयलक। एहि कृतिक बहुत पुरान होयबाक प्रमाणमे एतबे कहब पर्याप्त होयत जे (नेपालक) दरबार पुस्तकालयमे हिनक 'धूर्तसमागम' नाटकक पाण्डुलिपि सेहो सुरक्षित अछि। ई नाटक ओही ज्योतिरीश्वर कविशेखरक थिक जे मिथिलामे कर्णाट राजवंशक अंतिम राजा हरसिंहदेवक समयमे भेल छलाह आ जनिकर जीवन-काल प्रो. वेन्डल १३२४ क लगपास मानने छथि।

दुर्भाग्यवश एहि पाण्डुलिपिक प्राप्तिक समय स्थान आ जनिकासँ ई प्राप्त कयल गेल, ओहि व्यक्तिक नाम अंकित नहि कयल गेल अछि। दोसरो सरकारी पाण्डुलिपि जकाँ एहूपर एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगालक अधिकार छैक। पं. हरप्रसाद शास्त्रीकेँ छोड़ि, जे सर्वप्रथम एकर उपयोग कयलनि आ एकर सूचना वाह्य-जगतकेँ देलथिन, ई पाण्डुलिपि बहुत दिन धरि निष्प्रयोजन पड़ल रहल। बंगीय साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित बंगाली आ पश्चिमी अपभ्रंशक बुद्ध सम्बन्धी कविताक संग्रह ''हजार वर्षर पुरान बंगाली बुद्ध गान ओ दोहा'' शीर्षक पुस्तकक भूमिकामे (पृ. सं. ३५-३६, बुद्धगान ओ दोहा, कलकत्ता,

बंगाली वर्ष १३२३) बुद्धक परवर्ती कालक सिद्ध अथवा महायान सन्तसभक विवरण पं. हरप्रसाद शास्त्री वर्णरत्नाकरसँ लय उद्धृत कयलनि अछि। १९३० क बंगीय साहित्य परिषद् पत्रिकामे बंगाली अंक गणनामे भिन्न विषयपर हमर एक गोट लेख प्रकाशित भेल छल, जाहिमे हम स्वयं एहि पाण्डुलिपिसँ एकटा परिच्छेद उद्धृत कयने छी। शास्त्री स्वयं अपन कृति 'बंगाली भाषाक उद्‌गम ओ विकास' कलकत्ता, १९२६, खण्ड-१ पृ. सं. १०२-३ मे एहि पाण्डुलिपिक किछु चर्चा कयने छथि।

मुदा ई विलक्षण बात अछि जे एहन एक टा भाषाशास्त्री जे एक अर्थमे मैथिलीक संग आनो बिहारी बोली सभक खोज कयलनि आ आधुनिक आर्य-भारतीय भाषा परिवारक मध्य ओकर सभक उचित स्थानक निरूपण कयलनि से सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन भारतीय भाषा सर्वेक्षण अपन पोथीक बिहारीवला खण्डमे (एल. एस. आइ, खण्ड २, १९०३ पृ. सं-१७-१८) वा मैथिली व्याकरणक बहुमूल्य पुस्तक (द्वितीय संस्करण एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, १९०९, पृ. सं. १३ जतऽ एल. एस. आइ. वला विवरणक पुनरावृत्ति अछि) मे वर्णरत्नाकरक चर्चा नहि कयलनि अछि। ई संभव जे जाहि काल मैथिली भाषाक अध्ययन-अनुसन्धानक जनक सर जार्ज ग्रियर्सन भारत आयल रहथि ताहि काल पं. हरप्रसाद शास्त्रीवला रिपोर्ट हुनक दृष्टिपथपर नहि आयल होनि आ ओ एहि पाण्डुलिपिक निरीक्षण नहि कऽ सकल होथि। मुगल शासनसँ पूर्व मिथिलाक राजनीतिक इतिहास केहन छल होयतैक ताहि प्रसंग अपन अद्‌भुत लेखमे, जे वर्ष १९१५ ई. क "जर्नल ऑफ द' एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल (पृ. सं. ४०७-४३३) मे प्रकाशित भेल छलैक, स्व. मनमोहन चक्रवर्ती ज्योतिरीश्वरक उल्लेख करब एहि लेल महत्त्वपूर्ण बुझलनि अछि कारण हुनक वर्णरत्नाकर (पृ. ४१४) मैथिली भाषाक अद्यावधि प्राप्त प्रथम रचना थिक। ई सिद्ध अछि जे चक्रवर्ती महोदय मूल पाण्डुलिपि अवश्य देखने छलाह किएक तँ ओ एहि रचनाक शुद्ध नाम "वर्ण-रत्नाकर" लिखैत छथि। मुदा पं. हरप्रसाद शास्त्री अपन रिपोर्ट आ 'बुद्धगान' मे एकर नामक अशुद्ध रूप "वर्णन-रत्नाकर' लिखलनि अछि। स्व. राखलदास बनर्जी अपन पोथी 'बंगलार इतिहास', २ बंगाली वर्ष १३२४, पृ. सं. १३८ मे चक्रवर्ती महोदयक कथनक उल्लेख कयलनि अछि, यद्यपि ओ ई कहैत छथि जे 'वर्ण-रत्नाकर' मैथिली पर वा मैथिलीक सम्बन्धमे अछि। अपन ग्रंथ "हिस्ट्री ऑफ तिरहुत" (कलकत्ता, बेपटिस्ट मिशन प्रेस, १९२२) मे श्याम नारायण सिंह सेहो मनमोहन चक्रवर्ती आ पं. हरप्रसाद शास्त्री सभ गोटेक कथनक समावेश कयलनि अछि, यद्यपि ओ उद्धरण देबाक नियमक उल्लंघन करैत एहि दुनू विद्वानक पुस्तकक पृ. सं. इत्यादिक उल्लेख नहि कयलनि अछि (पृ. सं. ६९ आ पृ. सं. १४१-१४२)।

१९१९ ई. मे कलकत्ता विश्वविद्यालय स्व. सर आशुतोष मुखर्जीक मार्ग-निर्देशनमे विभिन्न भारतीय भाषाक परीक्षा स्नातकोत्तर स्तर धरि लेबाक व्यवस्था कयलक। एहि लेल स्वीकृत भाषा सभमे मैथिली सेहो छल, जकरा बिहारक एक करोड़ लोक बजैत अछि

आ जकर सुदीर्घ सांस्कृतिक परम्परा छैक। ई ओएह भाषा थिक जकरा विद्यापति सन विशिष्ट कविक भाषाक होयबाक गौरव प्राप्त छैक– ओएह विद्यापति जानिक स्थान भारतीय साहित्य वाङ्मयमे प्रथम कोटिक अछि। एहन जे भाषा मैथिली तकरा ई विश्वविद्यालय एकटा स्वतंत्र भाषाक दर्जा देलक, मात्र एकटा "पाट्वा" (Patois) अर्थात् अशिक्षित ग्रामीण भाषाक दर्जा नहि, यद्यपि अपन क्षेत्रमे लोक एहि भाषाकेँ अशिक्षित वर्गक भाषा बुझैत अछि। एहि क्षेत्रमे स्कूल आ अदालतिक स्वीकृत भाषा मात्र हिन्दुस्तानी (उच्च हिन्दी अथवा उर्दू) छैक। कलकत्ता विश्वविद्यालयमे कोनो छात्र मैथिलीकेँ मुख्य वा गौण विषयक रूपमे राखि सकैत अछि। एकर अतिरिक्त कोनो छात्र मैट्रिकसँ बी. ए. धरि सेहो मैथिली भाषा पढ़ि सकैत अछि। मैथिलीक साहित्य अधिकांशतः पाण्डुलिपिएमे अछि। मैथिली आ बंगला लिपिक बीच बहुत समानता छैक। एहि दूनू भाषाक अक्षरक विकास गुप्तकालक बाद पूर्वी भारतक कोनो एकहि लिपिक स्रोतसँ भेल बुझि पड़ैत अछि। एहि भाषाकेँ प्रकाशमे नहि अयबाक एकटा मुख्य कारण ई अछि जे मैथिली लिपिक छापाक काँटा हेमनि धरि नहि बनल छलैक आ तेँ कोनो पोथी एहि लिपिमे नहि छपाइत छलैक। मिथिलाक कोनो छात्रकेँ ई लिपि उच्च कक्षामे गोलेपर सिखाओल जाइत छैक आ मैथिल ब्राह्मणक संग आनो लोक एहि लिपिक उपयोग मात्र हस्तलेखमे करैत अछि। छपाइक लिपि साधारणतया देवनागरिये छैक। प्राथमिक कक्षाक लेल किछु प्राथमिक पुस्तक प्रकाशित छैक; एकर अतिरिक्त संस्कृत भाषामे पूजा-पद्धति किछु मैथिली लिपिमे पुरान ढंगक 'पोथी'क आकारमे आ सेहो 'लिथोग्राफ' पद्धतिसँ छपल छैक। मैथिली साहित्यक किछु प्रकाशन देवनागरी लिपिमे अछि। एकर अतिरिक्त एहि भाषामे किछु पत्रिकाक प्रकाशन सेहो नियमित रूपेँ होइत रहल अछि। साहित्यिक प्रकाशनमे देवनागरी लिपिक प्रयोगसँ आ मैथिली लिपिमे मातृभाषाक अध्ययन-अध्यापनक स्थानपर स्कूल-कॉलेजमे हिन्दीकेँ अनिवार्य विषय बना देलासँ फल ई भेलैक अछि जे एहि भाषामे अपन लिपिक ज्ञाताक संख्या दिनानुदिन घटले जा रहल छैक। सत्य बात तँ ई अछि जे एहि लिपिक प्रचार-प्रसार बन्द भऽ गेलैक अछि आ नव पीढ़ीक जे मैथिल छात्र छथि तनिका आब मात्र देवनागरीमे लिपिक ज्ञान छनि। मैथिलीक अध्ययन-अध्यापनकेँ सुभितगर बनयबाक दृष्टिकोणसँ आ जेँ एहि भाषा–साहित्यक अधिक भाग पाण्डुलिपिएमे छलैक, तेँ सर आशुतोष मुखर्जी एकर अनेक पाण्डुलिपिक रूपान्तरण देवनागरी लिपिमे करबौलनि, जाहिसँ सम्पादन ओ प्रकाशन विश्वविद्यालय स्तरपर भऽ सकैक। ओ तँ मैथिली-लिपिक छापाक काँटा सेहो तैयार करयबाक विचार कयने छलाह। ई विचार परिपक्वता प्राप्त करितैक, ताहिसँ पूर्वाहिँ १९२४ ई. मे हुनक असामयिक निधन भऽ गेलनि। (किछु मैथिल मातृभाषा अनुरागीक उत्साहक फलस्वरूप आब मैथिली लिपिक 'टाइप' बनल अछि आ एहिमे किछु साहित्य सेहो छपल अछि; मुदा लगैछ जेना निश्चित रूपसँ देवनागरी आब मैथिली लिपिकेँ धकियाकऽ कात कऽ देलकैक अछि आ एहि लिपिक प्रयोग कखनहुँ-

कखनहुँ पुस्तकक शीर्षक आ ओकर साज-सज्जा मात्रक लेल कयल जाइत अछि) । अनेक वर्षसँ 'वर्णरत्नाकर' कलकत्ता विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर परीक्षाक (मुख्य भाषाक रूपमे) पाठ्य-पुस्तकक रूपमे निर्धारित अछि । 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल'क पाण्डुलिपिक आधारपर एकर प्रतिकृति कराओल गेलैक जाहिसँ कलकत्ता विश्वविद्यालय एकरा प्रकाशित करा सकय । मुदा अपरिहार्य कारणे एकर प्रकाशनमे बहुत विलम्ब भऽ गेलैक । १९२६ ईस्वीमे जाहि प्रथम छात्रक परीक्षा वर्ण-रत्नाकरपर भेलनि तनिका लेल 'वर्ण-रत्नाकर'क विश्वविद्यालयक प्रतिकृतिसँ पुनः एक गोट आओर प्रतिकृति तैयार कराओल गेलैक । विश्वविद्यालय वला प्रतिकृति तैयार करबामे एहि पंक्तिक लेखक स्वयं सहयोग देने रहथि आ ई प्रतिकृति १९२३ ई. मे बहुत सावधानीसँ मूल पाण्डुलिपिसँ मिला-मिला कऽ कयल गेल रहैक । छापाखानाक लेल एकर प्रति कलकत्ता विश्वविद्यालयक कला संकायक स्नातकोत्तर विभागमे नियुक्त मैथिलीक बनैली-प्राध्यापक पं. खुद्दी झा तैयार कयने रहथि । एहि रचनाक समुचित सम्पादनक लेल एकर दोसरो पाण्डुलिपि तकबाक आवश्यकता हमरालोकनिकेँ बूझि पड़ल । मिथिलामे एहि पाण्डुलिपिक दोसर प्रतिकेँ तकबामे एखन धरि पं. खुद्दी झा समर्थ नहि भऽ सकलाह अछि आ तेँ एशियाटिक सोसाइटियेवला पण्डुलिपि एखन धरि एहि मूल्यवान कृतिक एकमात्र स्रोत अछि ।

२. लेखक–हुनक कृति, हुनक तिथि आ समय

हमरालोकनिक सौभाग्यसँ 'वर्ण-रत्नाकर'क रचयिता, कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर पुरान अथवा मध्यकालीन संस्कृत साहित्यक एक सुपरिचित लेखक छथि । ओ कमसँ कम संस्कृतक दू गोट ग्रंथक लेखक तँ अवश्य छथि– 'धूर्तसमागम' जे प्रहसन वा हास्य नाटक थिक, आ दोसर 'पंचसायक' जे कामशास्त्रक पोथी थिक । कामशास्त्रपर 'रंग-शेखर' नामक एकटा तेसर कृतिक उल्लेख मनमोहन चक्रवर्ती महोदय (जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, १९१५, पृ. सं. ४१४, पाद टिप्पणी) कयने छथि, जाहिमे ओ कहैत छथि जे संस्कृत साहित्यमे एहि कृतिक उल्लेख अनेक स्थलपर भेल अछि, मुदा से हमरा देखबाक अवसर एखन धरि नहि भेटल अछि ।

'पञ्च-सायक' अर्थात् 'पाँच वाण' (प्रेमदेवता अर्थात् कामदेवक) पाँच परिच्छेदमे विभक्त श्लोकबद्ध अछि जाहिमे प्रेमक गोपनीय क्रिया-कलापक (वात्सायनक औपनिषद प्रकरण) वर्णन छैक । प्रेमक देवता कामदेवक स्तुतिक उपरान्त कवि अपन परिचय निम्नलिखित रूपेँ दैत छथि (बंगला लिपिमे लिखल पाण्डुलिपि जे हमरा लग अछि तकर आधारपर) : –

अस्ति प्रन्यहमर्थिता प्रहरणः क्लप्तैकदीक्षा गुरुः
श्रीकण्ठार्च्चन तत्परो भवि चतुःषष्टेः कलानां निधिः ।

संगीतागमसत् प्रमेयरचना चातुर्य्यचूड़ामणिः
ख्यातः श्रीकविशेखरार्पितपदः श्री ज्योतिरीशः कवि ॥
दृष्टा मन्मथतन्त्रमीश्वरहृत वात्सायनीयं मतं
गौंणी पुत्रकमूलदेवरचितं बाभ्रव्यवाक्यामृतम् ।
श्री नन्दीश्वर रन्तिदेव चरितं क्षोणीन्द्रविद्यागमं
तेनाकल्प्यत पञ्चसायक इति प्रीतिप्रदः कामिनाम् ॥

एहिमे अनेक प्रकारक कामोद्दीपक औषधि, अन्य कतेक औषधि, प्रसाधनक सामग्री, सम्मोहन प्रक्रिया आ कामोद्दीपन रसक विवरणक संग अनेक प्रकारक स्त्रीगणक वर्णन, गर्भिणी स्त्रीक संग प्रेम-प्रक्रियाक कवितामे वर्णन आ अनेक प्रकारक 'बन्ध' केर वर्णन अछि । अंतमे नायिकाक संक्षिप्त वर्णन सेहो अछि । कृति पैघ नहि छैक आ सुनल अछि जे एकर अनेक बेर प्रकाशनो भऽ चकल अछि । परञ्च हमर दृष्टि एकर एकहुटा संस्करणपर नहि पड़ल अछि । लेखक अपन एहि कृतिक समाप्ति निम्नलिखित श्लोकसँ करैत छथि–

यावच्चन्द्रकलाकिरीट हृदये शैलात्मजा तिष्ठति
यावद् वक्षसि माधवस्य सकला सानन्दमादिश्यति ।
यावत् कामकला विवर्त चटुला क्षोणीतले सर्व्वदा
तावत् श्रीकविशेखरस्य कृतिना तावत्पदे दीप्यताम् ॥

'पञ्चसायक'क उल्लेख संस्कृत साहित्यक अनेक इतिहासमे भेल अछि (उदाहरणार्थ, एम. विन्टरनितूजक 'जोसिस्ट डर इंडीकेन लिटरेचर',– ३, पृ० सं० ५४१) । लेखक नाम, हुनक 'कविशेखर' पदवी आ एहि तथ्यक सूचना जे ओ कामशास्त्रक पुरना कृतिसभक अध्ययन नीक जकाँ कयने छलाह आ हुनका संगीत-कलाक नीक ज्ञान छलनि– एकर अतिरिक्त हुनका सम्बन्धमे एहि कृतिसँ कोनो सूचना प्राप्त नहि होइछ ।

'धूर्तसमागम' एक लोकप्रिय कृति थिक । एहि प्रहसनक अनेक पाण्डुलिपि उपलब्ध अछि तथा एकर कतोक बेर प्रकाशनो भऽ चुकल अछि । सर्वप्रथम क्रिश्चियन लेसेन एकरा "एन्थोलोजिया संस्कृतिका" (बॉन, १८३८, पृ. संख्या ६६-९६, लैटिन टीका पृ. सं. ११६-१३०) मे छपलनि । सी. केपलर जेनासँ एकर जगदीश्वर लिखित एकटा हास्य नाटक "हास्यार्णव"क संग १८८३ ई. मे लिथोग्राफमे छपलनि । एकर भारतीय संस्करण सभ सेहो अछि, जकर प्रकाशन बम्बइ आ कलकत्तासँ भेल छैक । मुदा हमरा ओकरा सभकेँ देखबाक सौभाग्य एखन धरि नहि भेल अछि । संस्कृत नाटकपर लिखल यूरोपक सभ ग्रंथमे एहि कृतिक उल्लेख अछि; उदाहरणार्थ होरेस हेमन विल्सनक 'थियेटर ऑफ द' हिन्दूज' (तृतीय संस्करण, खण्ड-२, पृ. सं. ४०८), सिलमेन लेवीक 'थियेटर इण्डियेन' (पेरिस, १८९०, पृ. सं. २५२) मे, स्टेनकोनोक इन्डिक ड्रामा (पृ. सं. ११५-६) मे, ए. बी. कीथक 'संस्कृत ड्रामा' (आक्सफोर्ड १९२४, पृ. सं. २६१) मे तथा एम. विन्टरनितूजक जिसेस्ट

डर इन्डिसकन लिटरेचर (३, पृ. २६३-२६४) मे । एही छोट-छिन कृतिक आधारपर हमरालोकनि एहि कविक कालक प्रसंगमे अनुमान लगा सकैत छी । एहि नाटकक प्रस्तावनामे निम्नलिखित श्लोक एवं पंक्तिसभ भेटैछ अछि–

नानायोधनिरुद्ध निर्जतसुरत्राणत्रसद्वाहिनी
नृत्यद्भीमक बन्धमेल कदलद्भुमिभ्रमद्ध् धरः ।
अस्ति श्री हरसिंहदेवनृपतिः कर्णाटचूड़ामणि-
ईप्पत् पार्थिव सार्थमौलिमुकुटन्यस्ताङ्घ्रि पङ्केरुहः ।।
तस्योद्दण्डभुजप्रतापदहनज्वाला निरस्ता यदा
राज्ञः सर्वगुणानुरागपदवी विद्योतनाचार्य्यकः ।
यो धीरेश्वरवंशमौलितिलको (Nepal Ms; मुकुटो Lassen) दातावदाताशयम्,
तस्य श्री कविशेखरस्य कविता साञ्चितत्रमालम्बते ।।

तदनेन सकलसंगीत विशेष विद्योतनाभिनवभरतेन (सकल संगीत विद्याशेखर विद्योतनाभिनव भारतेन, Nepal Ms.) पुरमथनपदारविन्दद्वन्द्ववन्दारु करपल्लवेन निखिलभाषोपभाषा शुभंभावुक सरस्वतीकष्ठाभरणेन अनवरत सोमरसास्वादक शाय कण्ठकन्दलीनरी नृत्यमानमीमांसामहोत्सवेन रामेश्वरस्य पौत्रेण तत्रभवतः पवित्रकीर्ते धीरेश्वरस्यात्मजेन महाशासन श्रेणीशिखरभ्रामतपल्ली (श्रीमतपल्ली Nepal)) जन्मभूमिना (–यक Nepal) कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरेण निजकुतूहलविरचितं धूर्तसमागमं नाम नाटकम् (Nepal प्रहसनं Lassen) अभिनेतुमदिष्टोऽस्मि ।

उपर्युक्त पंक्ति सबहिसँ हमरालोकनिकेँ सूचना भेटैत अछि जे ज्योतिरीश्वरक पिताक नाम धीरेश्वर ओ पितामहक नाम रामेश्वर छलनि । ओ राजसभाक उच्च अधिकारी, वैदिक रीतिसँ पूजा कयनिहार तथा दर्शनशास्त्रक विद्वान होयबाक संग अनेक भाषाक ज्ञाता, शिवभक्त आ गानविद्यामे निपुण छलाह । ओ कर्णाट वंशक एहन राजाक दरबारमे छलाह जे मुसलमान आक्रमणकारी (सुरत्राण = सुलतान) केँ युद्धमे परास्त कयने छलाह, एहि राजाक नाम हरसिंहदेव अथवा हरिसिंह देव छलनि । एहि राजाक नाम नरसिंहदेव कतोक पाण्डुलिपि तथा यूरोप एवं कलकत्ताक छपल संस्करणमे (द्रष्टव्य, मनमोहन चक्रवर्तीक छपल आलेख, जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, १९१५, पृ. सं ४११, पाद टिप्पणी) अछि । देवनागरी लिपिमे लिखल 'हरिसिंह' नाम ए. एस. बी. क पाण्डुलिपि सं. ८२२४ मे सेहो भेटल अछि; ई पाण्डुलिपि १५० वर्षसँ अधिक पुरान छैक । लेसेनकेँ जे पाण्डुलिपि प्राप्त छलनि ताहूमे 'नरसिंहदेव' छैक आ लेसेन विजयनगरक राजा नरसिंहदेवकेँ, जे १४८७ सं. १५०८ धरि राज कयलनि (पृ. सं. १०,११ एन्थोजोलिया संस्कृतिका') एहि लेखकक संरक्षक राजा माननलि अछि । परञ्च पं. हरप्रसाद शास्त्रीकेँ एहि कृतिक जे पाण्डुलिपि नेपालक दरबार पुस्तकालयमे भेटलनि ओहिमे 'हरसिंहदेव' लिखल छैक (पृ. सं. ६६, केटलग ऑफ पाम लिफ एंड सेलेक्टेड

पेपर्स एम. एस. एस. बिलोंगिंग टू द दरबार लाइब्रेरी, नेपाल', विथ ए हिस्टोरिकल इन्ट्रोडक्शन वाइ सी. वेन्डेल, कलकत्ता, १९०५) आ तकर आधारपर ओ एहि राजा (हरसिंहदेव) केँ मिथिलाक सिमराओं नामक स्थानक राजा, समय १३२४ ई. मानैत छथि (सूचीक पृ. सं. ३७) । कहल गेल अछि जे हरसिंह वा हरिसिंह नेपालपर आक्रमण कयने छलाह (तुलना करू–शास्त्रीक नेपालक सूची पृ. सं. १४, बेन्डेलक ऐतिहासिक भूमिकावला लेख आ मनमोहन चक्रवर्तीक आलेख, जे. ए. एस. वी. १९१५, पृ. ४११) । कर्णाटवंशक संस्थापक राजा नान्यदेव (बारहम शताब्दीक प्रारंभिक पचास वर्ष) सँ हरसिंहदेव धरि (चौदहम शताब्दीक मध्यभाग) आ तकर बादोक राजा सभक प्रसंग मनमोहन चक्रवर्तीक एक गोट महत्त्वपूर्ण आलेख (जे. ए. एस. बी., १९१५, पृ. सं. ४०७-३३, जकर उल्लेख पूर्वमे कयने छी) छनि जाहिमे ओ एहि वंशक इतिहासक पुनर्निर्धारण कयलनि अछि । एहि तथ्यपर कोनो संदेहक गुंजाइश नहि अछि जे चौदहम शताब्दीक प्रथम पचीस वर्षक अभ्यंतर हरसिंहदेवे हमरालोकनिक एहि रचनाकारक संरक्षक राजा छलाह । संस्कृत नाटकपर ए. बी. कीथक नवीनतम पुस्तकमे लेसेनक लगभग एक सय वर्ष पुरान धारणाक पुनः अनुमोदन कयल गेल अछि जे ज्योतिरीश्वर पन्द्रहम-सोलहम शताब्दीक मध्य विजयनगरक राजाक दरबारक कवि छलाह । 'नरसिंहदेव' जे पढ़ल जाइछ से तँ निड्डाहे गलत छैक आ एहि सम्बन्धमे महत्त्वपूर्ण प्रमाण छैक जे ई नाम निश्चित रूपसँ 'हरसिंहदेवे' थिक ।

एतबा तँ स्पष्ट छैक जे हरसिंह दिल्लीक सुलतान गयासुद्दीन तुगलक (१३२०-४ ई.) सँ तखन युद्ध कयने छलाह जखन ओ मिथिलाक रास्तासँ बंगाल जाइत छल । अपन पुस्तक 'तारिखे फिरोजशाही' मे (चौदहम शताब्दीक उत्तरार्धमे) जियाउद्दीन बरनी मात्र एतबे उल्लेख कयने छथि जे बंगाल जाइत काल तिरहुतक स्थानीय शासक लोकनि सुलतानक अभ्यर्थना कयने छलाह । परञ्च परिस्ताक अनुसार (सतरहम शताब्दीक दोसर चर्तुर्थांशः जे. ब्रिग्सक अनुवाद, "हिस्ट्री ऑफ द राइज ऑफ द मोहमडन पॉवर इन इंडिया टिल द ईयर १६१२", खण्ड-१, लंडन, १८२९, पृ. ४०६-७' फरिस्ताक प्रमाण छनि हुनकासँ पूर्वक एक गोट कृति "फातूहू-स-सालाटीन" जे कतोक विद्वानक दृष्टिमे अधिक ऐतिहासिक महत्त्वक नहि अछि) तिरहुतक राजाक संग गयासुद्दीन तुगलकक युद्ध ओहि देशक पहाड़ी क्षेत्रमे भेल छल आ ओहिमे तिरहुतक राजा परास्त भऽ जंगल दिस भागि गेल छलाह । मुसलमान राजा हुनका खेहारने गेलनि आ हुनका दुर्गमे घेरि लेलकनि तथा हुनका परिवारक अन्य सदस्य तथा बहुत रास धन-सम्पत्तिक संग पकड़ि लेलकनि आ ओहि नव-विजित क्षेत्रक शासनक लेल मालिक तबलिघकेँ गवर्नर नियुक्त कऽ देलकैक । एहि तरहेँ मुसलमानी विवरणमे मतभिन्नता छैक । हिन्दू लेखक चण्डेश्वर ठाकुर (जे. ए. एस. बी. १९१५, पृ. ४११) तथा ज्योतिरीश्वरक साक्ष्यकेँ फरिस्ता द्वारा उद्धृत 'फुतूहु-स-सालाटीन"क विवरणसँ एहि तथ्यकेँ बल भेटैत छैक जे मैथिल राजा एवं दिल्लीक

मुसलमान आक्रमणकारीक बीच घोर युद्ध भेल छल । ईहो स्पष्ट अछि जे एहि युद्धमे मिथिलाक राजा, कमसँ कम युद्धक प्रारंभिक चरणमे परास्त भऽ गेल छलाह । बूझि पड़ैत अछि जे पहिने ओ नेपाल तराइमे आ बादमे नेपालक पहाड़ी क्षेत्रमे शरण लेबाक हेतु बाध्य भऽ गेल छलाह, (ई क्षेत्र हुनक मंत्री चण्डेश्वर ठाकुर हुनका लेल पूर्वहि जीति लेने छलथिन, १३१४ ई., तुलनीय जे. ए. एस. बी, १९१५, पृ. ;. ४११) । मिथिलामे प्रचलित एक गोट परम्परागत श्लोक एहि पलायनकेँ निश्चित करैत अछि :

बाणाब्धि बाड - शशि - सामित - शाकवर्षे
पौषस्य शुक्लदशमी - क्षितिसूनु - वारे ।
त्यक्त्वा स्व - पट्टन - पुरी हरिसिंह देवो (हरसिंह देवो ?)
दुर्दैव - देशित - पथे गिरिमाविवेश ।।

('मिथिला दर्पण'मे उद्धृत मिथिला आ ओकर इतिहासक हिन्दी विवरण, ले. बाबू रासबिहारीलाल दास, खण्ड-१, पृ. ६४, यूनियन प्रेस, दरभंगा, १९१५) ।

मिथिलाक राजा द्वारा ई कोनो स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण नहि छल, अपितु भाग्यचक्रक प्रतिकूल परिवर्तनक कारणे राजाकेँ पर्वतीय क्षेत्रमे शरण लेबाक हेतु बाध्य होबऽ पड़लनि । उपर्युक्त श्लोकमे अंकित वर्ष शाके १२४५ अछि, जकर अनुसार १३२३ ई. होइछ । ई मोटामोटी एहि बातकेँ मानैत अछि जे मुसलमान इतिहासकारलोकनि गयासुद्दीन तुगलक द्वारा मिथिलापर आक्रमणक समय केँ १३२४ ई. मानैत छथि । एहि तरहेँ मिथिलाक राजा द्वारा नेपालमे पलायन करबाक तथ्य ठीक बूझि पड़ैत अछि । मुदा ओ पकड़ा गेल छलाह से प्रायः किंवदंती बूझि पडैछ । एतबा स्पष्ट अछि जे हरसिंहदेव तखनहि अपन राज्य पुनः प्राप्त कयने होयताह जखन आक्रमणक प्रवाह घटल होयत । कारण मुसलमान आक्रमणकारीक पराजय अथवा ओकरा द्वारा स्वैच्छिक रूपसँ चल जयबाक बादे ज्योतिरीश्वर द्वारा 'धूर्त्तसमागम'क तथा चण्डेश्वर द्वारा 'दान-रत्नाकर'क रचना भेल छल, जाहिमे ओहि युद्धक उल्लेख अछि जाहिमे हिन्दू राजाकेँ विजय प्राप्त भेलनि ।

मिथिलामे पारंपरिक धारणाक अनुसार हरसिंहदेव मिथिलाक कर्णटवंशक अन्तिम राजा छलाह । (तुलनीय, 'मिथिला दर्पण' पृ, सं. ६५) । परञ्च मनमोहन चक्रवर्ती ओही वंशक दू गोट आओरो राजाक नाम गनबैत छथि जे की तँ सम्पूर्ण मिथिलामे अथवा ओकर कोनो हिस्सामे हरसिंहदेवक बाद राज कयलनि (जे. ए. एस. बी. १९१५, पृ. सं. ४१२-१४) । मिथिलामे कामेश्वर ठाकुरक ब्राह्मण राजवंश चौदहम शताब्दीक उत्तरार्धमे धीरे-धीरे अपन सत्ताकेँ स्थापित कयलक तथा मिथिलाक सर्वोच्च कवि विद्यापति कामेश्वरक (१४०० ई.) राजवंशक समयमे भेल छलाह ।

ज्योतिरीश्वरक संरक्षक राजाक नाम कथमपि 'नरसिंहदेव' नहि भऽ सकैछ । ओही कर्णाट राजवंशमे एक राजा नरसिंहदेव भेल छलाह, जे नान्यदेवक बाद तेसर राजा छलाह,

जेना नान्यदेव (बारहम शताब्दीक पूर्वार्द्ध) गंगादेव, नरसिंहदेव। ई नरसिंहदेव पूर्वी भारतपर दिल्लीक गुलामवंशक नेतृत्वमे कयल गेल प्रथम तुर्की आक्रमणक समयमे रहल होयताह। 'मिथिला दर्पण' (पृ. सं. ६२) मे उल्लिखित एहि राजाक शासनकाल ११४९-१२०१ ई. अछि, जे अंशतः मिथिलामे प्रचलित धारणापर आधारित अछि। यद्यपि एहि राजाक समयमे मिथिलापर तुर्की आक्रमणक संभावना छैक, मुदा मिनहाजुद्दीन (तेरहम शताब्दीक उत्तरार्ध) सँ लऽ प्रारंभिक सभ मुसलमान अधिकारी लोकनि अपन वृत्तांतमे केयो एहि प्रसंग किछु नहि क़हलनि अछि, जखन कि ओ लोकनि दक्षिण बिहार, बंगाल, असम आ उड़ीसामे तुर्क लोकनिक ऐश्वर्य तथा मुसलमान शासकक सैन्य-शक्तिक विषयमे विस्तृत विवरण प्रस्तुत कयलनि अछि। एकर अतिरिक्त एक बात आओरो अछि जे वर्णरत्नाकरमे स्थानीय रूपपरिवर्तनक संग बहुत संख्यामे फारसी शब्दक (वर्णरत्नाकर पृ. ६० पर देखू) प्रयोग भेल अछि। एहि शब्द सभक रूप आ स्वभावकेँ देखि एतेक तँ कहले जा सकैत अछि जे एहि शब्द सभकेँ स्थानीय मैथिल समुदाय द्वारा पचयबामे अथवा लोकप्रिय बनबामे जे समय लागल होयतैक से फारस बाजऽवला तुर्क संगक सम्पर्कमे एक सय वर्षसँ कम नहि लागल होयतैक। एकर आधारपर एकटा पूर्वक नरसिंहदेव, जनिक हमरालोकनि मात्र नामेटा जनैत छियनि आ जनिका १२०० ई. मे तुर्कक संग युद्धक अनुमानक समस्या फरिछायल नहि अछि, अपन लेखकक संरक्षक राजा मानि लेब एहि हेतु समीचीन नहि बुझि पड़ैछ किएक तँ अनेक स्रोतसँ उपलब्ध प्रमाण सत्यापित करैत अछि जे एहि लेखकक संरक्षक गजा हरसिंहदेवे छलाह।

हरसिंहदेवक सम्बन्धमे परम्पराक आधारपर किछु सूचना हमरालोकनिकेँ विद्यापतिक ओहि 'पुरुष-परीक्षा' सँ प्राप्त होइत अछि, जे संस्कृतमे लिखल छोट-छोट आ उपदेशमूलक कथाक संग्रह थिक। एहि पुस्तकक परिछेद ३ मे 'अथगीतविद्य कथा' शीर्षकक अन्तर्गत मिथिलाक (तीरभुक्ति) कलानिधि नामक एकटा गबैयाक कथा छैक। हिनक गायनसँ अतिप्रसन्न भऽ गोरक्षनगरक राजा उदयनसिंह पुरस्कारक रूपमे हिनका बहुत रास धन-सम्पत्ति देलथिन। एहिसँ स्थानीय गुणी-गायक लोकनि अति क्रुद्ध भऽ गेलाह आ कलानिधिकेँ राजाक मध्यस्थतामे गायन-प्रतिस्पर्धामे भाग लेबाक लेल आमंत्रित कयल गेलनि। मुदा कलानिधि राजाकेँ मध्यस्थ मानबाक लेल तैयार नहि भेलाह कारण हुनक तर्क रहनि जे देवतामे मात्र शिव आ मनुष्यमे मात्र हरसिंह हुनक संगीतक निर्णायक भऽ सकैत छथि। आ हरसिंहक निधन भऽ गेल छनि, तेँ मात्र स्वयं शिव निर्णायक भऽ सकैत छथि–

हरो वा हरि (हर) सिंहो वा गीत विद्या विशारदौ। हरि (हर) सिंहे गते स्वर्गं गीतविद् केवलं हरः ॥ (एहि कथा उद्धरणक लेल हम इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अमर नाथ झा आ कलकत्ता विश्वविद्यालयक पंडित बबुआ मिश्रक आभारी छी) परोक्ष रूपसँ ई कथा हरसिंहदेवक गुणज्ञ होयबाक तथ्यकेँ आलोकित करैत एहि बातकेँ प्रकाशमे अनैत अछि

जे हुनक (हरसिंहदेवक) दरबारमे संगीत आ गायनकेँ पूर्ण संरक्षण प्राप्त छलैक आ प्रायः तेँ 'पञ्चसायक' ओ 'धूर्तसमागम'मे ज्योतिरीश्वर एहि विषयक अपन ज्ञानक प्रदर्शनमे कोनो कसरि नहि उठा रखलनि अछि। 'वर्णरत्नाकर' मे साज-बाजक संग बजनियाँ ओ गबैयाक प्रसंग विस्तारपूर्वक वर्णन भेटैत अछि।

संगहि, ज्योतिरीश्वरेटा मिथिलाक साहित्यिक संस्कृतिक इतिहासमे एक गोट महान व्यक्ति भेल छथि, से बात नहि छैक। मिथिलामे प्रचलित एक परम्पराक अनुसार, जे नगेन्द्रनाथ गुप्त अपन पुस्तक 'पोएम्स ऑफ विद्यापति' (बंगीय साहित्य परिषद, कलकत्ता, बंगाली वर्ष १३१६, पृ. सं. ६) क भूमिकामे कहलनि अछि जे ज्योतिरीश्वर विद्यापतिक (चौदहम शताब्दी) पितामहक पितिऔत भ्राता छलाह। तेँ चौदहम शताब्दीक प्रारंभिक कालमे ज्येतिरीश्वर भेल होयताह से स्वतः संभावित भऽ जाइत अछि। स्पष्टतया ज्योतिरीश्वर तेरहम आ चौदहम शताब्दीमे मिथिलाक एक संस्कृत विद्वानक महान परिवारमे जन्म लेने छलाह, जनिका लोकनिक नाम स्मृति आ बादक संस्कृत साहित्यक अन्य शास्त्रमे प्रसिद्ध छनि। मिथिलाक महानतम स्मृतिकार चण्डेश्वर ठाकुर एही परिवारक वंशज छलाह। ओ राजा हरसिंहदेवक मंत्री छलाह तथा हुनका लेल नेपालकेँ जितने छलाह। ओ संगहि सात भागमे विभक्त 'स्मृति-रत्नाकर' सन महान कृतिक लेखक किंवा संकलनकर्ता सेहो छलाह। हुनक वंशवृक्ष निम्न रूपक अछि :

त्रिपाठिन कर्मादित्य ठाकुर
↓
देवादित्य
(सान्धिविग्रहिक)
↓
वीरेश्वर → चण्डेश्वर
गणेश्वर → रामदत्त
जयदत्त → गणपति ठाकुर → विद्यापति

रामेश्वर
↓
धीरेश्वर
↓
ज्योतिरीश्वर ठाकुर

(द्रष्टव्य : मनमोहन चक्रवर्ती; जे. ए. एस. बी. १९१५, पृ. ३८५; नगेन्द्रनाथ गुप्त, 'पोएम्स ऑफ विद्यापति'क भूमिका, पृ. ६-७, जी. ए. ग्रियर्सन, "मॉडर्न वर्नाकुलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान, पृ. ९)

देवादित्यक बालक सभसँ ज्येतिरीश्वरक वास्तविक सम्बन्ध की छल से स्पष्ट नहि जानल अछि। अहि सम्बन्धमे एक गोट बात ई कहल जाइत अछि जे पञ्जी अथवा मैथिल

ब्राह्मणक वंशावलीक सूचीमे वा आनो ऊँच जातिक वंशसूचीमे ज्योतिरीश्वरक नाम नहि छनि । ई कहल गेल अछि जे पञ्जीक प्रचलन हरसिंहदेवक समयमे शक संवत १२३२(=१३११ ई.) मे भेल छल (द्रष्टव्य, 'मिथिला दर्पण'– १, पृ. सं. २०६) । एहिसँ मिथिलाक एक दू गोट मित्रकेँ ई कहबाक लेल उत्साहित कऽ देलकनि अछि, जनिकासँ हमरा विचार-विमर्श भेल, जे ज्योतिरीश्वर 'पञ्जी' व्यवस्थासँ पूर्व संभवतः नरसिंहदेवक समयमे भेल छलाह । मुदा एहि धारणाक विरुद्ध प्रमाण अछि स्वयं 'वर्णरत्नाकर' मे प्रयुक्त अनेक फारसी शब्द तथा पञ्जीमे एहि सम्बन्धमे कोनो स्पष्ट संकेतक अभाव । पञ्जीकेँ सर्वथा प्रामाणिक मानि लेब तथा ओहि समयक सभ देशक अव्यवस्थित वंशसूची जकाँ जकर प्रामाणिकतापर संदेह कयल जा सकैछ, उचित नहि होयत । दोसर दिस उपर्युक्त धारणाक विपरीत अनेक भरिगर साक्ष्य ई सिद्ध करैत अछि जे ज्योतिरीश्वर चौदहम शताब्दीक प्रथम चतुर्थांशमे भेल छलाह ।

ई बात महत्त्वपूर्ण अछि जे चंडेश्वरक महान् स्मृतिग्रंथकेँ रत्नाकर कहल गेल अछि; एकर खण्ड सबहिक नामक अन्तमे सेहो 'रत्नाकर' जोड़ल अछि– जेना 'कृत्य-रत्नाकर', 'दान-रत्नाकर', विवाद', 'व्यवहार', 'शुद्धि' 'गृहस्थ' तथा 'पूजा' रत्नाकर । अपन सातो खण्डक संग 'स्मृतिरत्नाकर'क संकलन संभवतः १३१५-३० ई. क बीच भेल होयत (जे. ए. एस. बी., १९१५, पृ. सं. ३८६) । ईहो संभव थिक जे 'वर्णरत्नाकर'क रचना 'स्मृतिरत्नाकर'सँ पूर्व भेल हो । किंवा ईहो संभव भऽ सकैछ जे मातृभाषामे लिखल अपन ग्रंथक नाममे 'रत्नाकर' जोड़ि ज्योतिरीश्वर अपन महान् पूर्वज चण्डेश्वरकेँ जे एके संग राजनेता, विद्वान्, न्यायविद् आ संभवतः सेनापति छलाह, सम्मान करऽ चाहैत छथि ।

जाहि समयमे ज्योतिरीश्वर भेल छलाह, से कालखण्ड मुसलमान आक्रमणक बादक मिथिलामे संस्कृत अध्ययनक लेल स्वर्ण-युग छल । मुसलमानक आक्रमणकेँ यदि छोड़ि दी तँ मिथिलामे साधारणतया लोकक जीवन शांत आ सुखद छलैक, जतय विद्वान लोकनि अपन साहित्यिक क्रिया-कलाप निर्विघ्न संचालितं कऽ सकैत छलाह । मिथिलाक स्मृति-अध्ययनक इतिहासमे चौदहम शताब्दीमे कर्णाट वंश ओ कामेश्वर राजवंश दूनू बहुत महत्त्वपूर्ण छल । यदि ई समय मुसलमान द्वारा मिथिलाकेँ जीति लेबाक रहैत आ एतयक राजवंशकेँ उखाड़ि देल गेल रहैत, तँ मिथिलामे संस्कृतक अध्ययन उन्नतिशील स्थितिक अपेक्षा हमरालोकनि नहि कऽ सकैत छलहुँ । चण्डेश्वर आ ज्योतिरीश्वर जाहि भाषामे मुसलमानी आक्रमणक चर्चा कयने छथि ओकर स्वरमे विजयोल्लास छैक, जे ई सिद्ध करैछ जे एहि हिन्दूराज्य-क्षेत्रक सामान्य जनजीवनपर मुसलमानी आक्रमणक प्रभाव स्थायी वा बड़ गंभीर नहि छलैक, कमसँ कम ओकर आंतरिक जीवनमे ।

मिथिलाक विद्वान लोकनि अपन देशी भाषाक अवहेलना नहि कयलनि । एक दिस जतऽ जन-साधारण 'लोरिक' सन ग्राम्यगीत सबहिक ओहि तरहक रचना कयलक जाहि रूपमे ओ आइयो हमरालोकनिकेँ प्राप्त अछि, तँ दोसर दिस विद्वान लोकनि संस्कृत

काव्यशास्त्रक नियमानुसार तथा संस्कृतरचनाक नमूनापर अपना मातृभाषामे रचना कयलनि । ज्योतिरीश्वरक दू पीढ़ीक बाद एतऽ विद्यापति भेलाह, जे आधुनिक समय धरि सम्पूर्ण पूर्वी भारतक सर्वोच्च गीतकार कवि भेलाह आ जनिक प्रतिद्वन्द्वी मात्र बंगालक चण्डीदास भऽ सकैत छथि । तुर्क द्वारा मिथिलाकेँ पराजित कयलाक तीन सय वर्षक बादहु धरि ओ बंगालक संस्कृत छात्र लोकनिक लेल केन्द्र बनल रहल । मिथिला संस्कृत शिक्षा, स्मृति ओ खासकय न्यायमे बंगालक गुरु एवं प्रेरणाक स्रोत छल । बंगाली विद्वान लोकनि जखन मिथिलामे अपन शिक्षा समाप्त कऽ अपन घर फिरैत छलाह तँ हुनकालोकनिक मस्तिष्क संस्कृत शिक्षे मात्रसँ नहि भरल रहैत छलनि, अपितु ठोरपर मैथिली गीत रहैत छलनि– ओ गीत विद्यापति द्वारा आ संभवतः हुनक पूर्ववर्ती तथा परवर्ती कवि लोकनि द्वारा रचल रहैत छल । एहि गीतसभकेँ ओलोकनि अपनौलनि, ओहिसँ हुनकालोकनिकेँ साहित्यिक रचनाक लेल एक नवीन नमूना प्राप्त भेलनि, एक नवीन साहित्यिक बोली प्राप्त भेलनि जाहिसँ बंगालमे ब्रजबुलीक जन्म भेलैक । एही प्रकारसँ पन्द्रहम शताब्दीमे आसाम तथा उड़ीसामे सेहो मैथिली गीत अपनाओल गेल । एहि महत्त्वपूर्ण मैथिली साहित्यक शीर्षपर ज्योतिरीश्वर ठक्कुर ठाढ़ छथि । मिथिलाक प्रारंभिक कालक विद्वान लोकनि अपन मातृभाषाक लेल जे प्रेम प्रदर्शित कयने छथि ताहिपर विचार करैत वर्तमानकालीन जन-समूह आ विद्वान लोकनिक द्वारा एहि विशिष्ट सुसंस्कृत भाषाक अवहेलना देखि बहुत खेद होइत अछि ।

३. कृति, एकर विषय-वस्तु तथा एकरा प्रति सार्वजनिक रुचि

पं. हरप्रसाद शास्त्रीक विवरणसँ एहि कृतिक विषय-वस्तुक मोटा-मोटी संकेत भेटैत अछि । ई रचना एक प्रकारक देशी आ संस्कृत पद सभक निघंटु वा शब्द-कोश थिक । एहिमे साधारणतया कवितामे प्रयुक्त होयबाक योग्य अनेक सांसारिक विषयवस्तुसँ सम्बन्धित साहित्यिक उपमा तथा व्यवहारक वस्तु सब भरल अछि । एहिमे कतहु शब्दक सूची मात्र तँ कतहु सौन्दर्यजन्य अनेक प्रकारक वर्णनमे प्रयोजनीय उपमा आ रीतिक सूची अछि । रचना गद्यमे अछि । एहिमे मूलतः सातसँ अधिक, प्रायः आठ टा परिच्छेद छल । जेँ एहि कृतिक नाम रत्नाकर अछि,– जकर अर्थ होइत छैक समुद्र,– तेँ एकर परिच्छेद सभक उपयुक्त नाम 'कल्लोल' राखल गेलैक । कल्लोलक अर्थ होइत अछि निर्झर वा तंरग । प्रत्येक कल्लोलमे नाम ओ रीतिसम्मत अनेक सूची अछि । एहन प्रत्येक सूची अथवा वर्णन– 'अथ वर्णना'क सूत्रसँ प्रारम्भ होइत अछि । प्रत्येक कल्लोलक अन्तमे लेखक ओ कृतिक नामक संग कल्लोलक नाम सेहो देल गेल अछि । एहि सभ परिच्छेदमे देल गेल कृति ओ लेखकक परिचयमे, सभ ठाम कृतिक नाम 'वर्ण-रत्नाकर' लिखल अछि जेना, इति कविशेखराचार्य श्री ज्योतिरीश्वर विरचित वर्णरत्नाकरे नगर वर्णनो नाम प्रथमः कल्लोलः ।।

परञ्च पं. हरप्रसाद सभ ठाम एहि कृतिक नाम 'वर्णनरत्नाकर' लिखैत छथि। प्रत्येक सूची वा वर्णनक शीर्षकमे 'वर्णन' शब्द अवश्य छैक आ प्रायः तेँ ओ एहि नामकेँ सुधारिकऽ लिखने होथि से संभव। ईहो भऽ सकैत अछि जे एकर अनुकृतिकार गलतीसँ 'वर्णन'क बदलामे 'वर्ण' लिखि देलनि। किन्तु उचित तँ इएह होयत जे प्रत्येक कल्लोलक अन्तमे कृतिक जे नाम लिखल छैक तकरे आधिकारिक मानल जाय। 'वर्ण'क अर्थ साधारणतया 'वर्णन' नहि होइत छैक। मुदा मध्य युगक संस्कृतमे एकर दोसरो अर्थ होइत छलैक जे एहि संदर्भमे उपयुक्त लगैछ। हेमचन्द्र, हलायुध ओ मल्लिनाथक (द्रष्टव्य : बोक्कलिंक तथा रॉथक सेन्टपिट्सवर्ग वला शब्दकोश) आधार पर 'वर्ण' शब्दक अर्थ 'गीतक्रम' अथवा 'कोनो गीत वा कवितामे शब्दक क्रमबद्धता अथवा योजना' सेहो अछि। एहिसँ लगैछ जेना ई कृति अपनामे पूर्ण एक गोट कलाकृति होयबासँ अधिक कोनो कलात्मक रचनाक लेल, परम्पराक साँचमे ठोकल, उपयुक्त काव्य-पदक एकटा संग्रह हो। एहि रचनाक प्रयोजन मैथिलीमे कोनो वर्णन प्रधान कृतिकेँ प्रस्तुत करब नहि बुझि पड़ैछ; प्रसंगक अनेक विषयक 'वर्णना' वा 'वर्णन' अभीष्ठ हो सेहो नहि बुझि पड़ैछ। एकर विपरीत प्रसंगक विभिन्न विषयक शब्द सभकेँ कोन ठाम कोना राखी से लक्ष्य बुझि पड़ैत अछि (द्रष्टव्यः 'वर्ण'क लेल गीतक्रमक अर्थ)। परम्परासँ चल अबैत अलंकारशास्त्रक नियम सभक पालन करब कोनो कविक कर्तव्य बुझल जाइत छल। एहि कृतिक वर्णन सभ अथवा वर्णनात्मक अंशसभ साधारणतया अति संक्षिप्त अछि; आ कतहु कतहु ओ तुलनामूलक लड़ी मात्र अछि। मुदा विषयसँ सम्बन्धित वस्तुक वर्णन सांगोपांग छैक! संगहि-संग कोनो प्रक्रियाक वर्णनमे विषयसँ सम्बन्धित शब्दक विन्यासमे एक गोट विस्तृतरूपमे क्रमबद्धता छैक। अधिकांश स्थलपर कवि वर्णनक स्थानपर सम्बन्धित शब्दक एहन सूची मात्र प्रस्तुत करैत छथि जे ओकर विस्तारपूर्वक वर्णन लेल आवश्यक छैक। आगाँ एकर उदाहरण भेटत।

एहि रचनाक उपादेयता कोनो विषय-वस्तुसँ सम्बद्ध काव्य-अलङ्कारक एक गोट पुस्तिका तथा शब्दकोश प्रतीत होइत अछि। पुरान संस्कृत परम्पराक स्वीकृत शैलीमे लिखल, विविध विषयपर पहिनहिसँ तैयार कयल संकेत-शब्दक ई कृति एक गोट कोश थिक जे अनेक स्थलपर विशिष्ट रूपेँ काव्यात्मक अछि। कोनो कथा-वाचक जकरा बंगलामे 'कथक' आ हिन्दुस्तानमे 'व्यास' कहल जाइत छैक, तकरा रामायण वा महाभारत अथवा पुराणक कथा सभ कहबाक लेल एवं ओहि कथासभकेँ चतुरतासँ उपयुक्त रूपेँ अलंकृत करबाक लेल जे शब्द-सामग्री चाही से सभ एहि कृतिमे स्वतः उपलब्ध होइछ। संस्कृत अथवा भाषाक जे कोनो व्यक्ति कवि-कर्मक आकांक्षी होथि से एहि ग्रंथसँ प्रचुर मात्रामे प्रेरणा ग्रहण कऽ सकैत छथि तथा हुनका लेल ई सदिखन संग पुरनिहार एकगोट नीक मित्र सिद्ध होयतनि। 'वर्णरत्नाकर'क शैली आ विषय-वस्तुक सर्वेक्षणसँ एतेक तँ नीक जकाँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे एकर लेखकक लक्ष्य कवितामे वर्णन करबायोग्य विषयवस्तु सबहिक क्रमबद्धता अथवा योजना सम्बन्धी एकटा पोथीक रचना करब छलनि। एकर

लेखक संस्कृत साहित्यक निष्णात विद्वान आ स्वयं ओहि भाषाक एकटा सफल लेखक सेहो छलाह। यदि ओ गंभीरतासँ मैथिलीमे रचना करऽ चाहैत छलाह तँ हमरालोकनि हुनकासँ वास्तवमे किछु कलात्मक कृतिक अपेक्षा करितहुँ। मुदा ई ग्रंथ अधिकांशतः नामक गणना करैत अछि– एकर रूप एक गोट विश्वकोश जकाँ छैक, मुदा विश्वकोशकेँ साहित्य नहि कहल जा सकैछ। रचनाकारक ज्ञान ओ अध्ययन अद्भुत छलनि। लेखककेँ एहि पुस्तकक लेल प्रयोजनीय सामग्रीक अधिकांश भाग संस्कृत साहित्यसँ प्राप्त भेलनि,–उदाहरणार्थ, अठारह पुराण, उनचास बसात, बारह आदित्य, अठारह गोट पतिव्रता स्त्री, छत्तीस गोट आयुध, अनेक प्रकारक नृत्य इत्यादिक नाम। मुदा किछु एहन विषय जकरा लेल संस्कृत साहित्यमे उपलब्ध सामग्री नहि अछि, तथा भाषामे सूची बनयबामे,–उदाहरणार्थ, द्यूत आ सतरंजक खेलमे चालि सभक नाम, मालिस अथवा माथ धोबाक वस्तु आ प्रक्रियाक नाम, अनेक प्रकारक गोहि, गाछ, फूल आ नावसँ सम्बन्धित सामग्रीक नाम एहि सभक लेल रचनाकारकेँ निस्संदेह पूर्ण परिश्रम एवं अनुसंधान करऽ पड़ल होयतनि।

भारतवर्षक आनो भाग एहि प्रकारक ग्रंथसँ अनभिज्ञ नहि अछि, जाहिमे व्यावसायिक कथावाचक लेल उपयोगी एवं सहायक शब्द सभक संग्रह हो। बंगाल प्रान्तमे एहि प्रकारक कथाक पुस्तिकासभ प्राप्त अछि। आ ओकर तुलना 'वर्णरत्नाकर'क संग शैली ओ वस्तुविन्यासक लेल करब रुचिगर होयत। स्व. चन्द्रसेन अपन ग्रंथ "हिस्ट्री ऑफ बंगाली लैंगुएज एण्ड लिटरेचर" (कलकत्ता विश्वविद्यालय, १९११, पृ. ५८५-५८८) मे बंगालक कथक द्वारा पौराणिक कथावाचनक सम्बन्धमे प्रयुक्त पद्धतिक एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कयलनि अछि। ओ कहैत छथि– "किछु एहन सूत्र छैक, जकरा सभ कथककेँ रटि लेबऽ पड़ैत छैक, जेना शिव, लक्ष्मी, विष्णु, कृष्ण आ अन्य देवी देवताक पूर्वापरक स्वरूपवर्णनक परिच्छेद सब, मुदा एकरा संग नगर, युद्धक्षेत्र, भोर, दुपहरिया ओ राति तथा एहन अनेक विषय जे कथा कहबाक क्रममे प्रसंगवश विहित छैक। ई पूर्वापरक स्तुति-परिच्छेदसभ संस्कृतनिष्ठ बंगलामे रहैत छैक आ एहिमे लयबद्धताक एकटा छटा अद्भुत रूपेँ प्रभावशाली रहैत छैक।" डॉ. सेन 'कथक' द्वारा देल गेल एक गोट एहने सूचक पोथीक उल्लेख करैत छथि, जाहिमे निम्नलिखित विषयपर परिच्छेद छलैक– १. नगर, २. मध्याह्न, ३. भोर, ४. राति, ५. मेघाउन दिन, ६. स्त्रीक सौंदर्य, ७. नारद मुनि, ८. विष्णु, ९. राम, १०. लक्ष्मण, ११. शिव, १२. काली, १३. सरस्वती, १४. लक्ष्मी, १५. जंगल, १६. युद्ध, १७. भगवती। एतऽ ई कहल जा सकैत अछि जे देवी-देवता केँ छोड़ि उपर्युक्त प्रायः सभ विषयक वर्णन 'वर्णरत्नाकर'मे भेल अछि। डॉ. सेन एहि परिच्छेद सभक नमूना प्रस्तुत कयने छथि। ओ सभ 'वर्णरत्नाकर'सँ अधिक विस्तृत, उत्कृष्ट ओ कलात्मक छैक। से स्वाभाविके, कारण बंगाली कृति बादक प्रायः उनैसम शताब्दीक थिक। यद्यपि एहि दूनूमे तात्विक समानता छैक, मुदा बंगलावला वर्णनक विधि अधिक परिष्कृत छैक। डॉ. सेनक विश्वास छनि जे पूर्व निर्धारित सूत्रक आधारपर कथा

कहबाक जे विधि 'कथक' लोकनि अपनौलनि से वैष्णव सभक देन थिक। परञ्च 'वर्णरत्नाकर' निस्संदेह चौदहम शताब्दीक कृति थिक आ पूर्वनिर्दिष्ट सूत्रवला पारम्परिक विधिक आधारपर रचना प्रक्रियाक चलन जे बंगलामे वैष्णव पंथक जागरणसँ प्रारम्भ भेल मानल जाइत अछि ताहिसँ पूर्वक थिक। 'कथक'क व्यवसायक लेल एहि प्रकारक उपयोगी पुस्तक एखनहुँ अभाव नहि छैक। 'कलकत्ता-शिक्षा' नामक बंगलामे पोथीसभ वास्तवमे उपलब्ध छैक। ई सब ओही प्रकारक पुस्तक थिक जकर उल्लेख डॉ. सेन अपन ग्रंथमे कयलनि अछि तथा जाहि प्रकारक पोथी 'वर्णरत्नाकर' अछि। फलस्वरूप एहि कृतिक नाम 'वर्ण-रत्नाकर' पूर्णतया उपयुक्त अछि, कारण एतऽ ओहि विषयक क्रम ओ विन्यास जकर उपयोग मौखिक अथवा लिखित (साधारणतया मौखिक) प्रसारक लेल होइत छैक।

कोनो वर्णनक लेल पहिनहिसँ तैयार कयल गेल सूत्रमूलक परिच्छेद सभक उपयोग करबाक प्रथा भारतवर्षमे बेस पुरान बुझि पड़ैछ। जैन नियमक साक्ष्यपर तँ कहि सकैत छी जे ई प्रथा ईसापूर्व प्रथम शताब्दीक मध्यहिसँ चल आबि रहल अछि। (एहि तथ्य दिस ध्यान आकर्षित करबाक लेल हम डॉ. पी. एल. वैद्य आ एहि सम्बन्धमे किछु आवश्यक सूचना देबाक लेल सुखलालजी तथा मुनि श्री जिनविजय जीक आभारी छी।) जैनधर्मक अर्धमागधी सूत्रमे एहि प्रकारक वर्णनमूलक परिच्छेदसभ जकरा 'वण्ण' (वर्णक) कहल जाइत छैक रहरहाँ उपलब्ध अछि। साधारणतया एहि 'वण्ण' सभकेँ पूर्णरूपेण उद्धृत नहि कयल जाइत छैक। पाठमे जतऽ-जतऽ 'जाव' अथवा 'जाव वण्ण' लिखल रहैत छैक ओतऽ पढ़निहारकेँ ई बुझबाक थिक जे अमुक वर्णन वा परिच्छेद पढ़बाक थिक। पाठक सभसँ ओहि सभ परिच्छेदकेँ कण्ठस्थ रखबाक अपेक्षा कयल जाइत छैक। कतोक मूल-पाठमे एहि प्रकारक 'वण्ण' सभ पूराक पूरा उद्धृत भेटैत छैक, जेना 'भगवती' आ 'उपवायिवसुत्त' उदाहरणार्थ राखल जा सकैत अछि। संस्कृत टीका सभमे जहिठाम 'वण्ण'क उपस्थापन आवश्यक रहैत छैक, ओतऽ निम्नलिखित पद सभक द्वारा व्याख्या प्रस्तुत कयल जाइत छैक, जेना—सम्प्रति अस्या नगर्या वर्णकम आह; 'यावच' चब्दकर्णात...... औपपातिकग्रन्थ प्रसिद्ध-वर्णक-परिग्रहः (संदर्भ :– 'रायपसेनईय-सुत्त')। मुनि श्री जिनविजयजी कहैत छथि जे एहि प्रकारक वर्णन सभ पालि ग्रंथ सभमे सेहो भेटैत छैक आ एकर अतिरिक्त संस्कृत आ प्राचीन गुजराती रचना सभमे सेहो एकर बाहुल्य छैक। पुरान पण्डित, पुराण ओ निबंधबाचक लोकनिक बीच ई प्रथा छल जे ओ एहन वर्णनात्मक परिच्छेद सभकेँ कण्ठस्थ कय उचित अवसरपर ओकर उपयोग करय। गुजरातमे एहि प्रकारक वर्णनात्मक परिच्छेदक स्रोतक लेल संस्कृत गद्यग्रंथ जेना वाणभट्टक 'कादंबरी' एवं 'हर्षचरितम्' तथा धनपालक 'तिलक-मञ्जरी' बहुत लोकप्रिय छल।

× × × ×

एहि कृतिमे वर्णित विभिन्न विषय अथवा एकर सूचीमे उद्धृत विषय-सम्बन्धी

विवरण आ तकरा संग देल गेल उद्धरण सभसँ ई स्पष्ट होयत जे मध्यकालीन भारतमे लोकक जीवन ओ संस्कृतिपर प्रकाश देबऽवला एक गोट सार-संक्षेप रूपमे 'वर्णरत्नाकर' सन ग्रंथक महत्त्व अमूल्य छैक। ११२७ सँ ११३८ ई. धरि राजकरऽवला महाराष्ट्रक चालुक्य राजा सोमेश्वर तृतीय भूलोकमल्लक समय संस्कृतमे रचित 'मानसोल्लास' नामक ग्रंथ, जे विभिन्न विषयपर संगृहीत एक गोट विश्वकोश थिक (अंशतः गायकवाड़ ओरियेन्टल सिरीज, बड़ौदासँ प्रकाशित) से कम महत्त्वक नहि अछि। राजदरबार आ ओकर परिवेशक जे दृश्य ई ग्रंथ उपस्थित करैत अछि से 'आइने अकबरी'क स्मरण करबैत अछि, जे अपन सूफी एवं वर्णनक संग सर्वथा एक भिन्न उद्देश्यसँ लिखल गेल छल– ओ वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक महत्त्वकेँ दृष्टिमे राखिकऽ लिखल गेल एक 'गजेटियर' छल, जे एक साहित्यिक कोशक रूपमे 'वर्णरत्नाकर' नहि अछि। 'वर्णरत्नाकर'क वातावरण विशुद्ध हिन्दू अछि आ पूर्व मुसलमानकालीन, यद्यपि एकर रचना उत्तर भारतमे मुसलमान, तुर्की शक्तिक स्थापनाक एक शताब्दीसँ किछु अधिक समयक बादेमे भेलैक। मुसलमानी परिवेशसँ पहिलुका समयक वायु जकर सुगंध एहि कृतिमे लगैत अछि से एकरा प्रामाणिक होयबाक पूर्ण साक्ष्य उपस्थित करैत छैक, यद्यपि एकर हस्तलेख ओहिसँ दूसय वर्षक बाद लिख़ल गेल छैक। एहिमे किछु फ़ारसी तथा फारसी-अरबी शब्द भेटैत अछि, आ ई एहि बातकेँ सिद्ध करैत अछि जे एकर रचनाकालमे ओहि भूमिमे फारसी बजनिहार तुर्क लोकनि रहैत छलाह।

एहि ग्रंथक सर्वव्यापक उद्देश्य ध्यान देबाक योग्य अछि आ एहि लेल ओ विद्वान आ कवि हमरा लोकनिक लेल धन्यवादक पात्र छथि जे हुनका मनमे भाषाक कवि तथा कथाकारक मार्ग-दर्शनक लेल एहन एक गोट ग्रंथ लिखबाक सुन्दर विचार उत्पन्न भेलनि। ज्योतिरीश्वर ठक्कुर अवश्ये एहन व्यक्ति छल होयताह जनिका जीवनमे स्वस्थ सर्वांगीण रुचि रहल होयतनि। ओ मात्र साधारण वैदिक पुरोहित नहि छलाह, जे समय-समयपर कुस्वादु वला सोमरस पिबैत होयताह; आ ने ओ विद्वत्ता प्रदर्शन कयनिहार साहित्यकारे छलाह। हुनक 'पञ्चसायक' एकर साक्षी अछि जे ओ कामशास्त्रक एक गंभीर अध्येता छलाह। हुनक जीवनक प्रति एक व्यापक दृष्टिकोण ओहिना छलनि, जेना 'कथक' लोकनिक जे कोनो नीति-उपदेशक कथाकेँ प्रभावशाली बनयबाक लेल जीवनक निजी अनुभवसँ दृष्टांत उपस्थित कऽ कथाकेँ विश्वसनीय बनबैत छथि। तहिना इहो कवि अपन निष्पक्ष दृष्टिसँ जीवनक कोनो पक्षकेँ निम्न कोटिक नहि मानैत छथि। ओ हमरा लोकनिकेँ नगरक बीच लऽ जाइत छथि, आ मध्यकालीन नगरक तत्कालीन कुरूपताक झाँकी देखबैत छथि, जेना सभ युगमे नगरमे रहलैक अछि। ओ नगरक दुर्जन आ भिखमंगाक उल्लेख करैत छथि तथा निम्नस्तरक निर्लज्ज लोक सभ आपसमे कोना कटाउझ एवं धक्कमधुक्की करैत अछि, आ कादो-कीचसँ भरल स्थानमे कोना निर्द्वन्द्व घुमैत अछि मुदा कवि हमरा

लोकनिकेँ सामंत कुलक एहनो नर-नारीक दर्शन करबैत छथि जे रूप ओ गुणमे विशिष्ट अछि। ओ हमरा सभकेँ राजसभामे सेहो लऽ जाइत छथि आ ओहिठाम एकत्रित व्यक्तिसँ परिचय करबैत छथि। ओतबे नहि, ओ सामंत कुलक लोकक संग राजकुमार लोकनिक वैयक्तिक क्रियाकलापक झाँकी—जेना ओ स्नान कोना करैत छथि, भोजन कोना करैत छथि—देखबैत छथि। एतेक धरि जे हुनकालोकनिक शयनकक्षमे सेहो हुलकी दऽ हुनका लोकनिक जीवनक अंतरंग प्रसंगसँ परिचय करबैत छथि। ओ स्वभावसँ कवि छलाह तथा हुनक दृष्टि बड़ तीक्ष्ण छलनि। एकर अतिरिक्त मैथिली भाषाक माधुर्य ओ एकर सहज शालीनता एहि कृतिकेँ आओरो मोहक बना देने छैक। भोर, दुपहरिया, साँझ, अन्हार राति, विभिन्न ऋतु आ जंगलक छोट-छोट शब्द-चित्रसभमे हुनक विशिष्ट काव्य-प्रतिभाक छाप स्पष्ट भेटैत अछि। एहिमे काव्य-प्रक्रियाक विधि-निर्देश परम्परावादी रहितहुँ सम्पूर्ण कृति एक गोट उदार बौद्धिक संवेदनशीलताक प्रकाशसँ सम्पूर्ण उद्भाषित अछि। हिनक उपमा सभ बड़ स्वाभाविक छनि, प्रायः ई सभ उक्ति ओहि मध्ययुगीन साहित्यक छोट-छोट टुकड़ा रहल हो। विभिन्न परिस्थितिमे रहऽवला नाना प्रकारक लोकक जीवनक वस्तु व्यापारक जेहन सुगमतासँ ई वर्णन कयलनि अछि से अद्भुत अछि। ओ हमरालोकनिकेँ एक गोट बनल-ठनल जूआक चौपाड़िपर लऽ जाइत छथि आ ओतऽ चलैत अनेक प्रकारक जूआक खेलसँ परिचय करबैत ओतऽसँ आबऽवला लोक सभक तौर-तरीकाक अपन ज्ञानसँ चकित कऽ दैत छथि। बजारक वर्णन, जेना जौहरी, ओषधि बेचनिहार, विभिन्न प्रकारक वस्तु जेना हीरा—जमाहिरात, मसाला आ इत्र-फुलेल सभक जानकारी राखऽमे ई माहिर छथि। नगरक सड़कपर ठाढ़ भऽ अभियानपर चलल सैनिककेँ अथवा शाही दलकेँ तराइक जंगलमे शिकारक ओकर खास निशानसँ चिन्हि जाइत छथि तथा ओ सभ कोन कोन अस्त्र-शास्त्रक प्रयोग करैत अछि से कविकेँ बूझल छनि। हिनका ईहो ज्ञात छनि जे कोन सिपाही कोन घोड़ापर चढ़ल छैक आ ईहो जे कड़ीमे बान्हल लऽ गेल जाइत कोन कुकूर कोन जातिक थिक। राजदरबारक भाट अथवा चारण जे एक तरहसँ अपना राजाक प्रतिनिधि होइत छल ओ अपना समयमे विशिष्ट नागरिक मानल जाइत छल तथा विभिन्न विद्या एवं कलामे प्रशिक्षित रहैत छल। एहि व्यक्तिकेँ हमरालोकनिक विद्वान-लेखक नीक जकाँ जनैत छलथिन आ हुनका सम्मान दैत छलथिन। ओ व्यवसायी संगीतज्ञ विद्यावंतकेँ सेहो बहुत नीक जकाँ जनैत छलाह; कारण हुनक अपनहि साक्ष्यक आधारपर ई स्पष्ट अछि जे ज्योतिरीश्वर स्वयं एक निपुण संगीतज्ञ तथा गायक छलाह (दृष्टव्य हुनक पञ्चसायक तथा धूर्तसमागम)। ओ अपना मालिककेँ मालिस कयनिहार चारि गोट नोकर गोण्डू, सोण्डू किर्तू आ कान्हूकेँ नामसँ जनैत छथिन। हुनका हास्यमे सेहो रुचि छलनि; आ निश्चित रूपसँ ओ 'वेदाध्ययन जड़मति' नहि छलाह,— एहन व्यक्ति जे वेद पढ़ैत मंद बुद्धिक भऽ गेल हो। धूर्त्तसमागममे बुढ़िया 'कुट्टनी' तथा अन्य गोटेक चरित्र-चित्रणक

अतिरिक्त असज्जातिमिश्रक अन्तिम निर्णयसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे मनुष्यक मूर्खता एवं दुर्गुणक विभिन्न रूपपर ओ भरि पेट हँसि सकैत छलाह। कोनो कुस्तीक प्रतियोगिता हो अथवा नाच–दूनू प्रकारक अनुष्ठानमे हुनक रुचि समाने छलनि आ एहि दूनू तरहक मनुष्यक अंग-प्रदर्शन कसरतक विस्तृत जानकारी प्राप्त करबामे हुनका आनन्द अबैत छलनि। राजदरबारमे एक ब्राह्मण सभासदक रूपमे ओ पाकशास्त्रोमे दक्ष होयबाक प्रचुर प्रमाण उपस्थित करैत छथि। वस्तुतः ओ चौदहम शताब्दीक पूर्वार्द्धक हिन्दू राजदरबारक रहन-सहनक एक गोट सार-संग्रह प्रस्तुत करैत छथि। पाण्डुलिपिमे गड़बड़ी रहबाक कारणे दुर्भाग्यसँ हमरालोकनिकेँ ई बुझबायोग्य नहि होइत अछि जे हुनक एहि सर्वेक्षणक अन्तर्गत ग्राम्य जीवनक सम्बन्धमे लिखल अछि वा नहि। धूर्तसमागममे एक गोट सुखी सम्पन्न खेतिहरक घर-आङनक जाहि रूपक संक्षिप्त वर्णन ओ प्रस्तुत कयने छथि ओहिसँ हमरालोकनिकेँ ई विश्वास करबाक उत्सुकता होइत अछि जे ओ ग्राम्यजीवनक चर्चाक उपेक्षा नहि कयने होयताह।

"भअवं ! पेक्ख, पेक्ख विहिद-भअवन्तगण-मुण्डसरिच्छ-बहुअर-महिसी खम्भ-सोहन्त चउस्सालं इदो तदो संचरन्त-बालगोवच्छ सोहिदं पीणुतुङ्ग त्थणालस परिक्खलन्त मन्दसंचारमणिज्जावास परिसर संचरन्त चेलिया समूहं कस्स बि महाधणस्स वासभअणं विलोई अदि।" (धूर्तसमागम; प्रथम अङ्क)

(मैथिली रूपान्तर :– अओ भगवन्! देखू, देखू, भग्यवान लोकक मूड़ीक समान बनाओल बहुतो महीसक खुट्टासँ शोभित चतुःशाल, एमहर ओमहर चरैत छोट बच्चासभसँ शोभित, पुष्ट ओ ऊँच स्तनक कारणे अलसायल पछड़ैत मन्द चलबासँ सुन्दरि आवासक प्रागणमे चलैत दासीसमूहसँ युक्त ई कोनो महान धनिकक वासस्थान देखि पड़ैछ।–डॉ. शशिनाथ झा; मिथिला-परम्परागत–नाटक संग्रह; पृ. सं. ३६)।

एहि कृतिक सूची आ छोट-छोट वर्णन सभ चौदहम शताब्दीक बिहारमे 'राजदरबारक जीवन' विषयपर एकटा यथार्थ चित्र उपस्थित करैत अछि आ जेँ एहि राजदरबारक सम्बन्ध आंतरिक रूपसँ जन-सामान्योक जीवनसँ छलैक, तेँ ओहि समयक बिहारक कृषकक पूर्ण छवि जँ नहियों तँ साधारण जनसमुदायक जीवनक छवि ई रचना अवश्ये प्रस्तुत करैत अछि। अपन संरक्षक राजाक राजधानीक छोट नगर सिमरामपुरक (आधुनिक सिमराओँ) लग-पासक गाम-घरक समाज हुनक ध्यान ओतेक आकृष्ट नहि कयलकनि, जतेक सभ्य-सुसंस्कृत लोक जेना पण्डित, गबैया आ अन्य। जाहि धर्मक ओ वर्णन करैत छथि अथवा संकेत दैत छथि, से मध्यकालीन सुसंस्कृत हिन्दूलोकनिक थिक। कतहु-कतहु ओ बुद्ध अथवा बौद्धधर्मावलम्बी लोकनिक चर्चा करैत छथि, कारण ओहि समयमे पड़ोसी राज्य नेपालक नेवारी शासक लोकनि बौद्ध छलाह तथा चौदहम शताब्दी धरि पूर्वी भारतक क्षेत्रसँ बौद्धधर्म ने समाप्त भऽ गेल छल आ ने ओ तत्कालीन हिन्दू धर्ममे परिवर्तित भऽ गेल छल। 'नाथ' ओ 'योगी' सम्प्रदाय ओहि समय धरि एक गोट प्रबल सम्प्रदाय छल जे शैव-योग प्रक्रिया तथा बुद्ध धर्मक तांत्रिक पद्धतिक किछु प्रक्रियाक एक

गोट मिश्रित रूप छल। एक निविष्ट ब्राह्मण रहितहुँ ज्योतिरीश्वर एहि कृतिमे उपर्युक्त सम्प्रदायक चौरासी गोट सिद्धक चर्चा करब उचित बुझलनि, कारण जे ई सम्प्रदाय एहिसँ पूर्वक शताब्दीमे लोकप्रियताक बलपर स्थापित भऽ चुकल छल आ शिव एवं योग प्रक्रियामे अपन आस्था स्पष्ट कऽ धर्मक पुरान पन्थियो लोकनिक मध्य मान्यता प्राप्त कऽ चुकल छल। चौदहम शताब्दीमे पूर्वोत्तर भारतक जन-जीवनक जाहि प्रकारक बहु-पक्षीय चित्र 'वर्णरत्नाकर' प्रस्तुत करैछ से ओहि समयक अथवा ओहूसँ पूर्वक उपलब्ध शिलालेख आ साहित्यिक दस्तावेज सभपर एक मूल्यवान टिप्पणी थिक।

उदाहरण स्वरूप 'आस्थान-वर्णना' वा राजदरबारक वर्णनक अंतर्गत अधिकारी ओ सभासदक जे सूची 'वर्णरत्नाकर' मे उपलब्ध अछि से एहिसँ पूर्वक बंगालक उत्तर-पूर्वी क्षेत्रमे प्राप्त ताम्रपत्रपर देल गेलं दान-पत्र सबहिपर अंकित सूची सभसँ अधिक पैघ आ एक दोसराक पूरक अछि। ज्योतिरीश्वर द्वारा वर्णित द्यूत-गृह ओहने अछि, जेहन 'मृच्छकटिक'क लेखककेँ ज्ञात छलनि। ज्योतिरीश्वर ओहि द्यूत-गृहकेँ 'टेष्ट-सार' अर्थात् 'टेण्ट-शाला' कहैत छथि, आ ओहिसँ लगमे एक देवीमंदिर छल। ओ 'टेष्टा-कराल' (पृ. ३९ अ) शब्दसँ सेहो परिचित छथि। मुदा ओहि शब्दक व्यवहार कोन अर्थमे करैत छलाह से नहि जानि। प्रायः एहि शब्दक अर्थ छल जूआक चौपाड़िपर अयनिहार जुआड़ी। हुनकासँ चारि शताब्दीसँ अधिक पूर्वक राजशेखर एहि शब्दकेँ स्त्री सम्बन्धी अर्थमे गारिक भावमे अपन ग्रंथ 'कर्पूर-मञ्जरी' मे व्यवहार कयलनि अछि। विलासी जीवनक लेल विभिन्न वस्तुक नाम आ अन्य वर्णन जे 'वर्णरत्नाकर' मे उल्लिखित अछि तकर व्याख्या ओहिसँ पूर्वक संस्कृत ग्रंथमे प्राप्त समान शब्दसँ कयल गेल अछि। ई कार्य दूनू दिससँ भेल छैक। ई सभ मिलि एहि कृतिकेँ उत्तर भारतक प्रारंभिक आ बीचक मध्यकालीन समयक सांस्कृतिक अध्ययनक लेल उच्च कोटिक दस्तावेज बना दैत छैक। ई ग्रंथ देशी भाषामे लिखल अछि तथा एतऽ कतोक संस्कृत शब्दकेँ तद्भव वा प्राकृत रूपमे स्थान देल गेल छैक– से एकर महत्त्वकेँ आओरो अधिक बढ़ा देने छैक। ई संस्कृतिक सभ अथवा अधिकतर अंगक लेल, निश्चित साक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि, जे जनसाधारणक दिन प्रतिदिनक जीवनक अंग थिक, भनहि ओकरा संस्कृत भाषाक ज्ञान नहि रहौक। मिथिलाक लेल तँ एहि कृतिक विशेष महत्त्व छैके, भाषा-शास्त्रक दृष्टिकोणसँ सेहो एकर महत्त्व छैक, 'वर्णरत्नाकर' साधारणतया हिन्दू-संस्कृतिक अध्येता लोकनिक हेतु एहि तरहेँ मूल्यवान अछि। दुर्भाग्यसँ पूर्वी भारतमे प्रारंभिक आधुनिक हिन्दू आर्य समयक सम्बन्धमे कोनो महत्त्वपूर्ण साहित्य उपलब्ध नहि अछि, जाहिसँ जनसाधारण लोकक जीवनक विषयमे संकेत भेटि सकैछ। एहि दृष्टिसँ गुजरात आ राजपुतानाक क्षेत्रसभ अधिक भाग्यशाली अछि किएक तँ ओतऽ प्राकृत, अपभ्रंश आ प्रारम्भिक गुजराती (अथवा पुरान पश्चिमी राजस्थानी) मे साहित्य उपलब्ध छैक। एहि कारणे एहि प्राचीन मैथिली कृतिक स्थान अद्वितीय छैक, जे अत्यधिक निश्चित एवं उपयोगी सूचनासँ भरल अछि।

(ख) संक्षिप्त सहायक ग्रंथसूची

१.	वर्णरत्नाकर	: सम्पादक (भूमिकाक संग) : डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी एवं पण्डित बबुआजी मिश्र : रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल; कलकत्ता, १९४० ई.
२.	वर्णरत्नाकर	: सम्पादक प्रो. आनन्दमिश्र तथा पंडित गोविन्द झा; (भूमिका एवं व्याख्या); मैथिली अकादमी; पटना १९८० ई.
३.	धूर्तसमागम	: सम्पादक डॉ जयकांत मिश्र; इलाहाबाद, १९६०
४.	पञ्चसायक	: सम्पादक; यादवजी भिकमजी आचार्य,
५.	राजनीतिरत्नाकर	: सम्पादक (भूमिकाक संग); के. पी. जयसवाल; बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना १९३४, द्वितीय संस्करण
६.	विभागसार	: सम्पादक (मैथिली अनुवाद सहित) पं. गोविन्द झा; मैथिली अकादमी, पटना
७.	मिथिला-परम्परागत-नाटक-संग्रह	: सम्पादक ओ व्याख्याकार डॉ. शशिनाथ झा विद्यावाचस्पति, कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा; १९८६ ई.
८.	डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा	: ज्योतिरीश्वर; मैथिली अकादमी; पटना; १९८३ ई.
९.	डॉ. प्रताप नारायण झा	: मैथिली नाटक का उद्भव और विकास; महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय; बड़ौदा; १९७३ ई.
१०.	प्रो. राधाकृष्ण चौधरी	: मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति; चौखंभा ओरियेन्टेलिया; वाराणसी, १९७६ ई.
११.	प्रो. राधाकृष्ण चौधरी	: हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत; चौखंभा संस्कृत सिरीज; वाराणसी, १९७० ई.

१२. प्रो. राधाकृष्ण चौधरी : हिस्ट्री ऑफ बिहार; मोतीलाल बनारसीदास; १९५८ ई.

१३. डॉ. जयकांत मिश्र : ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर; खंड-१; तीरभुक्ति पब्लिकेशन, इलाहाबाद; १९४९ ई.

१४. विजय कांत मिश्र : कल्चरल हेरिटेज ऑफ मिथिला; मिथिला प्रकाशन, इलाहाबाद, १९७९ ई.

१५. डॉ. उपेन्द्र ठाकुर : हिस्ट्री ऑफ मिथिला; मिथिला इंस्टीच्यूट, दरभंगा १९५६ ई.

१६. राजेश्वर झा : मैथिली साहित्यक आदिकाल; बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना; १९६८ ई.

१७. काञ्चीनाथ झा 'किरण' : वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन; शोध प्रबन्ध; बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर; १९६९ (अप्रकाशित)

१८. डॉ. सुरेश्वर झा : पोलिटिकल थिंकर्स इन मिथिला; शोध प्रबन्ध; ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा; १९८१ (अप्रकाशित)

१९. डॉ. सुरेश्वर झा : राजनीतिक सिद्धांत ओ आन्दोलनमे मिथिलाक अवदान : (मैथिली अकादमी पटनाकेँ प्रकाशनार्थ प्रेषित)

२०. जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, कलकत्ता १९१५ ई.

२१. जर्नल ऑफ द बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना।

117158
10.12.04
SIMLA

चौदहम शताब्दीक प्रथम चतुर्थांशमे जन्म लेनिहार आ' तत्कालीन मिथिलाक कर्णाटवंशक अन्तिम राजा हरिसिंहक आश्रयमे रहनिहार संस्कृतक प्रकाण्ड पंडित ओ मैथिली साहित्यक प्रथम गद्यकार, कवि ओ नाटककार ज्योतिरीश्वर सम्पूर्ण उत्तर भारतक साहित्याकाशमे एक जाज्वल्यमान नक्षत्र थिकाह ।

कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर संस्कृत साहित्यमे प्रयोगधर्मी नाटक *धूर्तसमागम प्रहसन* ओ अन्य शास्त्रीय ग्रंथक लेल जानल जाइत छथि, किन्तु ओ सर्वाधिक स्मरणीय छथि गद्यग्रन्थ *वर्णरत्नाकर*क लेल जे ने केवल मैथिली भाषाक प्राचीनतम एवं प्रथम उपलब्ध गद्यकाव्य थिक, अपितु आधुनिक आर्यभाषाक सेहो प्रथम गद्यग्रन्थ मानल जाइछ । कवि-शिक्षा-विषयक ई ग्रन्थ काव्योपयोगी होयबाक संगहि स्वयं काव्यग्रन्थ सेहो थिक । साहित्यसँ इतर तत्कालीन भारतक ग्राम्य ओ नागरिक जीवनक विभिन्न पक्षक परिज्ञानक लेल जे जीवन्त सामग्री *वर्णरत्नाकर*मे भेटैत अछि, से अन्यत्र दुर्लभ अछि ।

एहि विनिबन्धक लेखक डॉ. सुरेश्वर झा राजीनीतिशास्त्र विषयक विद्वान एवं मैथिलीक लेखक छथि । ई मैथिली, हिन्दी ओ अंगरेजी तीनू भाषामे समान अधिकारसँ लिखैत छथि । हिनक मैथिलीमे कतिपय पुस्तक प्रकाशित छनि तथा सामयिक पत्रपत्रिकामे विचार-प्रधान निबन्ध एवं कथा प्रकाशित होइत रहलनि अछि । मिथिलाक प्राचीन ओ मध्यकालीन इतिहास, संस्कृति ओ अन्य विषय पर शोधपूर्ण निबन्ध लिखबामे हि[illegible]चि रहलनि अछि । सम्प्रति ई साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक [illegible]थिली परामर्श समितिक संयोजक छथि ।

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 J 994 J
00117158

आवरण : ज्योतिरीश्वरक *वर्णरत्नाकर*क मूल पाण्डुलिपिक किछु पृष्ठक प्रतिच्छवि

ISBN 81-7201-988-2

पन्द्रह टाका